अजायब बानी

बिछोड़े का दर्द

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अजायब बानी

बिछोड़े का दर्द

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा शेख फरीद साहब की बानी के सतसंग

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** उप संपादक : **नन्दनी** विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**

सहयोग : **डॉ. सुखराम सिंह नौरिया, ज्योति सरदाना व सीमा आहूजा**

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंहनगर–335 039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान)

मोबाइल–96 67 23 33 04, 99 50 55 66 71

सितम्बर - 2023

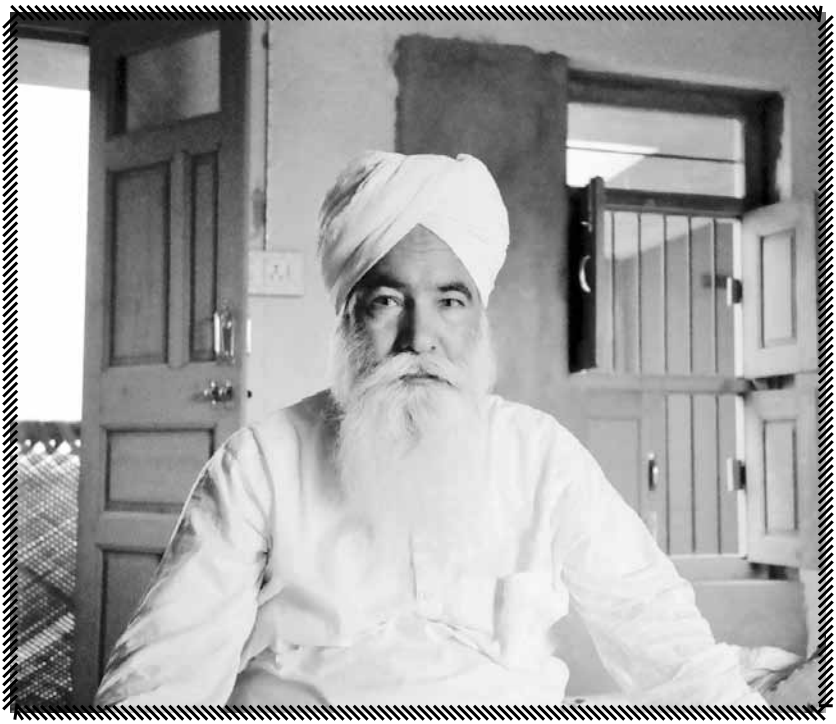

1. परमात्मा आपके अन्दर है..... 11
2. शहर का रास्ता..... 29
3. बिछोड़े का दर्द..... 47
4. परमार्थ..... 67
5. परमात्मा की भक्ति..... 85
6. यह दुनिया रंगीला बाग है..... 101
7. सच्चा प्यार..... 137
8. प्रभु का हुक्म..... 147
9. घटनाएं तो घटेंगी..... 175

प्रस्तावना

इस पुस्तक के लेखक परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज (1926-1997) 16 पी.एस. रायसिंहनगर, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) से थे। आप परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज (1894-1974) के पूर्ण शिष्य थे, परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज दिल्ली से थे और सन्त अजायब सिंह जी उनकी रूहानी विरासत के उत्तराधिकारी थे। आप परम सन्त कृपाल सिंह जी की शिक्षा को प्यार से ग्रहण करके उस शिक्षा को बढ़ाने वालो में से थे।

सन्तमत की शिक्षा हमारे धर्मग्रन्थों में मूल रूप से पाई जाती है। परमात्मा प्रेम है और प्रेम संसार का मूल तत्व है। 'शब्द–नाम' ने संसार की रचना की है। नाम, आत्मा को परमात्मा तक ले जाता है। इस मार्ग के गुरु हमें सिखाते हैं कि परमात्मा का 'शब्द–नाम' हम सबके अंदर मौजूद है। परमात्मा की दया से हर इंसान उसे देख सकता है, सुन सकता है और महसूस कर सकता है। हम गुरु की मदद से 'शब्द–नाम' को सुन सकते हैं और जन्म–मरण के चक्कर से मुक्ति पा सकते हैं।

सन्तमत की शिक्षा सारे संसार के लिए है, यह सभी धर्मों और रीति–रिवाजों में पाई जाती है। सबसे पहले कबीर साहब (1398-1518) ने इसकी शिक्षा दी। कबीर साहब उत्तरी भारत के एक मुस्लिम सन्त हुए हैं जिन्होंने समझाया कि इस्लाम और हिन्दू धर्म या किसी और धर्म में कोई फर्क नहीं।

कबीर साहब ने सभी खोज करने वालों को उनके धर्म, जाति या पैदाईश की परवाह किए बिना दया की। इसके अलावा कबीर

साहब ने और कई लोगों को प्रभावित किया, गुरु साहिबानों की कई लाईनें बनाई जिसमें सिखों के दस गुरु भी आते हैं।

कलयुग में महान गुरु साहिबानों के उत्तराधिकारी हुए जिनमें आगरा से स्वामी जी महाराज (1818-1878), बाबा जयमल सिंह जी (1838-1903) ब्यास से बाबा सावन सिंह जी (1858-1948) और महाराज कृपाल सिंह जी व सन्त अजायब सिंह जी हैं। इन सबने उसी मार्ग की शिक्षा दी, वही प्यार और दया बरसाई। इस पुस्तक के लेखक परम सन्त अजायब सिंह जी को बाबा सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी के चरणों में बैठने का मौका मिला। सन्त अजायब सिंह जी को परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज से नामदान मिला। आपने इस किताब में दोनों महान गुरुओं का जिक्र कई बार किया है।

सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने अपने जीवन काल में कबीर साहब के अनुराग सागर, ***प्यार का सागर*** का अनुवाद अपनी निगरानी में करवाया। अन्य किताबें गुरु अर्जुनदेव जी की सुखमनी साहब ***खुशियों का खजाना*** और गुरु नानकदेव जी की आसा जी की वार ***परमात्मा के रंग*** प्रकाशित की गई।

आप जब पिछली बार 27 जुलाई 1996 को सन्तबानी आश्रम, सैनबोर्नटन, न्यू हैम्पशायर गए, वहाँ आश्रम के निर्देशक बोर्ड से मिले और उससे कहा, ''मैं डैरिल रूबिन द्वारा संग्रहित पुस्तक ***अमृतवेला*** को देखकर बहुत खुश हूँ, यह पुस्तक बहुत अच्छी है। मुझे विश्वास है कि संगत इससे फायदा उठाएगी। मैं जानता हूँ कि किसी पुस्तक को संग्रहित करना बहुत मेहनत का काम है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हम दूसरों का भला तभी कर सकते हैं जब हम अपने हिस्से का त्याग करें।

महान गुरु साहिबानों का पुस्तक लिखने के पीछे कुछ कारण हैं। उनका मकसद हम सब परमात्मा के बच्चों को वापिस हमारे असली घर पहुँचाना है। हम जितना ज्यादा भ्रम और गुरु साहिबानों की असलियत की वास्तविकता के फर्क को समझेंगे हमारे लिए उतना ही सतगुरु की शिक्षा को मानना आसान होगा, हम उतना ही इंसान की एकता के महत्व को जानेंगे, यह सच है कि परमात्मा हर एक के हृदय में वास करते हैं।

हमें जैसे–जैसे समझ आती है, हमारे लिए वह करना उतना ही आसान हो जाता है। यह सच है कि ज्ञान और समझ तभी आते हैं जब हम अंदर जाते हैं और खुद देखते हैं कि गुरु किस बारे में बात कर रहे हैं। हम उनके कहे शब्दों को पढ़ने से कुछ समझ सकते हैं। सन्त अजायब सिंह जी ने हमारे ऊपर दया करके इन पुस्तकों को लिखा है, हम इनसे फायदा उठाएं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने सन् 1987 में शेख फरीद साहब की बानी पर जो सतसंग किए हैं, उन सतसंगों को इस पुस्तक ***बिछोड़े का दर्द*** में संग्रहित किया गया है।

यह पुस्तक परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के शुभ जन्मदिन 11 सितम्बर 2023 पर संगत को भेंट की जा रही है। संगत से प्रार्थना है कि इस पुस्तक से लाभ उठाएं। इस पुस्तक में कुछ कमियां रह गई होंगी जिसके लिए हम क्षमा के याचक हैं। आशा करते हैं संगत इस पुस्तक से लाभ उठाएगी।

प्रेम प्रकाश छाबड़ा (सम्पादक)
सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर–335 039, श्रीगंगानगर (राजस्थान)
फोन–99 50 55 66 71

शेख फरीद का जीवन

शेख फरीद का जन्म सन् 1173 के आस–पास गाँव कोठेवाल (मुल्तान) में हुआ। यह गाँव अब पाकिस्तान में है। इनके जन्म का नाम फरीदुद्दीन मसूद था। आपके परदादा काबुल के राजा थे। अफगानिस्तान में मंगोलियों के हमले के दौरान उनका कत्ल हुआ। आपके दादा शेख शईब पढ़े–लिखे राजनीतिक और धार्मिक परिवार से थे जो अफगानिस्तान से भारत आए। वे न केवल उस देश में हो रही हिंसा और युद्ध से बचना चाहते थे बल्कि भारत में इस्लाम की स्थापना में भी अपना योगदान देना चाहते थे।

आखिर में शेख शईब कोठेवाल में बस गए। वहाँ उन्होंने शिक्षा के लिए मशहूर प्राईवेट कॉलेज की स्थापना की। फरीद जी के पिता काजी थे, वे बहुत पढ़े–लिखे और अपने समाज के सम्मानित सदस्य थे। उन्होंने वहाँ की एक पंजाबी लड़की मरियम से शादी की, जो वहाँ के शेख की बेटी थी। फरीद की माता बहुत अध्यात्मिक थी और उनका फरीद पर बहुत ज्यादा प्रभाव था। वह आपको परमात्मा की भक्ति करने के लिए प्रेरित किया करती थी।

परम सन्त अजायब सिंह जी को फरीद की माता की कहानी बहुत पसंद थी इसलिए वे कई बार बच्चों को सतसंग में यह कहानी सुनाया करते थे।

मैंने कई बार सन्त शेख फरीद की कहानी सुनाई है कि किस तरह वे अपने बचपन में परमात्मा की भक्ति करने के लिए अपनी माता से प्रभावित हुए। उनकी माता अपने भजन–अभ्यास में बहुत ऊँची चढ़ाई वाली थी और वह शेख फरीद की जिंदगी बनाना चाहती थी। एक दिन उन्होंने फरीद से कहा कि उन्हें परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। उसी समय फरीद ने कहा, ''अच्छा माता,

मैं परमात्मा की भक्ति क्यों करुँ? क्या परमात्मा मुझे गुड़ देंगे?'' माता ने कहा, ''हाँ, बेटे अगर तुम परमात्मा की भक्ति करोगे तो परमात्मा तुम्हें गुड़ ही नहीं बल्कि बहुत सा धन और चीजें भी देंगे।''

माता ने फरीद को एक चटाई दी और अभ्यास में बैठने के लिए कहा। माता ने चटाई के नीचे थोड़ा सा गुड़ रख दिया, जिससे फरीद को लगे कि सच में परमात्मा अपनी भक्ति करने पर गुड़ देते हैं। कुछ समय बाद माता ने फरीद से कहा, ''मेरे प्यारे बेटे, अपनी आँखें खोलो और देखो परमात्मा ने तुम्हें क्या दिया है? तुम भक्ति कर रहे थे इसलिए परमात्मा ने तुम्हें गुड़ दिया है।'' शेख फरीद बहुत खुश हुए और उन्होंने वह गुड़ खा लिया।

कई दिनों तक इसी तरह चलता रहा, एक दिन उनकी माता ने सोचा कि देखा जाए क्या फरीद सच में भक्ति करना चाहता है या फिर वह उन पर थोप रही है। उस दिन उन्होंने फरीद को अभ्यास में बैठने के लिए नहीं कहा और फरीद से कहा कि वह कुछ और करे लेकिन शेख फरीद ऐसा नहीं चाहते थे। फरीद ने माता से कहा, ''माता, अब मुझे अभ्यास में बैठना चाहिए क्योंकि परमात्मा मुझे गुड़ देंगे और मैं परमात्मा को इंतजार नहीं करवाना चाहता।''

फरीद की माता की अभ्यास में बहुत ऊँची चढ़ाई थी। माता ने जब देखा कि फरीद अभ्यास का इच्छुक है तो उन्होंने अपने ध्यान से फरीद की आत्मा को ऊपर उठाया। धीरे–धीरे फरीद ने नाम का अमृत चखा तो वे गुड़ और दूसरी मिठाईयों का स्वाद भूल गए।

बचपन में फरीद को पहले गाँव कोठेवाल में और उसके बाद मुल्तान शहर में शिक्षा मिली। वे जब सोलह साल के थे तब अपने माता–पिता के साथ मक्का की तीर्थ यात्रा पर गए। बाद में उन्होंने इस्लाम के देशों की यात्रा की जिनमें अफगानिस्तान, बगदाद,

जेरूसेलम, सीरिया, ईरान, मक्का और मदीना शामिल थे। वहाँ वे कई सूफी गुरुओं और सन्तों से मिले।

कुछ समय अध्यात्मिक अभ्यास के लिए शान्ति की खोज में फरीद जंगलों में भी भटके। अध्यात्मिक फायदे के लिए उन्होंने तप–अभ्यास भी किया। सन्त अजायब सिंह जी कहते हैं, ''तप–अभ्यास के मामले में शेख फरीद का जीवन मेरे जैसा था। मैं तो यह कहूँगा कि उन्होंने मुझसे ज्यादा तप–अभ्यास किया है और मुझसे ज्यादा त्याग किया है।''

उनके *चिल्ला–ए–माकूस* तपस्या करने के कई किस्से हैं, जहाँ वे कुएँ में उल्टा लटककर अभ्यास किया करते थे। कुछ कहानियों के मुताबिक उन्होंने यह तपस्या चालीस दिनों तक की और कुछ कहानियों के मुताबिक यह तपस्या बारह साल तक की।

वे अपना भोजन कम करने के लिए भी जाने जाते हैं। उनके जीवन और सन्त अजायब सिंह जी के जीवन की यह भी एक समानता थी। अपने शिष्यों के सवालों का जवाब देते हुए सन्त अजायब सिंह जी ने अभ्यास के बारे में कहा, ''बाबा फरीद ने परमात्मा को पाने के लिए बहुत तप–अभ्यास किया। एक बार उन्होंने लकड़ी से रोटी जैसा आकार बनाकर उसे अपने पेट पर बाँध लिया। अगर कोई उनसे पूछता क्या आप खाना, खाना चाहते हैं? तो वे कहते मैंने पहले ही खा लिया है, मेरा पेट भरा हुआ है और जो बच गया था, उसे मैंने अपने पेट पर बाँध लिया है जिसे मैं अगली बार खा सकूँ।'' जब उन्हें भूख ज्यादा तंग करती तो वे पेड़ों के कुछ पत्ते तोड़कर खा लेते।

एक समय आया जब उनका रिश्ता अध्यात्मिक गुरु सूफी सन्त कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के साथ बन गया फिर उन्होंने

जंगलों में भटकना और सख्त तप–अभ्यास करना बंद कर दिया। इतिहास के रिकॉर्ड से यह पता नहीं चलता कि वे अपने गुरु से कब मिले। कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी बहुत मशहूर सूफी सन्त महाराज ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे, जिनके बारे में बाबा सावन सिंह जी और महाराज कृपाल ने अपनी किताबों में कहा है।

जब कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ने चोला छोड़ा तो उन्होंने अपनी अध्यात्मिक गद्दी शेख फरीद को दे दी। फरीद कुछ समय के लिए दिल्ली गए और फिर पाकपट्टन(पंजाब) में बस गए। यह जगह पाकिस्तान में है।

शेख फरीद गंजशकर, मिठास का खजाना के नाम से मशहूर हुए। पाकपट्टन में उन्होंने शादीशुदा और परिवार के साथ गृहस्थ जीवन व्यतीत किया लेकिन सादगी और भक्ति का जीवन जारी रखा। उन्होंने उस शहर को सन्तमत की सोच का मुख्य केन्द्र बनाया। पूरे भारत और मध्य पूर्व के देशों से लोग उनसे मिलने आते। ऐसा कहा जाता है कि वे अपनी मूल भाषा पंजाबी में ही लोगों से बात करते थे जबकि वे फारसी, अरबी के अलावा और भी कई भाषाओं में शिक्षित थे। भजन गाने के इरादे से उन्होंने अपनी बानी पंजाबी में लिखी है। उस बानी से वहाँ के आम लोग बहुत प्रभावित हुए खासकर औरतें जो अपने घर का कारोबार करते हुए भजन गाया करती थी। फरीद साहब को पंजाबी भजनों का पिता माना जाता है।

जैसा कि सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने कहा है कि फरीद साहब एक पूर्ण सूफी सन्त बने। उन्होंने कसूर के इलाके में कॉलेज खोले, कई लोगों को अच्छी शिक्षा दी। उन्होंने कई लोगों का जीवन बनाया, कई आत्माओं को मुक्ति दिलाई और कई सन्त बनाए।

फरीद साहब की मृत्यू सन् 1266 में हुई। उनके उत्तराधिकारी मशहूर सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया थे। निजामुद्दीन औलिया और उनके प्यारे शिष्य अमीर खुसरो के प्यार की कहानियाँ सन्तमत में बहुत लोकप्रिय हैं। इसके अलावा पाकपट्टन में शेख फरीद का काम जारी रखने वाले बहुत से धार्मिक नेता भी थे।

सन् 1512 के आस–पास पूर्वी देशों की लम्बी यात्रा से लौटते हुए गुरु नानकदेव जी पाकपट्टन में रूके। वहाँ उनकी मुलाकात शेख इब्राहिम से हुई जो उस समय शेख फरीद का काम जारी रखने वाले शेखों में से जीवित शेख थे। शेख इब्राहिम एक जाने–माने धार्मिक नेता थे। जैसा कि महाराज कृपाल सिंह जी ने गुरु नानकदेव जी की जीवनी में कहा है, शेख इब्राहिम ने गुरु नानकदेव जी को देखकर उनके स्वागत में कहा, 'तुम हो अल्लाह।' गुरु नानकदेव जी ने जवाब दिया, 'अल्लाह ही मेरे होने का सार है।'

सन्त अजायब सिंह जी की पुस्तक ***परमात्मा के रंग*** में गुरु नानकदेव जी ने शेख इब्राहिम के सवालों के जवाब दिए हैं। गुरु नानकदेव जी ने उन्हें जीवित गुरु के होने का महत्त्व, जीवित गुरु की पावर और वे क्या करने में सक्षम होते हैं इस बारे में बताया है।

गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु ग्रंथ साहब को सन् 1604 में पूरा किया जिसमें उन्होंने फरीद साहब की बानी भी शामिल की है। जिस भाग में फरीद साहब की बानी है, उसमें गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु अमरदेव जी की बानी भी है। ऐसा उनकी बानी को विस्तार से समझाना है।

***

एक

परमात्मा आपके अंदर है

9 जनवरी 1987 - मुम्बई : DVD 79

संसार, महापुरुषों और सन्त–महात्माओं से कभी खाली नहीं रहा। परमात्मा सदा ही अपनी जानकारी देने के लिए इस मंडल पर कभी किसी महात्मा का तो कभी किसी महात्मा का तन धारण करके आता है। कभी उस परमात्मा का नाम कबीर, कभी नानक और कभी सावन पड़ा। ऊँचे भाग्य वाले उन महान हस्तियों से फायदा उठा लेते हैं, बाकी दुनियावी जीव सोचते ही रह जाते हैं। दुनिया 'शब्द–नाम' का रास्ता छोड़कर रीति–रिवाज और कर्मकांड से ही परमात्मा को पाना चाहती है।

महात्माओं की लेखनियों और उनके पवित्र हृदय से जो आवाज आ रही होती है, हम उसे मजहब या समाज का रूप दे देते हैं। महात्माओं का उपदेश सारी दुनिया के लिए होता है, लेकिन हम उस उपदेश को प्रान्त, सूबे या कौमों के अंदर बंद कर देते हैं और हम अपने आपको उन महात्माओं का नुमाईंदा कहलवाते हैं फिर यह भी दावा करते हैं कि असली मायनों में हम ही उन महात्माओं को मान रहे हैं।

प्यारेयो! सच्चाई इसके विपरीत है। उन महात्माओं को वही मानता है, जो उन महात्माओं के बताए हुए उपदेश पर अमल

करता है। महात्माओं ने ये धर्मग्रंथ, वेद–शास्त्र क्यों और किसलिए लिखे? ये धर्मपुस्तकें हमें महात्माओं के रूहानी सफर के बारे में बताती हैं कि महात्माओं ने कठिन से कठिन मेहनत की, रातों को जागे, भूख–प्यास काटी और अपने जीवन काल में परमात्मा को अपने अंदर प्रकट किया। जिस तरीके और साधन से महात्माओं को परमात्मा मिला उन्होंने हमारे फायदे के लिए उसे अपने धर्मग्रंथों में दर्ज कर दिया कि **परमात्मा आपके अंदर है।**

आप जिस परमात्मा को दिन–रात खोज रहे हैं वह परमात्मा आपको पहाड़ों में नहीं मिलता, समुंद्र की तह में नहीं मिलता, बेशक आप उसके रहने के लिए अच्छी से अच्छी जगह बना लें। परमात्मा अपना मंदिर (शरीर) खुद बनाकर उसके अंदर बैठा हुआ है, अगर आप भी इस शरीर रुपी मंदिर के अंदर दाखिल होना चाहते हैं तो इसे पवित्र करें तभी आप परमात्मा से मिल सकते हैं।

गुरु नानकदेव जी से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी तक दस गुरु साहिबानों ने ज्यादा से ज्यादा कष्ट सहकर हम जीवों को 'सुरत–शब्द' का अभ्यास बताया। 'सुरत–शब्द' का भाव आत्मा का परमात्मा के साथ जोड़ है। आत्मा भी हमारे अंदर है और परमात्मा भी हमारे अंदर है लेकिन हम उससे जुड़े हुए नहीं हैं। जब लोग 'सुरत–शब्द' के अभ्यास को, गुरु नानक साहब और कबीर साहब की तालीम को भूल गए तो उनकी तालीम को ताजा करने के लिए परमात्मा, सावन सिंह जी का तन धारण करके संसार में आया।

महात्मा हमें कोई नई बात नहीं बताते, वे बताते हैं कि परमात्मा से मिलने का रास्ता किसी इंसान का बनाया हुआ नहीं। यह रास्ता परमात्मा ने खुद ही बनाया है, इसे कोई घटा–बढ़ा नहीं सकता, यह रास्ता उतना ही पुराना है जितना इंसान पुराना है।

सन्त–महात्मा, हमें किसी समाज के साथ बाँधने के लिए नहीं आते। वे कोई नई समाज नहीं बनाते और न ही पहले की बनी हुई तोड़ते हैं। वे हमें परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। वे हमें बताते हैं कि प्यारेयो, आप अपने रीति–रिवाज और समाज के नियमों का पालन करते हुए भी 'सुरत–शब्द' का अभ्यास कर सकते हैं और **परमात्मा को अपने अंदर ही प्राप्त कर सकते हैं।**

हिन्दुस्तान में महाराज सावन सिंह जी ने गुरु नानकदेव जी की तालीम को घर–घर पहुँचाया। वे तन धारण करके विदेश नहीं गए, बल्कि शब्द रूप होकर अनेकों को दर्शन देते रहे। उन्होंने जीवों को अपनी तरफ खींचा कि मैं इस जगह बैठा हूँ। महान सतगुरु ने संसार में आकर हमें छोटे से छोटे तरीकों से कहानियाँ सुना–सुनाकर समझाया कि हमने किस तरह का जीवन व्यतीत करना है। आपका परमात्मा आपसे बिछुड़ा हुआ है, आप उसे बाहर ढूंढ रहे हैं लेकिन **परमात्मा आपके अंदर है।**

सन्तों का अपना–अपना तरीका होता है कि किससे किस तरह काम लेना है। बाबा सावन सिंह जी ने दक्षिण भारत में बाबा सोमनाथ की ड्यूटी लगाई। आप सबको बाबा सोमनाथ की हिस्ट्री का पता है कि बाबा सोमनाथ ने अपनी जिंदगी में कठिन तपस्या की। किसी महात्मा की निन्दा कर लेना आसान है लेकिन उस जैसा जीवन बनाना और उतनी मेहनत करना बहुत ही मुश्किल है। बाबा सावन सिंह जी कई–कई दिन अंदर से बाहर नहीं निकलते थे, कम खाना खाते थे। उन्होंने एक दिन संगत में कहा, ''मैंने कुछ नहीं किया यह बाबा जयमल सिंह जी की दया है।'' उनका खाना तैयार करने वाले बंता सिंह ने कहा कि आप कई–कई दिन भूखे–प्यासे रहकर अंदर से नहीं निकलते थे।

इसी तरह गुरु नानकदेव जी ने ग्यारह साल कंकड़–पत्थरों का बिछौना किया। कबीर साहब ने सारी जिंदगी खिचड़ी का आहार किया, हल्का खाना खाया। मैं बताया करता हूँ कि किसी महात्मा की शरण में जाने से पहले यह जरूर देखें, क्या इसने अपनी जिंदगी में कोई कमाई की है, साधना की है? कबीर साहब कहते हैंः

माय मुंडो ते गुरु की जाते भ्रम न जाए
आप डुबा चों बेद में चेले दिए बहाए

पिछले समय में आम रिवाज होता था कि जब कोई औरत विधवा हो जाती तो उसका सिर मुंडवा देते थे ताकि लोगों को निशानी हो जाए कि अब यह बाँझ हो गई है, बच्चे पैदा नहीं करेगी। ऐसे गुरु की माता पहले ही विधवा क्यों न हो गई या उसे बाँझ होने का इल्जाम दे दिया गया फिर भी वह पाखंड करके, लोगों की आत्मा के साथ खिलवाड़ न करता। हमारे वेद–शास्त्रों में जिन रीति–रिवाजों का वर्णन किया गया है वह सेवकों को भी उसी तरफ लगा देता है। वह न तो खुद अंदर जाता है और न ही उन्हें अंदर ले जाने का अधिकार रखता है। पाखंडी साधु से वेश्या अच्छी है क्योंकि वह किसी के साथ धोखा नहीं करती, उसके घर के बाहर बोर्ड लगा होता है कि, 'मैं यह हूँ।'

महान सन्त–सतगुरु बाबा सावन सिंह जी ने दक्षिण भारत में आत्माओं को जगाने के लिए, परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए बाबा सोमनाथ से कहा और महाराज कृपाल सिंह जी से कहा कि तुमने संसार में जाना है। महाराज कृपाल ने अपने जीवन काल में पश्चिम का दृश्य देखा था कि वे अंग्रेजो को सतसंग सुना रहे हैं। बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''हाँ ऐसा ही होगा।'' सन्त कृपाल सिंह ने समुंद्र की तह के अंदर, पहाड़ों की चोटियों पर जाकर

अपने गुरुदेव का नाम रोशन किया। आपने सोते–जागते, उठते–बैठते अपने गुरु को गाया। कबीर साहब कहते हैंः

अग्नि लगी आकाश को झड़ झड़ पैंण अंगियार
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार

परमात्मा हमेशा ही सन्तों के जरिए आकर अपनी आत्माओं की संभाल करता है, जिनके भाग्य में लिखा होता हैं उन्हें परमात्मा के साथ जोड़ता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

जैसे माँ पे वैसे बच्चे

बच्चों पर माता–पिता का असर होता है। महाराज सावन सिंह जी एक बादशाह की लड़की की मिसाल दिया करते थे। उस लड़की का किसी शहजादे के साथ प्यार हुआ, उन्होंने शादी का प्रोग्राम बनाया लेकिन दोनों के माता–पिता ने इस शादी का विरोध किया। लड़की ने कहा, ''इसमें झिझकने की क्या जरूरत है, हम दोनों बाहर चले जाएंगे?'' उन दिनों आज की तरह ट्रेन वगैरहा के साधन नहीं थे। आमतौर पर लोग ऊँट की या बैलगाड़ी की सवारी किया करते थे। वह लड़की अपने घर से ऊँटनी ले आई वे रात के अंधेरे में उस ऊँटनी पर बैठ गए। आगे एक छोटा सा नाला पड़ता था, उसमें पानी बह रहा था। लड़की ने शहजादे से कहा, ''ऊँटनी की लगाम खींच, इसकी माँ को आदत थी और इसे भी आदत है यह पानी में बैठ जाती हैं।''

कोई वक्त होता है कि जब किसी शब्द से हमारा दिल तब्दील हो जाता है। शहजादे के दिल में ख्याल आया कि पशु–पक्षियों का भी उनके बच्चों पर असर होता है तो क्या इंसानों के बच्चों पर असर नहीं होगा? जिस तरह आज यह औरत मेरे साथ निकल रही है कल इसके पेट से जो औलाद होगी, मेरी लड़की होगी अगर

वह भी ऐसे ही किसी के साथ चली जाएगी तो लोग मेरी बेइज्जती करेंगे कि यह बदमाश है।

शहजादे ने बहुत सोचकर उस लड़की से कहा कि मैं महल में कोई खास चीज भूल आया हूँ, चलो हम लेकर आएं अभी काफी रात बाकी है। जब उस महल के पास आए तो शहजादे ने हाथ जोड़कर लड़की से कहा, ''भाग्यवान, हम बहुत बुरा काम करने जा रहे थे, तू भी बदनाम होती और मैं भी बदनाम होता, हम जो औलाद पैदा करते वह भी बदनाम होती। हम बुरा कर्म करने से बच गए हैं, तू अपना जीवन अपने महल में व्यतीत कर और मैं अपने महल में व्यतीत करता हूँ।''

मैं कुछ दिन आपके आगे सूफी सन्त शेख फरीद साहब की बानी पर सतसंग करूंगा। शेख फरीद को उसकी माता से ही भक्ति करने का शौक पैदा हुआ था। फरीद खेल–कूद में रहता था, उसकी माता नामलेवा थी अच्छी अभ्यास करने वाली थी। माता फरीद से हमेशा कहती, ''बेटा, भजन किया कर, खुदा की बंदगी किया कर।'' फरीद ने कहा, ''खुदा खाने के लिए शहद, गुड़ या चीनी देगा?'' फरीद की माता ने कहा, ''बेटा, अगर हम खुदा की भक्ति करते हैं तो हम किसी चीज के मंगते नहीं रहते। खुदा हमें खाने के लिए शहद, चीनी सब कुछ ही देता है और सबके काज सँवारता है।'' शुरु–शुरु में भक्ति मार्ग में लगना मुश्किल है लेकिन बाद में इससे हटना भी मुश्किल हो जाता है।

आप महात्माओं की कहानियाँ पढ़कर देख लें। उन्होंने हँसते–हँसते दुःख बर्दाश्त किए लेकिन भक्ति के स्वाद को छोड़ नहीं सके। कुछ दिन फरीद की माता जमीन पर बोरी बिछा देती और फरीद के ऊपर कपड़ा डालकर कहती, ''बेटा, तू आँखें बंद करके

बैठ, खुदा चीनी रखकर जाएगा तू उठकर खा लेना।'' कुछ दिन तक माता कटोरी में चीनी डालकर रख देती और अपनी तवज्जो देती रही, आखिर तवज्जो से सुरत अंदर जा लगी। जब सुरत अंदर जाकर लगी तो फरीद ने उठकर कहाः

शक्कर खंड नवात गुड़ माखो माजा दुध
सब्बे वस्तु मिट्ठियाँ पर रब न पुजण तुध

माता, मैं मानता हूँ कि शहद मीठा है, गुड़ मीठा है और दूध भी मीठा है लेकिन जो स्वाद आज नाम में आया है वह स्वाद इन चीजों में नहीं। ये चीजें आरजी हैं, नाम सदा के लिए है। शेख फरीद ने अपने जीवन काल में बहुत सारे लोगों को उपदेश दिया।

किसी औरत के पाँच लड़के थे। उस औरत ने अपने लड़कों से कहा अगर हम कोई कारोबार, व्यापार या खेती करें तो बहुत मुश्किल है। मैं और मेरा पति इसी तरह करते रहे हैं, मैं जो करतब करती रही हूँ वह तुम्हें भी बताती हूँ। औरत के ऊपर लोग कम शक करते हैं। वह किसी के घर में जाकर खूब बातें करती। हमें पता है कि औरतें जल्दी विश्वास कर लेती हैं, वह औरत उस घर की औरतों से धन–पदार्थ या सोने का भेद ले लेती और उस घर में हींग का निशान लगा आती। आकर अपने पाँचों लड़कों से कहती कि मैं तालें में भी हींग लगा आई हूँ। जहाँ तुम्हें हींग की महक आए समझ लेना कि वहाँ धन–पदार्थ और सोना इत्यादि है। लड़के उस घर में जाकर सामान चोरी करके ले आते थे।

इस कहानी का तात्पर्य यह है कि जब हम नाम का रास्ता 'सुरत–शब्द' का अभ्यास छोड़ देते हैं तो हमारे अंदर हौमें–हंगता अहंकार पैदा हो जाता है। हौमें के पाँच बेटे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, ये आकर हमें लूट लेते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मुसाफिर जागते रहना नगर में चोर आते हैं
जरा सी नींद गफलत में देख झटपट गठड़ी उठाते हैं

गुरु नानकदेव जी ने भी कहाः

जागो जागो सुत्तयो चलया बन्जारा

देखें, आपका भाई सब कुछ हारकर इनके आगे हथियार डालकर चला जाता है। अगर अंदर अहंकार आया तो ये पाँचों ही आकर लूट लेते हैं। फरीद साहब इस बानी में हमें अच्छी–अच्छी मिसालें देकर समझा रहे हैं:

जित दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाय।।
मलक जे कंनी सुणीदा मुँह देखा ले आय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जिस समय हमारी आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया उसी समय परमात्मा ने इसके जाने का दिन और समय तय कर दिया। उसके मुताबिक ही वह आकर अपनी शक्ल दिखा देता है कि मैं आ गया हूँ।'' महात्मा ने उसे कहीं धर्मराज, कहीं इज्राईल फरिश्ता भी कहा है।

जिस तरह हिन्दुस्तान में आमतौर पर रिवाज है कि जब हम लड़की की शादी का दिन तय करते हैं कि किस तारीख पर किस समय आना है। दूल्हा, जिसके साथ लड़की की शादी होनी है वह किसी तरह भी उस वक्त को मिस नहीं करता, विवाह के निश्चित मुहूर्त के मुताबिक आ जाता है। बेशक लड़की रोए–चिल्लाए चाहे कुछ भी करे, वह उसके रोने की आवाज पर तरस नहीं करता उस लड़की को लेकर चला जाता है। हजरत वारिस शाह ने कहा थाः

हीर रूह ते इज्राईल खेड़ा जेहड़ा लेन्दा ही रूह नूं भाया ई

फरीद साहब कहते हैं, ''जिस दिन आपकी आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया था उसी दिन तय हो गया था कि कौनसी जगह आना है, कौनसा दिन होगा, क्या समय होगा और कौन आएगा? आत्मा को लेने के लिए दो ही ताकतें आती हैं अगर हमने नाम लिया है तो शब्द गुरु आता है उसने हमारी रक्षा करनी है, वह हमारी आत्मा को शरीर में से लेकर जाएगा। अगर गुरु नहीं, नाम नहीं तो मौत का फरिश्ता आकर ले जाएगा।

हम अपनी जिंदगी में एक नहीं हजारों उदाहरण देखते हैं कि अच्छी कमाई करने वाले सतसंगी कई–कई दिन पहले बता देते हैं कि मैंने कब जाना है। आला दर्जे के सतसंगी कई महीने पहले ही बता देते हैं कि मैंने किस महीने में जाना है।

बाबा सावन सिंह जी का नामलेवा सुंदरदास मेरे पास बीस साल रहा। वह अच्छा अभ्यास करता था, हम आठ–आठ घंटे खेत में धूना लगाकर बैठ जाते थे। एक दिन उसकी टाँग के ऊपर जलती हुई लकड़ी गिर गई और उसकी टाँग जल गई लेकिन उसे पता नहीं चला। जब अभ्यास से उठा तो कहने लगा, ''आज अभ्यास में जितना रस आया है उतना रस पहले कभी नहीं आया।''

सुंदरदास ने जिस समय चोला छोड़ा उस समय सैंकड़ो ही आदमी बैठे हुए थे। उसने छह महीने पहले ही बता दिया था कि मुझे लेने के लिए महाराज सावन और कृपाल आएंगे। उसने अपना कफन पहले ही तैयार करवा लिया था, उसने कुछ घंटे पहले चेतावनी दी कि दरबार खुला है और मैं अपनी बहन को भी अपने साथ लेकर जाना चाहता हूँ। उसकी बहन नामलेवा नहीं थी, जब उसने सुना तो वह मौत से डरती हुई बाहर चली गई। अब आप सोचकर देख सकते हैं कि सतसंगी के दिल में उस समय इतनी

खुशी होती है जितनी उसे अपनी शादी के समय भी नहीं होती। शादी के लिए भी बंदा सोचता है कि मुझे बंधन पड़ रहा है।

महात्मा सुनी–सुनाई नहीं बताते। हम अनेकों उदाहरण देखते हैं कि गुरु की सचेत की हुई आत्मा को, जिसे नाम मिला हुआ है उसे काल कभी भी लेकर नहीं जा सकता। गुरु की यही पक्की पहचान है कि वह अपनी आत्मा को अंदर और बाहर संभालता है।

बाबा सावन सिंह जी महाराज को शरीर छोड़े हुए काफी समय हो गया है लेकिन वे आज भी आत्माओं की संभाल कर रहे हैं। हमारे दयालु गुरु कृपाल सिंह जी महाराज को भी सांसारिक यात्रा पूरी करके गए हुए काफी साल हो गए हैं। मेरे पास अनेकों तारें, पत्र आते हैं जिसमें प्रेमी बताते हैं कि हमने देखा है वे पशु–पक्षी की भी संभाल कर रहे हैं, प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण है।

जिंद निमाणी कढीऐ हड्डां कूँ कड़काय।।
साहे लिखे न चलनी जिंदू कूँ समझाय।।

अब आप कहते हैं, ''उस इज्राईल फरिश्ते की किसी के साथ कोई दुश्मनी नहीं। उसकी ड्यटी है वह अपने समय पर जरूर आता है। जिसने पहले से तैयारी कर रखी है उसे कोई तकलीफ नहीं वह आत्मा खुशी–खुशी गुरु के साथ जाती है। जिसकी पहले से तैयारी नहीं वह उस समय गिरगिट की तरह रंग बदलता है।''

हथ मरोड़े तन तपे साहेब होया सेक

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है कभी पीला तो कभी सफेद होता है। कभी कहता है कि अच्छा हकीम बुलाओ। कभी कहता है कि बेटों को बुलाओ। वह ऐसा कुछ ही करता है, रोता है चिल्लाता है।

मेरी अपनी फैमिली का वाक्या है। सारे सन्तों के साथ ऐसा ही बीता है कि घर के लोग उन्हें कम ही मानते हैं। मैंने महाराज जी के कहने पर काफी सारी जायदाद छोड़ दी थी। मेरे परिवार के लोगों के दिमाग में बार–बार यही आता कि कृपाल ने इसके सिर पर जादू कर दिया है। मैं कभी–कभी हँसकर कहता कि वह कौन सा मेरी जायदाद ले गया? आखिर उनके साथ मेरी विरोधता यहाँ तक बढ़ गई कि मैंने उनके साथ दुनियावी रिश्ता खत्म कर दिया। मैंने उनसे कहा कि मेरे गुरुदेव कहते हैं, ''सन्त, सतसंगी के पशु–पक्षी तक की संभाल करते हैं।'' आप लोग इंसानी जामें में हैं वह महान हस्ती आपकी संभाल जरूर करेगी।

जुलाई 1986 में मेरा बड़ा भाई जो बीमार नहीं था, अचानक चोला छोड़ने लगा। उसने कहा कि चार कसाई मेरे आस–पास हैं, कसाईयों ने मुझे पकड़ लिया है। आप सोच सकते हैं कि वे कसाई कौन थे और क्यों आए? अचानक ही उसने मेरे गुरुदेव का नाम लिया कि महाराज जी ने आकर मुझे छुड़वा लिया है। उसने मरते हुए परिवार वालों से कहा, ''तुम लोग अजायब सिंह से नाम लो।'' सोचकर देखें, कैसे उस महान हस्ती ने आकर उसे छुड़वाया।

इसी तरह हमारे आश्रम में भागसिंह विरक एक सेवादार है, वह संगत की सेवा करता है। काफी समय पहले वह खुद परेशान था और लोगों से लड़ाई–झगड़ा करके उन्हें भी परेशान किया करता था। वह अपने पिता की भी यही हालत बताया करता है। जब उसके पिता का अन्त समय आया तो उसके पिता ने कहा कि मेरी कमर पर लोहे के गरम सरिये लगा रहे हैं। उस समय वे दोनों भाई वहाँ खड़े थे, हमने देखा कि उसकी कमर पर गरम सरिये के निशाान थे।

कुछ दिन बाद उसकी माता की मौत हुई वह नामलेवा थी। उसने कहा छिड़काव कर दो, मेरे गुरु आ रहे हैं। लड़कों ने कहा कि हमें गुरुदेव दिखाई नहीं दे रहे। माता ने कहा, ''तुम्हारी वह आँखें नहीं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियाँ–बीवी के भी एक जैसे कर्म नहीं होते।''

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''जिन्होंने विवाह के निश्चित मुहूर्त के मुताबिक तैयारी नहीं की उन्हें तकलीफ होती है लेकिन वह छोड़ता किसी को भी नहीं।'' हम अपने जीवनकाल में कहते हैं कि गुरु की क्या जरूरत है, नाम की क्या जरूरत है? हम लापरवाह हुए फिरते हैं लेकिन मौत का देवता किसी की लिहाज नहीं करता। माता–पिता, बहन–भाई को छोड़ते हुए वह आत्मा रोती है।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेया! जब तू इस संसार में आया था उस समय तू रो रहा था क्योंकि तेरी लिव परमात्मा से टूट गई थी। लेकिन इस संसार में ऐसी करनी कर कि घर वाले, रिश्तेदार आँसू बहाए और तेरे दिल में खुशी हो, तू हँसकर संसार से जाए।''

जब तुम आए जगत में, जग हँसा तुम रोए
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोए

जिंद वहुटी मरण वर लै जासी परणाय।।

जहाँ लड़की का रिश्ता तय किया होता है वे लड़की को जरूर लेकर जाते हैं इसी तरह हमारी आत्मा का जो समय तय है उस समय मौत का फरिश्ता जरुर आता है और लेकर चला जाता है। यह रोती है, दुःख उठाती है लेकिन उस समय सहारा देने वाला कोई नजर नहीं आता। आँखों से पानी अपने आप ही बहने लगता है। तुलसी साहब कहते हैंः

लगे टिकटिकी दिखे न भाई, वहाँ समय की कौन सुनाई

बाहर भाई–बहन के **बिछोड़े का दर्द** है अंदर का हाल बता नहीं सकता कि मुझे कितनी तकलीफ है। आँख फड़कनी बंद हो जाती है, डॉक्टर कहते हैं अब तो यह थोड़ी देर का ही है, आप इसे घर ले जा सकते हैं।

आपण हत्थीं जोल कै कै गल लग्गै धाय

फरीद साहब कहते हैं कि वही समझदार हैं जो वक्त की कद्र करते हैं, समय रहते हुए मौत से बचने का इंतजाम करते हैं। हम आमतौर पर देखते हैं कि जब मौत आती है तब पहले पैर सुन्न होते हैं, पैरों में कोई दर्द नहीं होता, टाँगों में भी जान नहीं। फिर कमर तक धड़ सुन्न हो जाता है, खून बाँह से पीछे हटना शुरु हो जाता है। धड़ से भी धीरे–धीरे ऊपर को जाती है आखिर गले में आ जाती है जिसे घोंघरू बजना कहते हैं।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं अगर उस समय भी इंसान किसी पूरे गुरु को याद करे तो वह आकर संभाल कर लेता है। महात्मा कहते हैं कि ठीक तो यह था कि इसने पहले ही तैयारी की होती। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मोया जित घर जावणा जीवंदया मर मार

भ्रावा, जहाँ मर कर जाना है, तू जीते जी वहाँ क्यों नहीं जाता।

वालों निक्की पुरसलात कंनी न सुणीआय।।
फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आप मुहाय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तूने जिस रास्ते से जाना है वह रास्ता बाल से भी बारीक है, तलवार जितना तीखा है, दुःखों और मुसीबतों से भरा हुआ है। वहाँ तू अकेला होगा, तेरे साथ कोई नहीं होगा। अफसोस! सन्तों ने आकर बहुत होके दिए कि आप लोग

जागें क्यों इन्द्रियों के भोगों में अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं लेकिन उन मालिक के प्यारों की आवाज कोई नहीं सुन रहा।''

फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भत।।
बनं उठाई पोटली कित्थै वंञां घत।।

अब फरीद साहब प्यार से बयान करते हैं, ''हम नाम प्राप्त करते हैं सतसंगी बनते हैं, मालिक के नाम पर फकीर बनते हैं। वही फकीर है, वही सन्त है जो अभ्यास करता है, मालिक के साथ जुड़ जाता है अपनी सुरत को मालिक के दरबार में पहुँचा देता है। जिसने आत्मा और परमात्मा की खोज कर ली वह परमात्मा रूप हो जाता है। कबीर साहब कहते हैंः

राम सन्त में भेद कुछ नाहीं

जब हम भक्ति मार्ग में निकलते हैं फकीरी धारण कर लेते हैं कि हम जरूर अभ्यास करेंगे, नाम जपेंगे और दुनियादारी में नहीं फसेंगे लेकिन बहुत शर्म की बात है कि हम फिर दुनियादारी में फँसकर भक्ति मार्ग को छोड़ देते हैं। हम भी दुनियादारों की तरह पापों की गठरी सिर पर रख लेते हैं। हमारे यार–दोस्त, मित्र–रिश्तेदार ताने भी देते हैं कि यह कल तक त्यागी था इसने घर–बार छोड़ा हुआ था लेकिन आज फिर हमारी तरह दुनिया में आ गया है। फकीरी कोई छोटी सी नहीं होती यह बहुत मुश्किल होती है। मैं तो कहूँगा फकीरी धारण करने से पहले कई दिन, कई महीने, कई साल सोचने की जरुरत है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

दरवेशा दा जीवणा रूक्खां दी जीराण

फकीर का दिल पेड़ की तरह होता है। चाहे कोई पेड़ को पानी दे, चाहे उसे काटे लेकिन पेड़ किसी को भी अपनी छाया से दूर नहीं करता। हजरत बाहू कहते हैंः

ज्योंदया मर रहिए तां वेश फकीरी बहिए हू
जे कोई कड्डे गाल उलांभा जी जी ओहनूं कहिऐ हू
जे कोई सिट्टे गुद्ड़ कूड़ा वांग अरूड़ी रहिए हू

भ्रावा, लोगों और परिवार वालों के ताने–मेहणे, निन्दा–चुगली सुननी पड़ती है। घर से सोचकर निकलें, सबको जी–जी कहना पड़ता है। अब यह तो फेंकने वाले की मर्जी है चाहे वह आम, संतरा फेंक कर जाए या छिलका फेंककर जाए। कबीर साहब कहते हैंः

कोई आवे भाव ले कोई आए अभाव
सन्त दोहू को पोसते भाव न गिने अभाव

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि कोई सतसंग सुनने के लिए आता है, कोई नाम जपने के लिए और अपनी आत्मा को खुराक देने के लिए आता है तो कोई जूते चुराने के लिए आ जाता है। लेकिन सन्त–महात्मा दोनों को ही प्यार से देखते हैं, दोनों से ही प्यार करते हैं। वे यह नहीं देखते कि ये किस काम के लिए आया है। कुछ दिन हमारे अंदर वैराग्य आता है तो हम रात को अभ्यास के लिए उठते हैं लेकिन फिर मन हमारे ऊपर जोर डाल देता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम बहे
काम क्रोध के धक्के खाहे लोभ नदी में डूब मरे

फकीरी बहुत मुश्किल है। फरीद साहब ने अपनी जिदंगी में बहुत तप किए थे, आप बारह साल जंगलों में फिरते रहे आपने बहुत सारे धूने भी तपाए। साधु विषय–विकार छोड़ देते हैं लेकिन इस युग में प्राण अन्न में है, अन्न नहीं छोड़ सकते। एक जगह फरीद साहब कहते हैंः

फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खाके तड़के फेर खड़ी

फरीद साहब चलते हुए जा रहे थे, उनको भूख लगी हुई थी, उन्होंने किसी से खरबूजे माँगे। खेत के रखवाले ने कहा, ''तुझे खरबूजे किस बात के दूं, तू अच्छा फकीर है, लोगों से माँगता फिरता है।'' फरीद साहब वहाँ से चुपचाप चले गए लेकिन फकीरी को लानत देते हैं कि अफसोस! मैं अपना पेट भी नहीं पाल सका? अगर मैं कमाई करता मेहनत करता तो अपना हर स्वाद पूरा कर सकता था और मैं अनेक लोगों को अन्न–पानी दे सकता था लेकिन मैं जंगल में आकर लोगों के ताने–मेहणे झेल रहा हूँ।

मालिक की मौज खरबूजों के खेत में सारे खरबूजे सिरियाँ बन गई, इंसान के सिर ही सिर दिखाई देने लगे। खेत का रखवाला घबरा गया कि मेरा मालिक जब आएगा वह क्या कहेगा? कुछ समय बाद खेत का मालिक आया तो उसने पूछा, ''यह क्या हुआ?'' रखवाले ने कहा, ''मैं कुछ नहीं कह सकता यहाँ एक फकीर आया था उसने खरबूजे माँगे थे लेकिन मैंने उसे नहीं दिए। वह कुछ नहीं बोला, उसने उफ तक नहीं की और वह अपने आपको लानतें मारता हुआ यहाँ से चला गया।''

खेत का मालिक भागकर फरीद साहब के पीछे गया और बोला, ''महाराज जी! पता नहीं क्या हुआ? मैंने जमीन किराए पर ली हुई है, नौकर रखे हुए हैं, आप दया–मेहर करें, मैं भूखा मर जाऊंगा।'' फरीद साहब ने हँसकर कहा, ''तुझे ऐसे ही लगा होगा, तू जाकर देख, वह खरबूजे ही बने हुए होंगे। तू यह ध्यान रखना उनमें से एक सिर की शक्ल का खरबूजा ही रहेगा।'' खेत का मालिक जब खेत में आया वहाँ सारे खरबूजे थे। खेत के मालिक ने फरीद साहब से पूछा, ''खरबूजे सिरियाँ क्यों बने?''

फरीद साहब ने कहा, ''यह सब तू उस सिर से ही पूछना। जब तू उससे पूछेगा तो वह बताएगा।'' खेत का मालिक जब खेत में आया तो उसने सारे खरबूजे बने देखे। आखिर एक जो सिर रह गया था मालिक ने उससे पूछा ऐसा क्यों हुआ?

उस सिर ने कहा, ''परमात्मा हमारे ऊपर मेहरबान हुआ था, वह बहुत कमाई वाला फकीर था, नाम का रसिया था। परमात्मा ने हमें मौका दिया था हम थोड़ा बहुत भी उस फकीर की रसना पर चढ़ जाते तो हम सबकी मुक्ति हो जाती। हम जिंदगी में कई बार खरबूजे बने और लोगों के पेट में जाकर हजम हुए और कई बार तू खरबूजा बना हम तुझे बाजार में बेचते रहे, तू लोगो के पेट में जाता रहा। यह तो परमात्मा ने बहुत सुंदर मौका दिया था अगर अब वह फकीर मिले तो हम जरूर उससे अंदर का भेद लें और अपने जीवन को सफल करें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्तों को परमात्मा की तरफ से रियायत होती है कि वे जिस पशु के ऊपर सवारी कर लें वह पशु चौरासी में नहीं जाता इंसानी जामें में आता है। वे जिस पेड़ का फल खा लें वह पेड़ इंसानी जामें से नीचे चौरासी में नहीं जाता, उसे भगवान की तरफ से जरूर रियायत मिलती है।

मालिक के प्यारे महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि फकीरी आसान नहीं। वही फकीर है जिसे परमात्मा ने सब कुछ दिया हो लेकिन वह फिर भी सब्र में रहे। बड़े उच्चकोटि के महात्मा आए, संसार ने उन्हें बहुत कष्ट दिए लेकिन उन्होंने किसी को बद्दुआ नहीं दी। कबीर साहब कहते हैं:

साधू स्यों झगड़ा भला मनमुख से नहीं प्यार

जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते उनके साथ प्यार करना घाटेमंद है, उनका प्यार हमें चौरासी में ले जाएगा अगर हम साधू के साथ झगड़ते हैं तो भी परमात्मा दया करता है। साधू का क्रोध दूध के उबाले की तरह है, साधू के क्रोध से भी दया प्राप्त होती है।

किझ न बुझै किझ न सुझै दुनीआं गुझी भाह।।

फरीद साहब कहते हैं, ''यह दुनिया गुझी आग है। यह गुझी आग तृष्णा, इन्द्रियों के भोग हमें बंदर की तरह नचा रहे हैं। बाहर धूँआ निकलता हुआ नजर नहीं आता। इन्द्रियों के भोग हमें बाहर से आकर नहीं चिपकते, ये सब अंदर ही है। मेरे ऊपर परमात्मा ने दया की, मेरा गुरु के साथ मिलाप करवाया, उस साईं ने मेरे ऊपर मेहर की मैं इस गुझी आग से बच गया हूँ।''

साईं मेरै चंगा कीता नाहीं तहँ भी दझां आह।।
फरीदा जे जाणां तिल थोड़ड़े संमल बुक भरी।।
जे जाणा सौह नंढड़ा तां थोड़ा माण करी।।

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर मुझे यह पता होता कि जिंदगी के श्वांस बहुत थोड़े हैं तो मैं इन्हें संभलकर खर्च करता, इनसे परमात्मा की भक्ति करवाता। अगर यह पता होता कि परमात्मा गरीबों, मजलूमों का है और उनका है जो उस परमात्मा के बन जाते हैं तो मैं इस शरीर में आकर किसी भी धन–पदार्थ और हुकूमत का अहंकार नहीं करता। ''

यह जीवन अमूल्य है, इसमें बैठकर जो भी श्वांस आता है उसे परमात्मा के लेखे में लगाएं। हमें उठते–बैठते, चलते–फिरते सिमरन में समय लगाना चाहिए ताकि अंदर से जो भी श्वांस आए सिमरन का ही आए। हमारा हर श्वांस परमात्मा के लेखे लगे, पता नहीं फिर इस जीवन का मौका मिले या न मिले। *

दो

शहर का रास्ता

10 जनवरी 1987 - मुम्बई : DVD 80

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि यह फुलवाड़ी शहंशाह कुल मालिक बाबा सावन सिंह जी की है। वे बड़े प्यार से हमें घरेलू मिसालें देकर समझाया करते थे। सन्त जब भी संसार में आते हैं वे हम दुनिया में फँसे हुए जीवों को कई उदाहरण देकर समझाते हैं।

बाबा सावन सिंह जी एक बादशाह के लड़के की मिसाल दिया करते थे कि उसका लड़का बुरे लड़कों की संगत में पड़कर पढ़ाई का चोर बन गया, पढ़ता नहीं था। माता–पिता को फिक्र हुआ कि हम राजघराने के मालिक हैं अगर हमारा लड़का नहीं पढ़ेगा तो यह राजकाज का काम नहीं चला सकेगा, राज्य को बर्बाद कर देगा। उन्होंने अच्छे से अच्छा टीचर रखा लेकिन किसी भी टीचर को कामयाबी हासिल नहीं हुई जो उस बच्चे को विद्या दे सकता।

आखिर किसी ने उन्हें सुझाव दिया कि हम सांसारिक जीवों से जो गुत्थी न सुलझती हो महात्मा उस मसले का हल निकाल देते हैं क्योंकि महात्मा तुजर्बेकार होते हैं, वे प्यार से जिंदगी का मसला हल कर देते हैं। बादशाह ने महात्मा के पास जाकर कहा, ''मेरा लड़का पढ़ाई का चोर है, मेरे जाने के बाद इसके सिर पर बहुत जिम्मेदारियाँ पड़ेंगी यह किस तरह राजकाज संभालेगा?''

महात्मा ने बादशाह से कहा, ''कोई बात नहीं तू इस लड़के को हमारे पास छोड़ दे हम इसे पढ़ा देंगे।'' बादशाह महात्मा की बात सुनकर हैरान हुआ कि महात्मा इसे कैसे पढ़ा देंगे? महात्मा ने सबसे पहले लड़के की आदत को समझा। महात्मा ने लड़के से पूछा, ''बेटा, तुझे किस चीज का शौक है? हम वही काम करेंगे।'' लड़के ने कहा, ''मुझे कबूतर उड़ाने का बहुत शौक है।'' महात्मा ने कहा कि मुझे भी बचपन में यही शौक था।

महात्मा बहुत से कबूतर ले आए फिर महात्मा ने कहा अगर हम इन कबूतरों को कोई दुनियावी नाम नहीं देंगे तो हमें कैसे पता लगेगा कि इनमें से कौनसा बीमार है और कौनसा तंदरूस्त है? किसने आसमान में उड़ान भरी है और किसने अभी उड़ान भरने की तैयारी करनी है इसलिए हमें इन कबूतरों के नाम रखने चाहिए।

लड़का महात्मा की बात से सहमत हो गया क्योंकि उसके शौक की बात हो रही थी। महात्मा ने किसी कबूतर का नाम 'क' तो किसी कबूतर का नाम 'ख' रख दिया। जितने अक्षर थे उतने कबूतरों के नाम रख दिए फिर भी कबूतर ज्यादा थे। महात्मा ने कहा, ''अब हम इन अक्षरों को जोड़कर इनके नाम रख देते हैं।'' लड़का अक्षरों को जोड़कर कबूतरों को नाम से बुलाने लगा और उन अक्षरों को याद करने लगा। महात्मा ने लड़के को पढ़ने के लिए छोटी सी किताब दी जिसमें बच्चों के लिए अच्छी–अच्छी कहानियाँ थी। आखिर बच्चे का शौक बढ़ गया, वह समझदार हुआ तो उसने खुद ही कबूतरों का ख्याल छोड़ दिया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों के पास जीवों के लिए अनेक किस्म के सुझाव होते हैं। सन्त हर तरीके से जीव को समझ लेते हैं कि इसकी रूचि किस तरफ है, यह किस मर्ज

का बीमार है, इसे क्या दवाई दें?'' हमारे साथ भी जिंदगी में ऐसे कई वाक्यात हो जाते हैं अगर हमारी कोई कीमती चीज़ या धन–दौलत खो जाए तो हम दिल पकड़कर बैठ जाते हैं कि अब हम वह वस्तु कहाँ से लेंगे?

एक आदमी ने जल्दबाजी में ढीली सी गाँठ देकर अपने पल्ले में लाल बाँध लिया, रास्ते में वह गाँठ खुल गई और लाल गिर गया। वह आदमी भागते हुए फरीद साहब के पास आकर बोला, ''आप महात्मा लोगों को अंतर्यामता होती है, मेरा लाल खो गया है आप मुझ पर दया करें, मुझे बताएं?'' फरीद साहब ने कहा, ''सज्जना! लाल तेरी लापरवाही से गिरा है अगर तू इसे कीमती समझता अच्छी तरह गाँठ लगाता तो तुझे आज परेशानी न होती।''

यह तो आपने एक दुनियावी मिसाल दी है। यह इंसानी जामा बहुत कीमती है अगर हमें यह ज्ञान हो जाए कि यह कीमती लाल इंसानी जामा खरीदने से भी नहीं मिलता, मुफ्त में जा रहा है अगर हम समझदार हों तो उस प्रभु–परमात्मा गुरु के साथ पक्का प्यार लगा लें ताकि हमारा यह जीवन सफल हो जाए।

जे जाणा लड़ छिजणा पीडी पाईं गंढ।।
तैं जेवड मैं नाहिं को सभ जग डिट्ठा हंढ।।

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर हम जीवों को समझ हो तो हम गुरु परमात्मा के साथ प्यार की जंजीर को कसकर गाँठ लगा लें कि कहीं यह खुल न जाए, पता नहीं कब मन इस जंजीर को तोड़ देगा। हे सतगुरु, मैं सारी दुनिया घूम आया हूँ, मुझे संसार में तेरी तरह कोई नहीं मिला।''

फरीदा जे तू अकल लतीफ, काले लिख न लेख।।
आपनड़ै गिरीवान महि सिरू नीवाँ करि देखु।।

हमें जिंदगी में जरूरत के लिए कई जगह जाना पड़ता है। एक बार फरीद साहब कचहरी में गए। वहाँ हर आदमी ने रिश्वत के लिए मुँह खोला हुआ था, किसी को तनख्वाह याद नहीं। वहाँ मुंशी पैसे लेकर अगले के हक में फैसला कर रहा था। फरीद साहब का यह पहला ही वाक्या था, आप उसे सम्बोधन करके कहते हैं, ''प्यारेया, तू इतना चतुर–स्याना और पढ़ा–लिखा है लेकिन रिश्वत लेकर अपनी आत्मा को क्यों दागी कर रहा है? तू ऐसे कर्म क्यों कर रहा है जिसका हिसाब तुझे ही चुकाना पड़ेगा। तू अपने दिल में झाँककर देख कि इन कर्मों को कौन भोगेगा, कौन इनका हिसाब–किताब चुकाएगा?''

फरीदा जो तैं मारन मुक्कीआं तिनां न मारें घुंम।।
आपनड़ै घर जाईऐ पैर तिनां दे चुंम।।

फरीद साहब ने अपनी जिंदगी का बहुत सा हिस्सा तप–अभ्यास में बिताया, आप तप में मस्त थे। वहाँ से एक अहंकारी गुजरा, वह रास्ता भूल गया था उसने इशारे से फरीद साहब से पूछा कि **शहर को कौन सा रास्ता जाएगा?** हमें पता है कि अभ्यासी आदमी हमेशा मौत को याद रखता है।

फरीद साहब ने कब्रों की तरफ इशारा करके कहा, ''**शहर को यही रास्ता जाता है।**'' वह आदमी काफी दूर तक गया लेकिन आगे कब्रें ही कब्रें थी। उस अहंकारी के दिल में ख्याल आया कि महात्मा ने मेरे साथ मजाक किया है, क्यों न उसे मजाक की सजा दी जाए। उस अहंकारी ने आकर फरीद साहब को कई थप्पड़ मार दिए लेकिन फरीद साहब मालिक की मौज में हँसते रहे।

उस आदमी ने फरीद साहब से पूछा, ''महात्मा जी! मैंने आपको इतने थप्पड़ मारे हैं लेकिन आपने बुरा नहीं माना।'' फरीद साहब ने कहा, ''भाई! मैंने तुझे जो कुछ बताया था वह सही है क्योंकि कब्र ही असली शहर है, हर आदमी ने वहाँ जाकर ही बसना है।'' मालिक के प्यारों के अंदर नम्रता होती है, वे ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देते बल्कि कहते हैं प्यारेया, तेरा भला हो।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम अपने मतलब के लिए चुप कर जाएं, थप्पड़ भी खा लें कि किसी न किसी तरह हमारा मतलब हल हो जाए तो ऐसी नम्रता भी एक धोखा है।'' महात्मा प्यार से कहते हैं कि नम्रता सच्ची–सुच्ची और ऊँची होनी चाहिए। परमात्मा को सच्ची नम्रता मंजूर होती है। आप किसी का भी बुरा न सोचें। लालची आदमी दूसरे आदमी को डराता है और लालची आदमी ही डरता है। गुरु साहब कहते हैंः

भै काहू कउ देत नहि, नहि भै मानत आन

मालिक के प्यारे न किसी को भय देते हैं न किसी से भय समझते हैं। उन्हें हमेशा ही अपने गुरुदेव का भय होता है कि मुझसे कोई ऐसा काम न हो जाए जिससे गुरु का नाम बदनाम हो या मेरा गुरु नाराज हो जाए। आम कहावत हैः

माड़ा कुत्ता खसमें गाल

फरीदा जां तौ खटण वेल तां तू रत्ता दुनीं स्यों।।
मरग सवाई नींह जां भरया तां लदया।।

फरीद साहब उपदेश करते हैं, ''प्यारेया! यौवन अवस्था में परमात्मा से मिलने का मौका था, तब तू विषय–विकारों और दुनिया की मान–बड़ाई हासिल करने में लगा रहा। जब बुढ़ापा आया, मौत सामने खड़ी दिखाई दी फिर पछताकर परमात्मा की

तरफ लगा कि अब मैं किस तरह परमात्मा को खुश करूँ?'' नौशहरा में अच्छी कमाई वाला जल्लण जट्ट हुआ है, वह कहता हैः

छोटे होंदया डंगर चारे, वड्डे होयां हल वाहया
बुड्ढे हो के माला फेरी, ते रब दा ऊलांबा लाया

बूढ़े होकर हम कहते हैं कि हे परमात्मा, तू यह न कहना कि हमने तेरी भक्ति नहीं की। हमें पता है कि बूढ़े के ऊपर सारे परिवार का बोझ होता है, वह बैठा हुआ कभी कुछ सोचता है, कभी कुछ सोचता है, उसका ख्याल दुनिया में फँस जाता है। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मूर्ख ने यह भार उठाया, अब दुःखन से बहो घबराया

इससे किसने कहा था कि तू यह बोझ उठा? अब घबराता है कभी बेटा कहना नहीं मानता, कभी बहू कहना नहीं मानती। बेटे की मौत हो जाती है रात को नींद नहीं आती, अपने बाल खींचता है। पत्नी नाराज हो जाती है उसे मनाने में समय लग जाता है। आप देखें, यहाँ कौन खुश है? तूने अपने भजन–अभ्यास का समय खराब कर लिया, अब बूढ़ा हो गया है मौत सिरहाने खड़ी है। घर के लोग कहते हैं कि इसे अब गीता सुनाओ, सुखमनी साहिब सुनाओ। हमें ये सारे उपाय तो पहले करने चाहिए थे।

देख फरीदा जो थीआ दाढ़ी होई भूर।।
अग्गो नेड़ा आया पिच्छा रहया दूर।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''देख प्यारेया, तेरे सिर और मुँह के बाल सफेद हो गए हैं। बचपन, जवानी गुजर गई अब बुढ़ापा आ गया है। तेरी मौत का समय नज़दीक आ गया है, पैदाईश का समय दूर रह गया है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

यमराजे दे हेरू आए, माया संगल बँधलेया

शुरु में औरत–मर्द के कान के नज़दीक के बाल थोड़े से सफेद हो जाते हैं। ये सफेद बाल कान के पास आकर कहते हैं कि तूने जवानी तो खराब कर ली है अब भजन कर ले लेकिन हम उन बालों को बनावटी रंग लगाकर काला कर लेते हैं। मौत का देवता रंग नहीं देखता। श्वांस घट रहे हैं, तृष्णा बढ़ रही है अगर नाम मिला हुआ है और भजन करता है तो गुरु के आगे अनेक समस्याएं रखता है कि मेरी यह इच्छा पूरी करें, वह इच्छा पूरी करें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर गुरु शिष्य की ऐसी दुनियावी जरुरतों को सुने तो गुरु करोड़ों जन्मों में भी शिष्य को लेकर नहीं जा सकता।'' हमारा और सन्तों का रास्ता शब्द–नाम, परमार्थ और रूहानियत का है। सन्त कभी भी हमारी दुनियादारी में दखल नहीं देते। सन्त यह सुझाव देते हैं कि मेहनत करें, उद्यम करें; उद्यमी आदमी दुनियादारी के काम में सफल होता है और परमार्थ में भी सफल होता है।

देख फरीदा जे थीआ सक्कर होई विस।।
सांईं बाझों आपणे वेदण कहीऐ किस।।

आप कहते हैं, ''गुरु के बिना, नाम के बिना बेशक इंसान जुबान से कितनी भी मीठी कथनी क्यों न कर ले वह कामयाब नहीं हो सकता। जिन भोगों को हम शक्कर, चीनी और शहद की तरह मीठा समझते थे बुढ़ापा आने पर भोगों में भी रस नहीं आता।''

आखिरी वक्त पीड़ा होती है, आत्मा शरीर से नहीं निकलती। सारी जिंदगी इन्द्रियों के भोग मीठे समझकर भोगे, अब ये जहर की तरह कड़वे लगते हैं। गुरु मिला नहीं, नाम मिला नहीं अब किस साईं के आगे अपना दुःख रोएं, किससे कहें कि मेरी संभाल कर?

फरीदा अक्खीं देख पतीणीआं सुण सुण रीणे कंन।।
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन।।

फरीद साहब कहते हैं, ''दुनिया के रूप–रंग देख–देखकर आँखों की नज़र कमजोर हो गई फिर भी यह संतुष्ट नहीं। मीठे सुहावने राग सुन–सुनकर कान बहरे हो जाते हैं घर के लोग मशीन लेकर आते हैं कि किसी तरह बुजुर्ग से बात करें। कान पर मशीन लगा लेते हैं फिर भी चाहते हैं कि मैं सिनेमा में जाकर राग सुनूं।''

हमारी भी यही हालत है आँख और कान जवाब दे जाते हैं फिर भी जीवन की आशा रखते हैं। उस समय भी अनेक शिकायतें करते हैं कि भजन करने से घुटने–टखने दुःखते हैं, ख्याल नहीं टिकता। मौत सिरहाने खड़ी आवाज देती है फिर भी हम परमात्मा की तरफ नहीं जाते। काल की ताकत हमेशा भरमा रही है और जानी–दुश्मन मन हमें अंदर नहीं जाने देता, बाहर ही रखता है।

फरीदा कालीं जिनीं न राविआ धौलीं रावै कोय।।
कर सांईं स्यों पिर हड़ी रंग नवेला होय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर आपने यौवन अवस्था हाथ से निकाल ली है बूढ़े हो गए हैं फिर भी आप शब्द–नाम की कमाई करें तो आपके ऊपर नाम का रंग चढ़ जाएगा। किसी भी उम्र में परमात्मा को याद करें परमात्मा आपकी भक्ति को परवान करेगा।''

महाराज सावन सिंह जी हमेशा ही कहा करते थे, ''परमात्मा मेहर करे अगर जवानी में ही नाम मिल जाए, हिम्मत करके हमें उस समय मीठे चावलों पर हाथ मार लेना चाहिए। अभ्यास करके मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाना चाहिए अगर जवानी चली गई है तो बुढ़ापे को न जाने दें।''

ध्रुव–प्रहलाद छोटे बच्चे थे उन्होंने भक्ति की, परमात्मा ने उन्हें अपने चरणों में जगह दी। गुरु अमरदेव जी बहत्तर साल की उम्र में गुरु चरणों में आए, उन्होंने तन–मन से 'शब्द–नाम' की कमाई की। श्रद्धा, प्यार से लंगर की सेवा की, पानी ढोते रहे। गुरु ने उन्हें जो हुक्म दिया उसकी पालना की, गुरु ने उन्हें अपनी गद्दी सौंप दी। आप किसी भी अवस्था में परमात्मा को याद करें परमात्मा आपको कुबूल करने के लिए तैयार है।

फरीदा काली धौली साहिब सदा है जे को चित करे।।
आपणा लाया पिरम न लगई जे लोवै सभ कोय।।
एह पिरम प्याला खसम का जै भावै तै देय।।

आप कहते हैं, ''देख भई सज्जना, अगर जवानी में नाम मिल जाए तो परमात्मा से मिलना बहुत आसान होता है। बूढ़ा जो काम देर से करता है जवान वही काम जल्दी कर लेता है अगर बूढ़ा दो घंटे कमर सीधी करके भजन में बैठ सकता है तो जवान आठ–दस घंटे कमर सीधी करके भजन में बैठ सकता है।''

अमरदेव जी को बुढ़ापे में गुरु की शरण मिली थी। यह अपने बस की बात नहीं कि हम जब चाहें नाम प्राप्त कर लें। यह परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है कि प्यार का प्याला किसे और कब देना है, किसका वक्त आया हुआ है?

मैं बताया करता हूँ कि यह परमात्मा का खुद का न्याय होता है कि किस आत्मा को दुनिया में परेशान करना है, किस आत्मा को अपने साथ जोड़ना है। परमात्मा ने जिन आत्माओं को अपने साथ जोड़ना होता है उनमें ही नामदान की ख्वाहिश पैदा होती है, वही

आत्माएं नामदान प्राप्त कर सकती हैं। गुरु के लिए दूर या नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। चाहे गुरु समुंद्र पार करके जाए, चाहे पहाड़ों की चोटियों पर जाए या उस आत्मा को अपने पास बुलाए।

हमारे हुजूर परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा है उसे पता है कि आग किस जगह भड़क रही है।'' इसी तरह महात्मा ऊपर सच्चखंड में बैठे हुए देख रहे हैं कि किस आत्मा में तड़प है, मैंने किससे मिलना है। जिस आत्मा का वक्त आ जाता है महात्मा उस पर नाम का रंग चढ़ा देते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना ही मुश्किल है भगवान को पाना मुश्किल नहीं, परमात्मा अच्छे इंसान की तलाश में है।'' मैं बचपन से ही पूरे महात्मा की तलाश में था। मैं कई महात्माओं के पास गया, इसी खोज में मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला। बाबा बिशनदास जी ने मेरी जिंदगी की अच्छी नींव डाली। मैंने जमीन के अंदर बैठकर बहुत साल तक अभ्यास किया, मुझे सच्चाई की तलाश थी लेकिन तृप्ति नहीं हुई।

एक वक्त था जब महाराज सावन ने मुझसे कहा था, ''दूसरी मंजिल से ऊपर की वस्तु देने वाला खुद तेरे घर आएगा।'' मैं उस वक्त की इंतजार में बैठा था, लेकिन उन्हें पता था कि कौन मेरी याद में कहाँ बैठा है? जब वक्त आया तो उन्होंने अपना एक सेवक मेरे पास भेजा जिसने आकर कहा, ''महाराज जी तेरे आश्रम में आना चाहते हैं।'' मुझे बहुत खुशी हुई कि उस महान सावन का कहना ठीक था। मैं अठारह साल से जमीन के अंदर बैठा था, वह खुद ही आकर मिला, परमात्मा गुरु सबको देखता है।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं जिसके ऊपर परमात्मा खुश हो जाता है उसे प्यार का प्याला दे देता है। जिसे यह बड़ाई

देनी है कि तू जिसे नाम देगा मैं उसे अपने चरणों में रखूंगा, यह उस मालिक ने अपने हाथ में रखा हुआ है।

फरीदा जिन लोयण जग मोहया से लोयण मैं डिठ।।
कजल रेख न सहंदियां से पंखी सूय बहिठ।।

एक बार फरीद साहब कब्रिस्तान से गुजर रहे थे, वहाँ किसी का शव बाहर निकला हुआ था। कई बार ऐसा हो जाता है कि कुत्ते शव को बाहर निकाल लेते हैं। उस शव का माँस कीड़ों ने खत्म किया हुआ था, आँखों वाली जगह पर जाले लगे हुए थे, जाले में छोटे–छोटे जानवरों ने अंडे और बच्चे दिए हुए थे। यह देखकर फरीद साहब अफसोस से कहते हैं कि जिन आँखों से हम दुनिया को मोह लेते हैं, पत्नी पति को और पति पत्नी को मोह लेता है। इन आँखों में ही सब कुछ है।

ओ अक्ल के अंधे देख जरा, तैनूं सतगुरु दित्तियां अक्खियां ने
हर कदम ते ठोकर खाना ऐं, ऐहे अक्खियां कास नूं रखियां ने
कई मारे मर गए अक्खियां दे, कई तारे तर गए अक्खियां दे
ऐ जहर ते अमृत अक्खियां विच, ऐ रमजां किसने लिखियां ने

हमारे हिन्दुस्तान में आमतौर पर लड़कियाँ आँखों में काजल लगाती हैं अगर काजल मोटा हो तो वह आँखों में रड़कने लग जाता है। जो आँखें मोटे काजल को भी नहीं सहती थी आज उन आँखों के अंदर जानवरों ने अपने घौंसले बनाकर बच्चे दिए हुए हैं। अफसोस! अगर तूने भजन किया होता इस जिंदगी में परमात्मा से मिला होता तो आज तेरा पिंजर इस तरह बर्बाद न होता।

फरीदा कूकेंदया चांगेंदया मत्ती देंदयां नित।।
जो सैतान वंझाया से कित फेरह् चित।।

फरीद साहब कहते हैं कि मालिक हमेशा ही अपने प्यारे महात्माओं को संसार में भेजता है। महात्मा सतसंग के जरिए हम लोगों को समझाते हैं कि प्यारेयो, आप बहे जा रहे हैं, बचें। इस संसार में से कोई भी आपके साथ नहीं जाएगा। पति, पत्नी के मुँह की तरफ देखता रह जाता है, पत्नी चली जाती है। इसी तरह पत्नी देखती रह जाती है, पीटती है कि तेरे बिना मेरा कौन है? लेकिन कोई मदद नहीं कर सकता। माता–पिता बैठे हैं, बच्चे चले जाते हैं। महात्मा हौका देकर कहते हैं कि इस संसार में आपका कौन है। गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैंः

जगत में झूठी देखी प्रीत
अपने ही हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत
मेरो मेरो सबहों कहत है हित स्यों बाँधयो चीत
मन मूर्ख अजे न समझयो सिख दा हारयो नीत
नानक भौजल पार परे जे गाए प्रभु दे गीत

अगर आप परमात्मा का भजन करें तभी इस भवसागर से पार हो सकते हैं। महात्मा बार–बार जोर देकर हमें समझाते हैं कि कौन सी चीज़ आपके फायदे की है। गुरु रामदास जी कहते हैंः

सुनो सुनो जन भाई गुरु काढ़े बाँह कुकीजे

जिस तरह मल्लाह अपने बेड़े को समुंद्र के किनारे खड़ा करके लोगों को हौका देता है, ''जिन्होंने समुंद्र की लहरों से बचकर दूसरे किनारे जाना है, वे मेरे बेड़े में आकर बैठ जाएं। मेरी जिम्मेदारी है, मैं तजुर्बेकार हूँ, मैं इस बेड़े को दूसरे किनारे पर लगा दूँगा, आप सही सलामत पहुँच जाएंगे।''

गुरु भी संसार में नाम का बेड़ा लेकर आते हैं और कहते हैं, ''प्यारेयो, मुझे परमात्मा से आर्शिवाद मिला हुआ है अगर आप इस नाम के बेड़े में बैठ जाएंगे तो आप भी पार हो जाएंगे।''

जे आत्म को सुख नित लोड़ो तो सतगुरु शरण पवीजे

अगर आप अपनी आत्मा को शान्ति देना चाहते हैं, परमात्मा के साथ मिलाना चाहते हैं तो आप महात्मा की शरण प्राप्त करें।

फरीदा कूकेंदया चांगेंदया मत्ती देंदयां नित।।
जो सैतान वंझाया से कित फेरह् चित।।

जिन्हें काल ने बहकाया हुआ है वे सोचते हैं कि यह दुनिया और दुनिया के पदार्थ सच्चे हैं, मौत और लोगों के लिए है। काल के बहकावे में आए हुए लोग कहते हैं कि सोचेंगे अगर समय मिला तो महात्मा से नाम ले आएंगे। वे अपनी प्लेनिंगें ही बनाते रह जाते हैं, मौत आकर गला दबा देती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मनमुख जे समझाईऐ भी औजड़ जाए

ऐसे लोगों को शैतान मन ने उलटी तरफ लगाया हुआ है, आप उन्हें जितना मर्जी प्रेम–प्यार से समझा लें, वे परमार्थ की तरफ आ ही नहीं सकते। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

मनमुख ते गुरमुख दा हो नहीं सकदा मेल
वक्खों वक्ख दोहां दा रस्ता ज्यों पानी ते तेल
ईक डोबे दूजा तारे ऐह अजब है प्रभु दा खेल
ईक बाप दे दो बेटे एक पास ते दूजा फेल

मनमुख और गुरुमुख दोनों ही परमात्मा के बच्चे हैं। जिस तरह एक पिता के दो बच्चे स्कूल में जाते हैं, एक अच्छी तालीम हासिल करके अफसर बन जाता है और दूसरा जानवरों के पीछे फिरता रहता है। यह प्रभु का अजब खेल है जिस तरह पानी और तेल का मिलाप नहीं होता, उसी तरह नाम के रसिए और दुनियादारों का मिलाप नहीं हो सकता। महात्मा दुनिया के कर्मकांडों को छिलका और नाम की कमाई को गिरी प्राप्त करना कहते हैं। मालिक के

प्यारे हमेशा ही हमारा ख्याल छिलके से हटाकर गिरी की तरफ लगाना चाहते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, खीर मथन आलस भारा

चाहे आप पानी में जितनी मर्जी मधानी घुमा लें, उसमें से मक्खन नहीं निकलेगा। जब दूध में मधानी घुमाएंगे, तभी मक्खन निकलेगा। हम दूध बिलोने में आलस्य करते हैं क्योंकि हम 'सुरत–शब्द' का अभ्यास करने में आलसी हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बुरे काम को उठ खलोया, नाम की बेला पै पै सोया

जिन्हें शैतान मन ने गुमराह किया हुआ है, उन्हें महात्मा चाहे कितना भी समझा लें, अच्छे से अच्छे वेद–शास्त्र सुना लें लेकिन उन्होंने मानना ही नहीं।

फरीदा थीओ पवाही दभ।। जे साईं लोडह् सभ।।
इक छिजेंह् बिआ लताड़ीऐ।। तां सांईं दै दर वाड़ीऐं।।

किसी आदमी ने फरीद साहब के पास आकर विनती की, ''महात्मा जी, मुझे परमात्मा को पाने का साधन–तरीका बताएं। परमात्मा के दरबार में जाने का मौका कैसे मिल सकता है?''

फरीद साहब एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं, ''देख प्यारेया, अगर तू परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है तो अपने मन को घास की तरह बना ले। कोई घास को पैरों तले रौंदता है, कोई दरांती से काटता है, कोई घास को उखाड़कर, उसे मरोड़कर, गूंथकर उसकी चटाई बना लेता है लेकिन घास किसी को बुरा नहीं कहता। प्रेमी लोग संतसंग में उस चटाई पर बैठकर भजन–अभ्यास करते है ऐसा करने से तुझे साईं के दरबार में जाने का मौका मिल जाएगा।''

भजन करने वाले को, महात्माओं की कुछ शर्तें अवश्य पूरी करनी पड़ती हैं। लोकलाज छोड़नी पड़ती है, लोगों के ताने–मेहणें झेलने पड़ते हैं, मान–पदवी का ख्याल छोड़कर जबरदस्त दुश्मन मन के साथ लड़ाई मोल लेनी पड़ती है। तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम

रण में मर जाना या मार देना एक घड़ी का ही काम है लेकिन मन के साथ बिना हथियार लड़ना रोज का ही संग्राम है। सतगुरु ने हमें 'शब्द–धुन' के हथियार के साथ लेस किया हुआ है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

मैं ते पंज जवान, गुरु थापी दित्ती कंड जिओ

हमारे मन और आत्मा की सीट तीसरे तिल हमारी आँखों के पीछे है। पाँचों डाकू–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल बैठक भी यहीं सूक्ष्म त्रिकुटी में है। बेशक आत्मा अकेली है लेकिन तू अंदर जाकर देख तेरा पूरा सतगुरु तेरे साथ है। तुझे जिस चीज की जरूरत होगी, गुरु अंदर ही तेरी जरूरत पूरी करेगा, यह उसकी ड्यूटी है। आप अंदर जाकर देखें, आपको आपका गुरु पहले ही मिलेगा। अगर आप परमात्मा के दरबार में जाना चाहते हैं तो अपने अंदर नम्रता, प्यार और आजज़ी पैदा करें।

फरीदा खाक न निंदीऐ खाकू जेड न कोय।।
जीवंदयां पैरां तलै मोयां उपर होय।।

मैं बताया करता हूँ कि हमेशा वही आदमी दूसरे की निन्दा करता है जिसे कोई लालच हो। कमाई वाले महात्मा उन पर भी दया करते हैं और परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि तू इन्हें बख्श दे, कहीं ये अपना जीवन तबाह न कर लें। महात्मा हमेशा

अपने सेवकों को इस रोग से बचाते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर इन्द्री का कोई न कोई स्वाद है। निन्दा न खट्टी है न मीठी है, इसमें कोई स्वाद नहीं, फिर भी इसने हर किसी को परेशान किया हुआ है।''

किसी ने फरीद साहब की निन्दा की कि फरीद साहब के पास क्या है, आप लोग उनके पास क्यों जाते हैं? फरीद साहब निन्दा करने वालों को निन्दा में जवाब नहीं देते बल्कि कहते हैं, ''प्यारेया, निन्दा तो खाक की भी नहीं करनी चाहिए, खाक भी बहुत शक्तिशाली है। जीते जी तो खाक लोगों के पैरों के नीचे है मौत आने पर कब्र में ऊपर हो जाती है इसलिए खाक से भी डरें।''

अगर कोई बुराई करता है तो उसे सजा देने वाला परमात्मा है। परमात्मा अच्छे कर्म करने वालों को भी देख रहा है और बुरे कर्म करने वालों को भी देख रहा है। परमात्मा जानता है किसको ईनाम देना है और किसको सजा देनी है।

फरीदा जा लब तां नेंह क्या लब त कूड़ा नेंह।।
किचर झत लंघाईऐ छप्पर तुटै मेंह।।

एक आदमी फरीद साहब की नकल कर रहा था, उसने कभी अभ्यास नहीं किया था, अंदर रसाई नहीं थी। वह सबको दिखाने के लिए आँखें बंद करके बैठता, परमार्थ की बातें करता। वह माया का पुजारी था, हमेशा ही अमीर लोगों की तलाश में रहता था कि अमीर लोग मेरे चेले बनें, अच्छा चढ़ावा चढ़े। वह हर किसी से कहता कि लंगर नहीं चलता, संगत के लिए मकान नहीं है।

फरीद साहब उस आदमी के अंदर की हालत देखकर कहते हैं, ''प्यारेया, तू लोगों को दिखाने के लिए आँखें बंद करके बगुले

की तरह समाधि लगाकर बैठता है लेकिन तेरा दिल माया की तरफ लगा हुआ है। एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं? तेरे मन में तो लालच है, परमात्मा के साथ प्यार कैसे हो सकता है? एक ही बात हो सकती है या तो परमात्मा के साथ प्यार हो सकता है या तू अपने लोभ की हवस को पूरा कर सकता है।''

फरीद साहब कहते हैं, ''झोंपड़ी टूटी हुई है, बारिश हो रही है, उस झोंपड़ी में कितनी देर बैठकर समय बिताएगा। तुझे विषय–विकारों का रोग लगा हुआ है क्योंकि हराम का खाने से अंदर हराम ही पैदा होता है। इंसान का पिंजर तो ऐसे ही दिखाई देता है लेकिन अंदर से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने खोखला किया हुआ है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

काम क्रोध काया को गाले, ज्यों कंचन सोहागा ढ़ाले

तू बूढ़ा हो गया है लेकिन अभी भी तेरा ख्याल भोगों से नहीं हटता। तू कब तक इस शरीर में बैठकर दो बातें करेगा, एक तरफ लोभ और दूसरी तरफ परमात्मा के साथ प्यार करने का दम मारेगा?

फरीद साहब हमें घरेलू मिसालें देकर बहुत प्यार से समझाते हैं कि हम सच्चे–सुच्चे होकर गुरु के साथ प्यार करें। सन्त–सतगुरु हमें जो रास्ता बताते हैं कि हम ईमानदारी से सच्चे दिल से नाम की कमाई करें ताकि गुरु को, जिसने हमें नाम के जहाज में बिठाया है, उसके लिए हमें ले जाना आसान हो जाए। कबीर साहब कहते हैंः

दीन दयाल भरोसे तेरे सब परिवार चढ़ाया बेड़े
जा तिस भावे तां हुक्म मनावे इस बेड़े को पार लघांवे

महात्मा अपने गुरुदेव के भरोसे इस बेड़े को संसार में धकेल देते हैं कि हे मालिक, तू ही इन आत्माओं को भेजने वाला है, तू ही इनका इंतजाम करता है; तू ही इन्हें अपने चरणों में जगह दे

सकता है। तेरी मर्जी है तू इनसे अभ्यास करवा या न करवा, हम तेरी दया से तेरे आसरे बैठे हैं। जब इंसान दुनिया के सारे सहारे छोड़कर सिर्फ गुरु के सहारे हो जाता है तब गुरु को भी हमारी संभाल का फिक्र हो जाता है।

जे गुरु झिड़के तां मीठा लागे, बख्शे तां गुरु वडयाई
लोक सलाहें तो तेरी उपमा, निन्दा छोड़ न जाई

गुरु की डाँट उन्हें ही प्यारी लगती है जो अपने अंदर ऐब देखते हैं। अगर गुरु बख्श देता है तो यह उसकी बड़ाई है अगर लोग हमारी उपमा करते हैं तो इसमें भी गुरु की बड़ाई है। हम तो इस काबिल नहीं थे कि अच्छे बन जाते, यह तो तेरी महिमा है।

अगर लोग निन्दा करते हैं तो क्या हमने तेरा दरवाजा, तेरी बड़ाई छोड़ देनी है। हमें तो तेरे वैराग्य का, तेरे प्यार का, तेरी महिमा गाने का रोग लग गया है, अब यह छूट नहीं सकता।

अमली जीवे अमल खाए त्यों हर जन जीवे नाम ध्याए

जिस तरह अमली अमल में ही अपनी जिंदगी समझता है, वह जानता है कि अगर मैं नशा नहीं करूंगा तो मर जाऊंगा, मेरे शरीर में दर्द होगा। इसी तरह मालिक के प्यारे उस मालिक की महिमा गाते हैं। उनके जीवन में भी वही लय चलती है। वे जब परमात्मा को भूल जाते हैं तो मौत महसूस करते हैं कि यह साँस बेकार चल रहे हैं। अगर मालिक एक सैकिंड जितना भी बिसर जाता है तो पचास साल जैसा **बिछोड़ा** पड़ जाता है।

हम भी फरीद साहब की तरह उठते–बैठते, सोते–जागते अपने गुरु को याद करें, अंदर जाकर उसकी सच्ची महिमा को देखें कि वह हमारे लिए दरवाजा खोलता है, हमें गले लगाता है। वह प्यार देने के लिए ही आता है। हमें इस जीवन से फायदा उठाना चाहिए।

***

तीन

बिछोड़े का दर्द

11 जनवरी 1987 - मुम्बई : DVD 81

मैंने पहले भी सतसंगों में बताया है कि यह फुलवाड़ी परमपिता बाबा सावन सिंह जी की है। इस महान हस्ती का जन्म उस वक्त हुआ जब लोग महापुरुषों के बताए हुए उपदेश को छोड़कर प्रभु चेतन हस्ती को पानी और पत्थरों में ढूंढने लग गए। लोग भूल गए कि परमात्मा कहाँ है और उससे कैसे मिलना है।

वह सावन संसार में इस तरह आया जिस तरह सावन के महीने में बहुत बारिश होती है। जिन इलाकों में नहरों का इंतजाम नहीं होता, वहाँ के लोग बारिश का इंतजार करते हैं। इसी तरह जिन प्यासी आत्माओं को मालिक से मिलने की चाह थी, उनकी प्यास बुझाने के लिए परमात्मा ने सावन का रूप धारण किया। भूले जीवों को आकर रास्ता बताया, जो लोग पत्थर पूज–पूजकर पत्थर हो चुके थे उन्हें अपना मुरीद बनाया।

उन्होंने बताया कि परमात्मा किसी बाहरी रीति–रिवाज़ से नहीं मिलता, परमात्मा आपके अंदर है और आपके प्यार का भूखा है। सारी कायनात का परमात्मा एक है, परमात्मा किसी समाज या मुल्क की पर्सनल जायदाद नहीं। सारे ही परमात्मा से मिलने के हकदार हैं। ऐसा नहीं कि परमात्मा से अमेरिकन ही मिल सकते हैं

हिन्दुस्तानी नहीं मिल सकते। परमात्मा सबका है जो परमात्मा को याद करता है उसे परमात्मा जरूर मिलता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर देती है।'' जिन्हें परमात्मा से मिलने की तड़प थी, उनके लिए परमात्मा सावन के रूप में आया। उस समय कुछ गरम ख्यालों के लोग उनके साथ बहस करने के लिए आते और अपने–अपने रीति–रिवाज़ों, कर्मकांडों का जिक्र भी करते। वे लोग उनके आश्रम के आगे बाजे बजाते कि इस तरह से परमात्मा मिलता है। महाराज सावन सिंह जी हँसकर कहते, ''देखो भई, रब को जगाने वाले आ गए।'' कबीर साहब कहते हैः

मुल्ला मनारे क्या चढ़े साईं न बहरा होय
जां कारण तू बाँग दे दिल ही भीतर जोय

तूं ऊँची–ऊँची आवाजें लगा रहा है, परमात्मा गूँगा–बहरा नहीं वह तेरे अंदर बैठा है। तू सोचता बाद में है वह सुन पहले लेता है। हम सब जानते हैं कि जब हम दान–पुण्य करते हैं, किसी धर्मस्थान पर इकट्ठे होते हैं तब पंडितों, ज्योतिषियों से पूछते हैं कि दान–पुण्य करने के लिए कौनसा महीना, कौनसी तारीख अच्छी है? लेकिन पाप करते वक्त माता–पिता से भी सलाह नहीं की जाती, पति, पत्नी से सलाह नहीं करता, जिसे जब मौका मिलता है वह फायदा उठाने की कोशिश करता है।

बेशक हम बुराई अंदर बैठकर करते हैं लेकिन वह बाहर प्रकट हो जाती है। हम अपने बुरे कर्मों की सजा बीमारी, बेरोजगारी और परेशानी से चुका रहे हैं। इस देह में बैठकर हम थोड़े बहुत अच्छे कर्म करते हैं, उनका ईनाम अच्छी बुद्धि, तंदरूस्ती, रोजगार और नेक औलाद है। परमात्मा अंदर बैठकर हमारी हर हरकत को देख रहा है।

आज लोगों ने खोज करने में कोई कसर नहीं छोड़ी अगर परमात्मा भेष धारण करने से मिलता तो इससे सस्ता सौदा और क्या हो सकता है? भेष तो दुनिया को वश में करने के लिए किया जाता है लेकिन परमात्मा किसी भेष से नहीं रीझता, अगर परमात्मा भेष से रीझता होता तो बहरूपिए लोग परमात्मा को फँसा लेते उन्हें परमात्मा मिल जाता, वे भीख क्यों माँगते फिरते?

अगर परमात्मा नहाने–धोने से मिलता होता तो पानी में रहने वाले जीव मेंढ़क–मछलियाँ परमात्मा को पा लेते, वे आज इन योनियों में कष्ट क्यों उठाते? अगर परमात्मा दान देने से मिलता तो साहूकार लोगों को मिल जाता। अगर परमात्मा पढ़–पढ़ाई से मिलता तो चतुर लोग परमात्मा को पा लेते, भोले लोग रह जाते।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि परमात्मा से मिलने का साधन और तरीका परमात्मा ने अपनी मर्जी के मुताबिक बनाया हुआ है। कोई परमात्मा के बनाए हुए तरीके को घटा–बढ़ा नहीं सकता। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

जिसका गृह तिस दिया ताला, कुंजी गुरु सौंपाई
अनिक उपाय करे नहीं पाय, बिन सतगुरु शरणाई

जिस परमात्मा ने यह देह वजूद बनाया है उसने ही ताला लगाया हुआ है। परमात्मा, महात्माओं को ताले की कुंजी देकर इस संसार मंडल में भेजता है। यह कुंजी कभी गुरु नानकदेव जी कभी कबीर साहब तो कभी महाराज सावन के पास रही। परमात्मा जिसे चाहे यह कुंजी देकर संसार में भेज सकता है। आप मन–बुद्धि से जितने भी उपाय कर लें, परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते।

मुझे जिंदगी में बहुत से कर्मकांड करने का मौका मिला है। मैंने बड़ी श्रद्धा से धूनियाँ तपाई हैं, जलधारा वगैरह किए है लेकिन जब

तक मैंने सतगुरु के दर पर जाकर अपना सिर नहीं झुकाया, मुझे शान्ति नहीं मिली। कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों तिल माहीं तेल है ज्यों चक मक में आग
तेरा प्रीतम तुझमें जाग सके तो जाग

प्यारेयो, जिस तरह तिल के अंदर तेल है, पत्थर के अंदर अग्नि है, फूल के अंदर खुशबू है और मेहंदी के अंदर रंग है उसी तरह परमात्मा आपके अंदर समाया हुआ है अगर आप उसे जगा सकते हैं तो जगा लें, बुला सकते हैं तो बुला लें।

यह शरीर परमात्मा के रहने का मंदिर है लेकिन हम इस मंदिर को छोड़कर अपने हाथों से बनाए हुए मंदिरों में परमात्मा को ढूंढते हैं तो परेशानी के सिवाय कुछ हासिल नहीं होता। महात्माओं ने हमें समझाने के लिए बाहर ये मंदिर बनाए थे कि इनकी सफाई रखनी जरुरी है। यहाँ मीट, शराब, बीड़ी–सिगरेट नहीं पीनी क्योंकि यह परमात्मा के रहने की जगह है।

सभी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्च में एक जैसे रीति–रिवाज होते हैं। जब हिन्दुओं के मंदिर में जाते हैं वहाँ घंटी लगी होती है जिसे बजाकर अंदर जाते हैं, अंदर ज्योत जल रही होती है। जब मस्जिद में जाते हैं तो वहाँ चिरागा करते हैं, मौलवी ऊँची–ऊँची बाँग देता है। जब सिखों के गुरुद्वारे में जाते हैं, वहाँ शंख बजाए जाते हैं, अखंड ज्योत जलाई जाती है जो दिन–रात जलती है। जब चर्च में जाते हैं वहाँ मोमबत्तियाँ जलाई जाती है, प्रार्थना से पहले घंटे की आवाज पैदा करते हैं। सबके तरीके मिलते–जुलते हैं, सब मजहबों के अंदर एक ही सच्चाई परमात्मा की खोज है।

हम बाहर के मंदिरों की इज्ज़त करते हैं, वहाँ जूते लेकर नहीं जाते लेकिन जिस मंदिर को परमात्मा ने बनाया है, जिसके अंदर

वह खुद बैठा है, क्या हमने कभी इस मंदिर की कद्र की? कभी इसकी सफाई की तरफ ध्यान दिया? अगर बाहर किसी मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में गलती से भी कोई दरार आ जाए तो हम परमात्मा के बनाए हजारों मंदिरों को कत्ल कर देते हैं, फिर कौम के शहीद कहलवाते हैं। इंसान ईंटों–पत्थरों के साथ प्यार करता है लेकिन जिन मंदिरों को परमात्मा ने बनाया है, जिनके अंदर परमात्मा खुद बैठा है, उनके साथ हम नफरत करते हैं।

मैं रोज आपको फरीद साहब की बानी सुना रहा हूँ। फरीद साहब ने जंगलों में घूमकर तप किए आखिर जब पूरा गुरु मिला तो आपको होश आई। आप जहाँ तप करते थे, वहाँ एक शाह सरफ भी रहता था, वह जंगलों–पहाड़ों में परमात्मा की खोज कर रहा था। फरीद साहब एक जगह अपनी समाधि लगाकर अंदर जाते थे।

जब शाह सरफ से प्रेम–प्यार की बातें चलीं तो फरीद साहब ने शाह सरफ से कहा, ''तू जंगलों–पहाड़ों में क्यों मारा–मारा फिरता है, वह खुदा तो तेरे अंदर है। तू काँटों में क्यों अपना वक्त खराब कर रहा है?'' फरीद साहब अपनी बानी में बताएंगे अगर तुझे परमात्मा से मिलने का शौक है तो किसी का दिल मत दुःखा, दिल दुःखाने से बड़ा कोई गुनाह नहीं।

फरीदा जंगल जंगल क्या भवह् वण कंडा मोड़ेंह्।।
वसी रब हिआलीऐ जंगल क्या ढूंढेह्।।
फरीदा इनी निक्की जंघीऐ थल डूंगर भविओम।।
अज्ज फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओम।।

जिन्होंने अभ्यास किया है परमात्मा की खोज की है, वे कम खाते हैं और कम बोलते हैं। वे जानते हैं कि किस तरह मन के

साथ संघर्ष करना पड़ता है। हमें पता है कि सुख का ईलाज दुःख है, कष्ट सहे बिना माता बच्चे को पैदा नहीं कर सकती। जिस तरह सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है और मोती प्राप्त करने के लिए गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है उसी तरह परमात्मा की प्राप्ति के लिए बहुत कुर्बानी की जरूरत पड़ती है।

हम ज्यादा खाएंगे तो नींद, आलस्य आएगा। हम दुनियादार खा–खाकर मोटे हो जाते हैं लेकिन अभ्यासी का शरीर ताकतवर नहीं होता। फरीद साहब ने बहुत तप–अभ्यास किए। भूख–प्यास सहकर आपका शरीर बहुत दुर्बल हो चुका था। उस समय ट्रेन, कार के साधन नहीं थे, पैदल चलकर सफर करना पड़ता था। आप कहते हैं, ''मैंने इन टाँगों से जंगलों–पहाड़ों में बहुत लंबे–लंबे सफर किए हैं लेकिन आज मैं अभ्यास में नहीं बैठ सका, शरीर में ताकत नहीं।'' जब आप बीमार हुए उस समय पेशाब करने के लिए जो बर्तन नज़दीक रखा था वह ऐसे दिख रहा था जैसे सौ कोस दूर रखा हो। आप उस समय अपनी अवस्था ब्यान करते हैं।

फरीदा रातीं वडीआं धुख धुख उठन पास।।
धिग तिना दा जीवया जिनां विडाणी आस।।

फरीद साहब कहते हैं, ''सतयुग, द्वापर, त्रेता युग में हमने बड़ी लंबी उम्रें भोगी। ज्यादा सोने से कमर भी थक जाती है लेकिन उन्हें लानत है जो फिर भी इस पराए संसार में गोते खा रहे हैं, कभी परमात्मा की खोज नहीं की, भक्ति नहीं की, परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया, बड़ी लंबी–लंबी उम्रें रातों को सोकर गुज़ार दी। उनका क्या जीवन है, जिनकी नित्य दुनिया में पेशी है।''

हमारी भी यही हालत है कि मौत के बाद चलो धर्मराज के पास। धर्मराज हमारे कर्मों का कागज देखता है, जहाँ मुनासिब

होता है, वहाँ हमें जन्म दे देता है। अभी उस कलबूत में गए बाद में होते हैं कि मौत का फरिश्ता पहले ही आँखों के आगे आ जाता है। हमेशा दस नम्बरी की तरह हथकड़ी लगी रहती है। हम उस पराए संसार में बैठे हैं जहाँ कोई हमारा दोस्त नहीं।

फरीदा जे मैं होंदा वारया मित्ता आयड़या।।
हेड़ा जलै मजीठ ज्यों ऊपर अंगारा।।

फरीद साहब जंगल में जहाँ तप करते थे, वहाँ आमतौर पर एक जस्सा लुहार उनके पास आया करता था। जस्सा लुहार अपना पेट पालने के लिए लकड़ियाँ काटा करता था, वह काफी वृद्ध था। एक बार उसे लकड़ियाँ काटते हुए रात हो गई। उसने सोचा कि ज्यादा लकड़ियाँ काट लूँ और आज की रात फरीद के पास ही रह जाऊँगा। जस्सा लुहार रात को वहीं रूक गया उसने सोचा कि जब फरीद रोटी तैयार करेंगे, तो खा लेंगे।

हम दुनियादार ऐसा ही सोचते हैं कि जिस तरह मैं रोज फुल्का तैयार करता हूँ ये भी करेंगे लेकिन फरीद को तो अपना अभ्यास प्यारा था। वह अपने अभ्यास में जुड़ गया। जस्सा लुहार खाने की इंतजार करता रहा कि अब फरीद आवाज़ देंगे कि प्यारेया, आकर खाना खा ले। आखिर बहुत रात हो गई, भूख ने तंग किया तो जस्सा लुहार ने रोटी माँग ली।

फरीद साहब हँसकर कहते हैं, ''देख भई जस्सेया प्यारेया, अगर मेरे पास खाना होता तो मैं तुझे जरूर देता। अगर मैं झूठ बोलूं तो मेरा तन आग में जल जाए। मैं सच कहता हूँ कि मैं यहाँ मालिक के आसरे बैठा हूँ, अगर मैंने खाना खाकर सोना होता तो मैं घर में ही रह सकता था।''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि एक बार उन्होंने काफी लंबी यात्रा की, उनके साथ एक प्रेमी भी था। आमतौर पर महाराज सावन सिंह जी घर से खाना लेकर सफर करते रहे हैं। महाराज सावन और परमपिता कृपाल होटलों में जाने के शौकीन नहीं थे। वे सारे दिन का सफर कर आए, साथ वाले प्रेमी ने सोचा कि महाराज जी कहेंगे कि खाना खा लो लेकिन उन्होंने सोचा कि यह प्रेमी कहेगा तो खाना खा लेंगे। शाम को जब वापिस आए तब महाराज सावन ने कहा, ''सन्तों को अंदर कोई और ताकत तृप्त करती है लेकिन जब वे शरीर में आते हैं उन्हें तभी भूख लगती है।''

फरीदा लोड़ै दाख बिजौरीआ किक्कर बीजै जट।।
हंढै उंन कताएंदा पैधा लोड़ै पट।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जमींदार बबूल के बीज बीजता है और बिजौर देश की दाखे ढूंढता है, कश्मीर के सेब लोचता है। भेड़ो की ऊन कातता है लेकिन चाहता है कि पट्ट मुलायम हो, यह कैसे हो सकता है?'' महात्मा कहते हैंः

तारा मीरा साग बीजके स्वाद भालदा खीरां दे
जी लोचदा अम्ब खांण नूं बीजे बीज करीरां दे

आप कहते हैं कि भ्रावा, तू जो बोएगा, उसका फल तुझे ही खाना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

खेत शरीर जो बीजया सो अन्त खलोया आए

तुझे अपने ही कर्मों की खेती को काटना है। हम दुनिया में देखते हैं कि जो मिर्च बीजता है, वह मिर्च ही काटता है। जो ईख बीजता है, वह मिर्च नहीं काटेगा, ईख ही काटेगा।

मेरे पास बहुत से प्रेमी आकर कहते हैं कि पर्दा खोलें। मैं उन्हें यही सलाह देता हूँ कि आप अभ्यास करें। वे कहते हैं कि अभ्यास नहीं होता। क्या कभी किसी सोए हुए का पर्दा खुला है? अगर कोई जमींदार खेती न करे तो वह कैसे कामयाब हो सकता है? अगर कोई व्यापारी कहे कि मैं बाहर जाकर माल न लाऊँ, उसका मूल्य न चुकाऊँ तो उसका व्यापार कैसे चलेगा?

यह तो परमात्मा की दया है कि उसने हमें 'नाम' दिया है, हमें उसकी कोई कीमत नहीं चुकानी। आप सुबह उठकर अभ्यास करें। कुछ शिष्यों ने गुरु अमरदेव जी के पास जाकर विनती की कि महाराज जी, हमारे ऊपर दया करें। गुरु अमरदेव जी ने उन शिष्यों से कहा, ''आप सबसे पहले अमृतवेला बनाएं।''

फरीदा गलीए चिक्कड़ दूर घर नाल प्यारे नेंह।।
चलां त भिजै कंबली रहां त तुट्टै नेंह।।

फरीद साहब के अंदर तलब लगी हुई है कि कब पर्दा खुले मैं कब परमात्मा से मिलूं। गली में कीचड़ है लेकिन प्यारे के साथ स्नेह लगा हुआ है कि उससे जरूर मिलूं। गली में कीचड़–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, जो बुद्धि को गंदा कर रहे हैं, कंबली पापों से भारी हो गई है अगर मैं रहता हूँ तो मेरा स्नेह टूट जाएगा अगर जाता हूँ तो कंबली पापों से बहुत ही भारी हो गई है।

फिर आप कहते हैं कि मेरी कंबली पर चाहे कितना भी पापों का कीचड़ लगा हुआ है आखिर मैं जिसकी याद में बैठा हूँ, वह खुद ही इसे साफ करेगा। जिस प्यारे सतगुरु ने मुझे नाम दिया है, मैं उससे जरूर मिलूंगा। सिख इतिहास में जिक्र आता हैः

सीधा जाण तो शेर जे रूक जावे, कौन आखदा मर्द दलेर ओहनूं
तिल घांणी दी पीड़ तो डरे जे कर, कौन पुछदा विच बाजार ओहनूं

कंघी न हड्ड चिराए विच आरी, कौन सिर उते असवार करे ओहनूं
सिख हो के धर्म नूं लीक लावे, मुँह लावे न गुरु करतार ओहनूं

अगर शेर गोली की आवाज़ सुनकर दूसरी तरफ भागे तो उसे शेर नहीं कहते। शेर का धर्म है कि जहाँ से आवाज़ आती है वह सबसे पहले वहाँ पहुँचे। अगर तिल कोल्हू की तकलीफ से डरता है तो उसकी क्या कीमत है? अगर कंघी आरे से अपनी हड्डियां न चिरवा ले तो कौन उसे सिर पर सवार करता है? अगर सिख होकर धर्म को लीक लगाता है तो गुरु उसे मुँह नहीं लगाता। अपना आप कुर्बान करके ही हम उस प्यारे को पा सकते हैं।

भिजौ सिजौ कंबली अल्लाह् वरसौ मेह।।
जाय मिलां तिनां सजणा तुटौ नाहीं नेंह।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मुझे कंबली का फिक्र नहीं, बेशक यह कितनी भी भीगी हुई है। मुझे पता है कि नाम मेरे सारे पापों को काट देगा और मेरा अंतिश कर्म साफ कर देगा।''

फरीदा मैं भोलावा पग दा मत मैली होय जाय।।
गहिला रूह न जाणई सिर भी मिट्टी खाय।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हम अपने सफेद कपड़ों का और अच्छा धन होने का अहंकार करते हैं, सेवा से दूर रहते हैं कि हमारे कपड़े खराब हो जाएंगे। मेरे दिल को यह भुलावा ही था, मेरे काफिर मन को यह पता नहीं था कि तेरा जिस्म मिट्टी में मिट्टी बन जाएगा। इस शरीर से जितनी भी सेवा या सिमरन का काम लिया जाए, अहंकार दूर किया जाए तभी पता लगता है कि हमें इस शरीर से फायदा उठाना चाहिए था।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब गरीब–अमीर एक ही चटाई पर बैठकर खाना खाते हैं तो छोटों को उत्साह

मिलता है और बड़ों को विनम्र होने का मौका मिलता है। जब हम सब मिलकर सेवा करते हैं तो हमारे अंदर उत्साह पैदा होता है। जिस गुरु ने हमें नाम के साथ जोड़ा है वह खुश होता है कि मेरे बच्चे अहंकार से पीछा छुड़वाकर, साध–संगत की सेवा में लगे हुए हैं।''

फरीदा सक्कर खंड निवात गुड़ माख्यों मांझा दुध।।
सभे वसतू मिट्ठीआं रब न पुजन तुध।।

फरीद साहब ने सारी ज़िंदगी तप–अभ्यास किया। आप हम स्वादुओं से कहते हैं, ''शक्कर, खंड, शहद सब कुछ ही मीठा है अगर आप नाम के साथ जुड़ जाएं, नाम को प्रकट कर लें तो उस जैसा स्वाद और कहीं नहीं। जो ताकत उस अमृत नाम में है वह और किसी में भी नहीं।''

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावण मेरी भुख।।
जिनां खाधी चोपड़ी घणे सहनगे दुख।।

फरीद साहब जंगल में रहते थे, जब भूख ज्यादा तंग करती तो रोटी माँगकर लाते थे? पहले–पहले आदमी को भूख बहुत तंग करती है। किसी औरत ने फरीद साहब को ताना मारा कि फकीर होकर माँगता फिरता है, तुझे शर्म नहीं आती? फरीद साहब ने उसके आगे अपनी व्यथा सुनाई, ''मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच डाकुओं से बचा हुआ हूँ लेकिन मैं भूख को घटा नहीं सका।'' उस औरत ने कहा, ''फकीरा, मैं गृहस्थी हूँ, तू त्यागी है लेकिन मैं तुझे एक सुझाव देती हूँ कि तू माँगने वाले इस प्याले को हर रोज़ घिस लिया कर।'' जैसे–जैसे फरीद साहब उस प्याले को घिसते गए, उनकी भूख कम होती गई आखिर उन्होंने अपनी भूख पर काबू पा लिया।

फरीद साहब ने अपने पास एक लकड़ी की रोटी रख ली। जब भूख लगती तो उसे दाँतों से काट लेते। किसी अमीर आदमी ने फरीद साहब को खाना खाने के लिए बुलाया। फरीद साहब ने उससे कहा, ''भ्रावा, अब मेरी खुराक लकड़ी की रोटी है और भूख इसका स्वाद है। जिन लोगों ने चिकनी–चुपड़ी रोटी खाई है भजन–अभ्यास नहीं किया, आखिरी वक्त उन्हें कष्ट होगा।'' मालिक के प्यारे सदा परमात्मा का शुक्र करते हैं।

रूक्खी सुक्खी खाय कै ठंडा पाणी पीओ।।
फरीदा देख पराई चोपड़ी ना तरसाए जीओ।।

फरीद साहब कहते हैं, ''प्यारेया, तेरे भाग्य में जितना धन–पदार्थ लिखा है, तुझे उतना ही मिलना है। तू लोगों के महल और कपड़ों की तरफ न देख। अपने दिल को न तरसा, उस मालिक का भजन कर, मालिक का भाणा मान।''

अज्ज न सुत्ती कंत स्यों अंग मुड़े मुड़ जाय।।
जाय पुच्छो डोहागणी तुम क्यों रैण विहाय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''आज मैंने परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया मेरे अंग टूट–टूटकर जाते हैं। मैं उन दुहागन रूहों से पूछती हूँ कि उनकी जिंदगी की रात कैसे बीतती है जो सदा ही उस मालिक से बिछुड़े हुए हैं?''

पहले–पहले मन को इस तरफ लगाना बहुत मुश्किल है क्योंकि कोई स्वाद नहीं होता, कोई दिलचस्पी नहीं होती लेकिन जब मन इस तरफ लग जाता है तो इसे छोड़ना भी मुश्किल है। जब बच्चा पैदा होता है तो बच्चे को पता नहीं होता कि माता के स्तन में मेरी खुराक रखी है। शुरु में बच्चा अपनी माता का स्तन नहीं पकड़ता

अगर पकड़ता है तो उसे दबाता नहीं मुँह दूसरी तरफ कर लेता है। माता स्तन को बच्चे के मुँह के आगे करती है। पशु है तो हम लोग उसका मुँह पकड़कर जानवर के नीचे करते हैं। एक बार उसे स्वाद मिल जाता है तो पशु को रस्सी से बाँधना पड़ता है। जानवर के बच्चे को जरा भी खुलने का मौका मिले तो वह सारा दूध पी जाता है, घर के मालिक देखते रह जाते हैं, यही हालत बच्चे की है।

यही हालत अभ्यासी की है शुरु–शुरु में इस तरफ लगना मुश्किल है लेकिन जिन्हें रस आ गया फिर उनके लिए छोड़ना भी मुश्किल है। हम कह देते हैं कि नींद आ जाती है, अफसोस, ये उनकी हालत है जो अब तक अंदर नहीं गए। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपने अभ्यास की हालत बताते हैंः

वद सुख रैनड़िऐ पिर प्रेम लगा, घट दुख निंदड़िऐ पिर स्यों सदा पगा

रात तू बड़ी हो जा, दिन चढ़ेगा लोगों से मेल–मिलाप होगा, दुनिया के कारोबार थका देंगे। नींद से कहते हैं तू दुःखों को आवाज लगाती है, तू घट जा। अभ्यासी तो कहते हैं कि रात छह महीने की हो जाए, हमारा प्यारे के साथ प्यार लगा हुआ है। गुरु नानकदेव जी अपने अभ्यास के बारे में बहुत प्यार से बताते हैंः

इक तिल प्यारा विसरे भक्त कनेही होय।

अगर भक्त एक सैकिंड भी परमात्मा को बिसार देता है तो उसके प्यार में दरार पड़ जाती है। मैं उन दुहागन आत्माओं से पूछती हूँ क्या तुमने कभी प्यारे के साथ मिलाप नहीं किया, तुम्हारी जिंदगी की रात कैसे गुजर रही है? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अमली जिए अमल खाए, त्यों हर जन जिए नाम ध्याए

जिस तरह अमली की जिंदगी अमल में होती है, उसी तरह अभ्यासी की जिंदगी अभ्यास में ही होती है।

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाहीं थाओं।।
पिर वातड़ी न पुछई धन सोहगण नाओं।।

आप प्यार से बताते हैं कि यह संसार आत्मा के लिए ससुराल है, आत्मा सच्चखंड की रहने वाली है, सच्चखंड इसका मायका है। आत्मा ने परमात्मा के घर सच्चखंड से बिछुड़कर यहाँ ससुराल में दिल लगा लिया, कभी परमात्मा की खोज नहीं की। जिस तरह हमारी लड़कियाँ शादी के बाद पिता के घर में एक रात भी रहने के लिए तैयार नहीं होती क्योंकि उन्हें ससुराल ही प्यारा लगता है।

आमतौर पर धर्म के ठेकेदार अपने आपको गुरुमुख कहलवाते हैं लेकिन इनका मिलाप कभी परमात्मा के साथ नहीं हुआ। इन्होंने जिंदगी में जिस महात्मा की आशा लगा रखी है, उसे सपने में भी नहीं देखा। ऐसे लोगों के लिए गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नन्ना नाहें भोग नित भोगे, ना ड्डिटठा न संभलया
गल्ली हों सुहागण भैंणे, कन्त न कबहूँ मैं मिलया

ऐसे लोग कहते हैं कि हमारे पास नाम है, हमारे पास रब है। कभी पति से मिलाप नहीं किया, कभी उससे पूछा नहीं कि तू मुझसे खुश है या नाराज़ है? हम खुद तो धोखे में हैं और दूसरे लोगों को भी धोखे में डाल देते हैं। अपना जीवन बर्बाद है, औरों का बर्बाद कर जाते हैं। ऐसी आत्माएं जिन्हें कोई गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला वे भी अपने आपको सुहागन कहलवाती हैं।

साहुरै पेईऐ कंत की कंत अगम अथाह।।
नानक सो सोहागणी जो भावै बेपरवाह।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जो आत्मा यहाँ ससुराल में आकर परमात्मा से जुड़ी हुई हैं, वही सुहागन है हम उसके चरण

चूमने के लिए तैयार हैं। जो आत्मा उस बेपरवाह कुलमालिक परमात्मा को पसंद आ जाती है, परमात्मा के घर में मंजूर हो जाती है परमात्मा उन्हें ही नाम देता है, उनमें ही नाम जपने का शौक पैदा करता है। परमात्मा खुद ही उन्हें नाम लेने के लिए प्रेरित करता है; मुक्ति नाम में है।

आप गुरु नानकदेव जी की बानी, कबीर साहब की बानी और महापुरुषों के धर्मग्रंथ पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं कि सब महात्मा यही कहते हैं, ''ऊँचें भाग्य हों तो हमें सतसंग मिलता है, उससे ऊँचे भाग्य हों तो हमें सतसंग समझ आता है कि महापुरुष क्या संदेश देकर गए हैं? उससे ऊँचे भाग्य हों तो हमारे दिल में नाम लेने का शौक पैदा होता है, यह तो भाग्य की चीज़ है।'' गुरु नानकदेव जी महाराज प्यार से कहते हैंः

पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटे, भेटया पुरुष रसिक बैरागी
मिटया अंधेर मिलत हर नानक जन्म जन्म की सोई जागी

जन्म–जन्मांतरों का यही अच्छा ईनाम है कि हमारा किसी साधु के साथ मिलाप हो जाए और हम उस मिलाप से फायदा उठा लें। नाम प्राप्त करते हैं तो जन्मों–जन्मों से सोई हुई हमारी आत्मा जाग जाती है। हम कहते हैं कि हम जाग रहे हैं, हम दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं लेकिन परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं।

सच्चखंड, प्रलय–महाप्रलय में भी बर्बाद नहीं होता, हमें उसकी चिन्ता नहीं लेकिन हमने जो नाशवान घर छोड़ जाने हैं, हमें उन घरों की चिन्ता लगी हुई है, अंदर उनका प्यार लगा हुआ है। हम इससे ज्यादा क्या गफलत की नींद में सोएंगे?

नाती धोती संबही सुत्ती आय नचिंद।।
फरीदा रही सो बेड़ी हिंड दी गई कथूरी गंध।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मालिक ने कृपा की, नाम दिया। जिस तरह हम झाड़ू से आँगन को साफ करते हैं, उसी तरह सिमरन हमारी आत्मा को साफ करता है। परमात्मा ने यह नहीं पूछा क्या तूने स्नान किया है या तेरा श्रृंगार अच्छा है? परमात्मा ने मेरा प्यार देखा, अंदर ही प्यार का ईनाम दिया और अपने साथ मिलाप करवा दिया। अब मैं उसके दर पर निश्चिंत होकर सो गई हूँ कि मैं अपने घर पहुँच गई हूँ।''

जिस तरह कस्तूरी के नज़दीक थोड़ी सी हींग रख दें तो कस्तूरी की सारी वाशना खत्म हो जाती है। इसी तरह जिनके अंदर हौमें–अहंकार है, उनकी बेड़ी यहीं मझधार में गोते खा रही है। अहंकार ही हमारे अंदर दीवार बनकर खड़ा हो जाता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

हौं विच आया हौं विच गया, हौं विच खटया हौं विच गया
हौ विच जम्या हौं विच मुआ, हौं विच स्वर्ग नर्क अवतार

यह हउमै में ही आता–जाता है और हउमै में ही जन्मता–मरता है। आप फिर कहते हैंः

हौमें बूझे तां दर सूझे, ज्ञान बिहोणा कत कत लूझे

अगर हम यह समझ लें कि हउमै क्या चीज़ है, यह कैसे पैदा होती है और इसकी क्या दवाई है?

हौमें दीर्घ रोग है, दारू भी इस माहे
कृपा करे जे आपणी, ते गुरु का शब्द कमाहे

बेशक हउमै ला–ईलाज मीठी तपेदिक है, यह इंसान को अंदर से ही खत्म कर देती है। इंसान को पता नहीं लगता कि मुझे अंदर क्या चीज़ खाए जा रही है? जिनके ऊपर परमात्मा दया करता

है उन्हें नाम भक्ति में लगा देता है। हम जैसे–जैसे शब्द–नाम की कमाई करते हैं वैसे–वैसे परमात्मा के नज़दीक हो जाते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। हम जब तक अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे नहीं उतार लेते, इसे त्रिकुटी से ऊपर दसवें द्वार में नहीं ले जाते, तब तक हम अहंकार से पीछा नहीं छुड़वा सकते।

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीत न जाय।।
फरीदा कितीं जोबन प्रीत बिन सुक गए कुमलाय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मैं जाते हुए यौवन से नहीं डरता। जवानी जा रही है, बुढ़ापा आ रहा है लेकिन मैं डरता हूँ कि गुरु परमात्मा से मेरा प्यार खत्म न हो जाए। गुरु के प्यार के बिना अनेकों ही यौवन इस संसार में आए और इस तरह मुरझा गए जैसे पानी के बिना खेती मुरझा जाती है।''

फरीदा चिंत खटोला वाण दुख बिरह विछावण लेफ।।
एह हमारा जीवणा तू साहिब सच्चे वेख।।

अब आप अपने शब्द–गुरु के आगे विनती करते हैं, ''मेरा बिछौना चिन्ता का है कि तेरे साथ प्यार बना रहे। अभ्यास में जो पापों के काँटे चुभते थे, वह चारपाई की रस्सी है, विरह बिछौना है। तू झाँककर तो देख, क्या हम दुनिया के प्यार में मस्त हैं या तेरे प्यार में मस्त हैं? हम तो तेरे दुखों को भी प्यार ही समझते हैं।''

जब गुरु गोबिंद सिंह जी आनन्दपुर का किला छोड़कर आए,उस समय विरोधियों ने आपके दो बच्चे दीवार के अंदर चिन दिए और दो बच्चे आपकी आँखों के आगे ही शहीद कर दिए। उस

समय आपके पैरों में पहनने के लिए जूते भी नहीं थे फिर भी आपने परमात्मा का धन्यवाद किया। तब आपने प्यार में यह शब्द बोलाः

मित्र प्यारे नूं हाल मरीदा दा कहना
तुध बिन रोग रजाईयां दे ओढण नाग निवासा दे सहना
सूल सुराही खंजर प्याला विंग कसाईयां दा सहना
यारड़े दा सानूं सत्थर चंगा ते भटखेड़यां दा रहना

आप उस वैराग्य में परमात्मा को संदेश दे रहे हैं कि हमें जमीन पर सोना बादशाही के तख्तों से अच्छा है। मालिक के प्यारे चाहे दुख आए चाहे सुख आए अपने प्यार में कोई कमी नहीं आने देते बल्कि अपने प्यार को और मजबूत करते हैं।

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतान।।
फरीदा जित तन बिरह न ऊपजै सो तन जाण मसान।।

अब फरीद साहब कहते हैं कि लोग प्यार की बातें तो करते हैं लेकिन प्यार को समझते नहीं, विरह को समझ नहीं रहे, बस विरह कह दिया तो बात खत्म हो गई। विरह के बिना कोई गुरु का दिया हुआ सिमरन नहीं कर सकता, सेवा नहीं कर सकता। सच पूछो तो विरह को लोग जैसा समझते हैं, विरह वैसी नहीं है। विरह तू चक्रवती सुल्तान है। जिस तन के अंदर विरह पैदा नहीं होती वह तन मुर्दे जैसा है।

कोई महात्मा अच्छा अभ्यासी सतसंगी था, गुरु उसके अंदर प्रकट हुआ तो वह खुश हो गया। गुरु ने उस महात्मा से कहा, ''क्या माँगता है, इस वक्त तू जो माँगेगा, मैं हाज़िर कर सकता हूँ। क्या दुनिया के सुख चाहिए, तुझे राजा बना दें?'' उस महात्मा ने कहा, ''अगर आप मुझ पर दयाल हुए हैं, तो आप मुझे **बिछोड़े का दर्द** दे दें ताकि मैं आपको याद करता रहूँ।''

काफ कद्र विछोड़े दी ओह जाणें, जेहड़ा बिछुड़े अपने यार कोलों
तंदरूस्त नूं सार की दुखड़े दी, दुख पुछिऐ किसे बीमार कोलों

महाराज सावन सिंह जी को अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के **बिछोड़े का दर्द** था। उनको मानने वाले बहुत लोग थे लेकिन यह एक सच्चाई है कि वे बैठे–बैठे रोने लग जाते थे और इतना रोते थे कि कई लोगों के चुप कराने से भी चुप नहीं होते थे। इसी तरह उनके प्यारे बच्चे कृपाल को उनके **बिछोड़े का दर्द** था। जब कभी वे बाहर गए, महाराज सावन सिंह जी की बात चली तो उनकी आँखों से अपने आप ही पानी निकल आता था।

आज भी आप देख सकते हैं जिनके दिल के अंदर **बिछोड़े का दर्द है**, प्यार है, वे अब भी लोगों को आँखों में पानी दिखाए बिना अंदर ही अंदर रोते हैं। सच्चाई तो यह है जब तक आँसू पोंछने वाला पास न हो, रोने का मजा नहीं आता। जब हम गुरु को अंदर प्रकट कर लें फिर ही रोने का मजा है। महात्मा कहते हैं कि ऐसी आँखों से निकला पानी शहीदों के खून के तुल्य है।

फरीद साहब कहते हैं, ''मेरा तन विरह से जल रहा है, इसकी एक ही मरहम है गुरु का बिछोड़ा, गुरु का प्यार और गुरु का मिलाप।'' आप हमें बाहर से ख्याल हटाकर अंदर जाने के लिए कहते हैं कि जंगलों–पहाड़ों या बाहर किसी धर्मस्थान में जाकर आपका मसला हल नहीं होगा। आपका मसला इस सच्चे हरि मंदिर के अंदर जाकर ही हल होगा। गुरु अमरदेव जी कहते हैंः

हरि मंदिर ऐहो शरीर है ज्ञान रतन प्रकट होय

सच्चा हरि मंदिर आपका शरीर है। परमात्मा से मिलने का ज्ञान अंदर जाकर ही होगा। हमें भी चाहिए कि महात्मा के कहे मुताबिक अपने जीवन को ढ़ालें, आत्मा को पवित्र करें ताकि उस मालिक से मिल सकें। ***

चार

परमार्थ

12 जनवरी 1987 - मुम्बई : DVD 82

यह फुलवाड़ी करण–कारण कुलमालिक सावन की है, वे हमेशा ज़ाती तजुर्बे बताया करते थे। सभी सन्तों की ज़िंदगी ज़ाती तजुर्बे से भरी होती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सन्तों से वही लोग फायदा उठा सकते हैं जो सन्तों की बात पर विश्वास करके उनके कहे अनुसार चलते हैं। बेशक बाहरी तौर पर हमें नुकसान ही नज़र आता है लेकिन इसके पीछे बहुत कुछ छिपा होता है।''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे, ''हर आदमी परमार्थ की बातें तो करता है लेकिन **परमार्थ** बातों का विषय नहीं, कमाई की वस्तु है।'' वे एक बूढ़ी औरत की मिसाल दिया करते थे कि उसकी लड़की बीमार हो गई। वह बूढ़ी हमेशा ही परमात्मा के आगे फरियाद करती कि मैंने संसार में बहुत कुछ देख लिया है, मौत मुझे आ जाए, यह लड़की ठीक हो जाए।

मालिक घट–घट में बैठा है, वह कभी देख भी लेता है कि जीव क्या करते हैं। एक दिन उनके घर में एक गाय आ गई, वह गाय इधर–उधर देखने लगी। वहाँ एक बड़ा बर्तन रखा था जो चूल्हे पर चढ़–चढ़कर नीचे से काला हो चुका था। गाय ने कुछ खाने के लिए उस बर्तन में मुँह डाला तो उसका मुँह बर्तन में फँस गया।

अब गाय का मुँह और सींग दिखाई नहीं दे रहे थे। गाय घबराकर इधर–उधर दौड़ने लगी। बूढ़ी औरत ने सोचा, मैं जिस फरिश्ते को रोज़ याद करती थी शायद वह आ गया है। बूढ़ी औरत ने घबराकर कहा, ''बीमार लड़की तो उस तरफ पड़ी है मैं तो बूढ़ी हूँ।'' हम जीव **परमार्थ** की बातें तो जरूर करते हैं लेकिन उस पर चलने के लिए नहीं सोचते इसलिए हम फेल हो जाते हैं।

सियालकोट में एक मुसलमान फकीर हमजा गौस रहा करता था, वह अच्छा जपी–तपी और रिद्धि–सिद्धि वाला था। वहाँ एक साहूकार भी रहता था जिसके पास बहुत धन–पदार्थ था लेकिन उसका कोई बच्चा नहीं था। हम लोग बच्चे के बिना घर को सूना समझते हैं। उस साहूकार ने हमजा गौस फकीर की अच्छी सेवा की। फकीर ने कहा, ''तुम्हारे घर चार लड़के होंगे लेकिन तुम उनमें से एक लड़का **परमार्थ** के लिए मुझे दे देना।''

हम लोग समझते हैं कि फकीरों के कहने से कुछ नहीं होता ये ऐसे ही बातें करते हैं। यह तो अपनी–अपनी श्रद्धा पर निर्भर करता है। कुछ समय बाद साहूकार के घर चार लड़के पैदा हुए, लड़के बड़े हो गए लेकिन साहूकार ने हमजा गौस फकीर को परमार्थ के लिए एक लड़का नहीं दिया।

आखिर उस फकीर ने साहूकार को बुलाकर कहा, ''तुमने जो वायदा किया था, उसे पूरा करो, एक लड़का मुझे दो।'' साहूकार काफी साल बात को टालता रहा, आखिर एक दिन कहने लगा, ''हम हिन्दू हैं, आप मुसलमान हैं अगर मैं आपको अपना लड़का दूँगा तो लोग मेरी निन्दा करेंगे।''

रिद्धि–सिद्धि वाले फकीर बहुत जल्दी बद्दुआ दे देते हैं। हमजा गौस फकीर ने साहूकार से कहा, ''यह सारा शहर झूठे आदमियों

का है, जब तक यह शहर बर्बाद नहीं हो जाएगा मैं तब तक अन्न–पानी नहीं खाऊँगा।''

जब गुरु नानकदेव जी संसार में आए उस समय रिद्धि–सिद्धि वाले बहुत फकीर हुआ करते थे। गुरु नानकदेव जी ने ऐसे फकीरों को सीधे रास्ते पर डाला। गुरु नानकदेव जी बाला और मर्दाना को लेकर सियालकोट गए। गुरु नानकदेव जी ने हमजा गौस से कहाः

दया बगैर, सिद्ध कुसाई

फकीरों के अंदर दया होनी चाहिए। इस शहर के लोगों ने तो पहले ही मरना कुबूल किया हुआ है, तू मरे हुओं को क्या मारेगा? हमजा गौस ने कहा, ''मुझे कैसे तसल्ली होगी?'' उसकी तसल्ली कराने के लिए गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना को दो सोने के सिक्के देकर कहा, ''तू शहर से सच और झूठ का सौदा खरीदकर ला।'' मर्दाना बहुत सी दुकानों पर गया लेकिन कोई उसे सच और झूठ का सौदा नहीं दे सका। आखिर वह घुमता–घुमता एक अच्छे व्यापारी मूला के पास चला गया। मूला ने सोने के सिक्के लेकर अपनी जेब में डाल लिए और एक कागज पर *मरना सच और जीना* झूठ लिखकर मर्दाना को दे दिया।

मर्दाना कागज़ लेकर गुरु नानकदेव जी के पास आया। नानकदेव जी ने वह कागज़ हमजा गौस को दिखाकर कहा, ''इस शहर के लोगों ने पहले ही मरना कुबूल किया हुआ है।'' गुरु नानकदेव जी ने सोचा कि मूला खत्री ने कलाम तो बहुत ऊँचा लिखकर दिया है, चलकर देखते हैं क्या वह खुद इस बात पर अमल करता है? गुरु नानकदेव जी ने मूला खत्री से कहा, ''प्यारेया, तूने जो कागज़ पर लिखकर दिया है अगर तू इन बातों पर अमल करता है तो हम तेरे चरण चूमने को तैयार हैं।'' मूला ने कहा, ''मैंने तो पैसों के लिए झूठ बोला था, अब आपके बनते हैं अगर आप हमें समझा सकें।''

मूला खत्री ने कुछ दिन गुरु नानकदेव जी की बहुत सेवा की। जब गुरु नानकदेव जी सियालकोट से चलने लगे तब उन्होंने मूला खत्री से कहा, ''हम तुझे अपना प्रतिनिधि बना देते हैं, जो नाम का अभिलाषी आए, तू उसे नाम दे देना, हम उसकी संभाल करेंगे।'' मूला खत्री ने कहा कि मैं आपके बिना नहीं रह सकता, आप मेरा दीन–ईमान बन गए हैं।

गुरु नानकदेव जी ने कहा कि तेरी पत्नी है, तेरे बच्चे हैं, तुझे घर में रहकर अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी चाहिए। मूला खत्री ने कहा कि मैंने सब अच्छी तरह से देख लिया है, मैं आपके बिना नहीं रह सकता। वह उनके साथ चल पड़ा।

जब एक मंजिल आगे गए तो गुरु नानकदेव जी ने मूला खत्री से कहा कि तेरी घरवाली के हाथ में नारियल है और वह आग में जलने के लिए तैयार है अगर तू जल्दी पहुँच सकता है तो पहुँच जा। जिसके साथ तेरी विरोधता थी, उसने ही यह बात तेरी घरवाली को सिखाई है। बस! इतने में ही मूला सतगुरु के प्यार को भूल गया और कहने लगा, ''मुझे जल्दी घर पहुँचाओ, मेरी घरवाली तो मेरा दीन–ईमान है।'' वह घर आकर अपनी घरवाली के पास बैठ गया।

कुछ देर बाद गुरु नानकदेव जी, बाला और मर्दाना को साथ लेकर मूला के पीछे गए। उन्होंने मकान के नीचे खड़े होकर आवाज दी, ''मूलेया! बाहर आ।'' उसकी पत्नी ने ऊपर से देखकर मूला से कहा कि वे तीनों फकीर तुझे लेने के लिए आ गए हैं। मूला ने कहा कि अब मैं क्या करूँ? वे मुझे ले जाएंगे। उसकी पत्नी ने कहा, ''मैं बाहर गुहारा बना रही हूँ, तू उसमें जाकर छिप जा, मैं कह दूंगी कि वह तो आपके साथ गया था, वापिस ही नहीं आया।

जब फिर गुरु नानकदेव जी ने आवाज़ लगाई तो मूला की पत्नी ने खिड़की से उसी तरह कह दिया। गाँव के लोग भी इकट्ठे हो गए। गाँव के लोगों ने कहा कि हमने थोड़ी देर पहले मूला को यहीं देखा था। उस समय गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द उचाराः

नाल कराड़या दोस्ती, कूड़ो कूड़ी पाए
मरा न जाणें मूलया, आया कित्थे लखाए

मूला! तू हमारे साथ ठग्गी मारता है, तुझे तो यह भी नहीं पता कि तूने कहाँ मरना है? वहाँ गुहारे में साँप निकला, उसने मूला को डस लिया। यह बात सारे गाँव में फैल गई कि मूला सन्तों से डरता हुआ गुहारे में छिपा, उसे साँप ने डस लिया और उसकी मौत हो गई फिर मूला खरगोश की योनि में आया।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज दक्षिण भारत में गए, वहाँ उन्होंने खरगोश का शिकार किया। जब उनका बाज खरगोश को खा रहा था उस समय गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज हँस रहे थे। आज उनकी याद में वहाँ गुरुद्वारा भी बना हुआ है। वहाँ एक वैष्णों ख्यालों का आदमी आया, उसे किसी ने बताया कि गुरु गोबिंद सिंह जी पूरे गुरु हैं उनसे नाम ले, तेरा फायदा होगा लेकिन उस आदमी के दिल में अभाव आया कि ये कैसे गुरु हैं? इनका बाज जिन्दा जानवर खा रहा है और ये हँस रहे हैं।

गुरु साहब ने उस प्रेमी से कहा कि तुझे इस राज़ का ज्ञान नहीं। यह खरगोश हमारे बड़े गुरुओं का सेवक था, इसे सहने की आदत थी इसलिए यह खरगोश की योनि में आया। ऐसी कहानियाँ इसलिए प्रचलित होती हैं क्योंकि सन्त–महात्मा आने वाले लोगों को बताने के लिए प्यार से लिख जाते हैं।

इसी तरह सावन सिंह जी महाराज एक दिन संगत को बड़े प्यार से समझा रहे थे कि गुरु गोबिंद सिंह जी का दीवान लगा

हुआ था। गुरु गोबिंद सिंह जी सेवक के बारे में बता रहे थे कि गुरु का सेवक कोई विरला ही होता है। आमतौर पर कोई औरत का सेवक होता है, कोई बच्चों का सेवक होता है, कोई धन–दौलत का सेवक होता है। इतने में एक सेवक ने उठकर कहा, ''महाराज जी, मैं तो आपका सेवक हूँ।'' गुरु महाराज जी ने उसे समझाया लेकिन वह नहीं माना। आखिर गुरु महाराज ने उससे कहा, ''हमारे लिए कपड़े का ऐसा थान लेकर आ जैसा सारे शहर में न मिले।''

वह सेवक ऐसा ही एक थान खरीदकर घर लाया, दिल में सोच रहा था कि मेरे पास बहुत धन है, मैं ऐसे बहुत से थान लेकर गुरु साहब के पास जा सकता हूँ। उसकी घरवाली ने कपड़े का वह थान देखकर पूछा, ''तू यह थान किसके लिए लाया है?'' सेवक ने कहा, ''मैं यह थान गुरु साहब के लिए खरीदकर लाया हूँ।'' उसकी घरवाली ने कहा कि यह थान तो मुझे पसंद है। सेवक ने उसे समझाया कि ऐसा और थान बाजार में नहीं है, मैं तुझे दूसरा थान ला दूँगा लेकिन उसकी घरवाली नहीं मानी।

उसकी घरवाली ने कहा, ''मुझे यह थान पसंद है, यह थान मुझे चाहिए। तू गुरु साहब से कह देना कि मुझे अभी ऐसा थान नहीं मिला, मैं खोज रहा हूँ।'' सेवक ने कहा कि मैं उन्हें यह कैसे कह सकता हूँ, वे तो अंतर्यामी हैं।

वह सेवक गुरु साहब के पास गया, गुरु साहब ने उससे पूछा, ''क्या तू हमारे लिए कपड़े का थान ले आया है?'' सेवक टाल–मटोल करने लगा कि मैं कोशिश कर रहा हूँ, अभी मुझे ऐसा थान नहीं मिला। पीछे–पीछे उसकी घरवाली बगल में कपड़े का थान लेकर वहाँ आ गई। उसने थान निकालकर गुरु महाराज के आगे रखकर कहा, ''महाराज जी, यह आपका नहीं मेरा सेवक है।''

श्रृंगी ऋषि जंगल में पैदा हुआ, सारी ज़िंदगी जंगल में ही रहा, कभी शहर में नहीं आया लेकिन जब मन से मुकाबला करना पड़ा, अंदर काम की लहर उठी तो उसने तेरह बच्चे पैदा किए।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हम सबके जीवन में ऐसी घटनाएं घटती हैं। हमारे पाठी जी भी अपने एक प्यारे वीर की बहुत तारीफ किया करते थे कि मुझमें तो बहुत कमियाँ हैं लेकिन वह बहुत हठी और मजबूत इरादे का है। उसे भक्ति करने का मौका नहीं मिला, वह भक्ति कर सकता है। हम पच्चीस–छब्बीस साल इकट्ठे रहे, मेरा उनसे बड़ा प्यार है। नामदान लेने से पहले भी कई बार घर छोड़कर जा चुका था, पाठी जी उसे वापिस लेकर आते थे। उस प्रेमी ने मुझे तेरह साल तक मजबूर किया कि मैं आपके पास रहना चाहता हूँ, आप ही मेरे सब कुछ हैं।

आखिर मेरे दिल में मेरे गुरुदेव ने सोचा कि इसे भक्ति में लगाया जाए। मैंने उससे कहा कि तू अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी पूरी कर ले, फिर सोचेंगे। मेरे गुरुदेव कृपाल ने उसकी चार लड़कियों और दो लड़कों की ज़िम्मेदारी उठाई, सब काम पूरे कर दिए। उसने फिर कहा कि मैं आपके पास रहना चाहता हूँ।

मैंने उसे फिर समझाया कि अपने घर में रहकर अपनी पत्नी और बच्चों से प्यार कर। वह कहने लगा, ''मैं तो आपके बिना रह ही नहीं सकता।'' एक दिन उसके बच्चे और उसकी पत्नी उसे मेरे पास छोड़ने आए कि अब यह भक्ति करे हमें बहुत खुशी होगी।

वह कुछ दिन यहाँ रहा, मालिक सबको तजुर्बा करवा देता है। उसकी पत्नी ने सोचा देखें तो सही यह कितने पानी में है? जब उसकी पत्नी ने प्रेम–प्यार वाली आँखें दिखाई तो वह उदास हो गया। जैसे श्रृंगी ऋषि और पारासुर ऋषि भी पिघल गए थे। पाठी

जी ने मुझसे कहा कि आप इसे छुट्टी दे दें, यह किसी और तरफ न चला जाए। मैंने एक आदमी को मोटर साईकिल देकर भेजा कि इसे इसके घर तक छोड़कर आना है। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर यह मन मश्करा, कहूँ तो माने रोश
जे पेंडे साहेब मिले, तब ही न चले कोश

यह मन हर एक के साथ मश्करी करता है। हम ऋषियों–मुनियों की कहानियाँ सुनते हैं लेकिन यह हमारे खुद के साथ भी बीत जाती है। वह घर तो चला गया लेकिन घर जाकर भी उसे अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि मन का एक हिस्सा यह भी कह रहा था कि तूने ठीक नहीं किया। वह घर में जाकर ऐसा मुँह बनाकर बैठ गया जैसे चोर चोरी करते पकड़ा जाता है क्योंकि उसे भागने के लिए कहीं जगह नहीं मिलती।

यह जीव खांड खाना चाहता है लेकिन नीम के पौधे को पानी दे रहा है। पाठी जी ने मेहरबानी की, उसे जाकर फिर ले आए, उसने मुझसे कहा, ''ये सब मेरे वश की बात नहीं मेरी औरत मुझसे बहुत प्यार करती है।'' मैंने कहा, ''मैं तीस साल से देख रहा हूँ कि तुम दोनों एक–दूसरे की शक्ल देखकर खुश नहीं अगर वह औरत तुझसे प्यार करती है तो बुरा किसे समझती है?''

मैंने उससे कहा, ''प्यारेया, अब अच्छी तरह सोच ले। मेरे गुरुदेव ने बारह–चौदह दिन बैठकर सोचा था कि क्या कारोबार करना चाहिए? आखिर उन्होंने यही फैसला किया कि भगवान पहले और दुनिया के काम बाद में।''

मैंने भी अपनी हिस्ट्री बताई कि मुझे घर छोड़ने में तीन साल लग गए थे। मैंने बहुत बारीकी के साथ सोचा कि घर छोड़कर क्या–क्या तकलीफें आएंगी? अगर हम भक्ति कर भी लेते हैं तब

भी मन पीछा नहीं छोड़ता। यह इन्द्रियों के जरिए अपने हथियार हमारे आस–पास डाल देता है। एक बार मैदान–ए–जंग में पैर रखकर पीछे हटना अच्छा नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

जे गृह करे तां धर्म कर, नहीं ता कर वैराग
वैरागी होय बंधन पड़े, ताके बड़ो अभाग

फरीद साहब की एक पठान के साथ दोस्ती थी। जब फरीद साहब तप–अभ्यास करने लगे तो उस पठान ने सोचा कि इनके साथ अपना खाना–दाना तो समाप्त हो गया है क्यों न इन्हें किसी और तरीके से भरमाया जाए। काल भी एक बहुत बड़ी शक्ति है, जब इससे मुकाबला करना पड़ता है तो यह हमें फेल कर देता है। काल ने पठान के अंदर बैठकर उसे सलाह दी कि आज फरीद साहब को खाने पर बुलाया जाए। पठान ने खाने के साथ अच्छे नाच–गाने का भी इंतजाम किया कि जब फरीद यह देखेगा तो उसका मन पिघल जाएगा लेकिन फरीद साहब तो अंदर से नाम के साथ जुड़ चुके थे। यह देखकर फरीद साहब ने कहाः

फरीदा ऐ विस गंदला, धरीआं खंड लिवाड़
इक राहेदे रह गए, इक राधी गए उजाड़

देख पठान, तू जो औरतें नचा रहा है ये सब विष से भरी हुई हैं, ये जहर की गंदले हैं, इनके ऊपर खांड चढ़ी हुई है। मेरा जो धर्म था मैंने तुझे बता दिया है। काल ने जीवों को फँसाने के लिए इंसानों के ऊपर पोचा फेरा हुआ है लेकिन इनके अंदर जहर भरा हुआ है। जो इन्हें खाएगा वह खत्म हो जाएगा। जब रामचन्द्र के गुरुदेव उन्हें शिक्षा देने लगे तो उन्होंने यही कहाः

थैला ऐह गंदगी दुर्गन्धी स्थान
बिष्टा ही इसमें भरा और न कुछ भी जान

चाहे औरत है चाहे मर्द है सबको एक जैसी इन्द्रियां लगी हुई हैं, इन इन्द्रियों में से एक जैसी ही वस्तुएं निकलती हैं। आँख, नाक और कान से मैल निकलता है इसी तरह नीचे की इन्द्रियां भी मैल से भरी हुई हैं तू इनसे बचकर रहना, इनमें फँस न जाना।

फरीदा ए विस गंदला धरीआं खंड लिवाड़।।
इक राहेदे रह गए इक राधी गए उजाड़।।
फरीदा चार गवाया हंढ कै चार गवाया संम।।
लेखा रब मंगेसीआ तू आंहो केह्रे कंम।।

फरीद साहब कहते हैं, ''देख प्यारेया, कोई सगाई करके छोड़ जाता है तो कोई शादी करके छोड़ जाता है। किसी की पत्नी चली जाती है तो किसी का पति चला जाता है। अफसोस से कहना पड़ता है कि तूने चार पहर दुनिया के धंधों में बिता दिए, चार पहर सोकर बिता दिए लेकिन जब परमात्मा साँस–साँस का लेखा लेगा तो उस समय क्या जवाब देगा, कभी परमात्मा को याद किया, कभी भजन–अभ्यास किया? तू दिन–रात बुराईयाँ करता है और बुराईयाँ ही सोचता है।''

फरीदा दर दरवाजै जाय कै क्यों डिठो घड़ीआल।।
एह निदोसां मारीऐ हम दोसां दा क्या हाल।।

आप एक दिन राजदरबार में गए, वहाँ आमतौर पर जगह–जगह घंटे रखे होते हैं। घंटा पीतल का हो या कांसे का उस पर हर आधे घंटे बाद मार पड़ती है, दोपहर के बाद तो काफी मार पड़ती है, इन्होंने क्या कसूर किया है? अगर इन निर्दोषों को इतनी मार पड़ रही है हम तो कसूरों से भरे हुए हैं, हमारा उस दरगाह में क्या

हाल होगा? इस घंटे की तरह, दोषों से भरे हुए जीवों का भी आगे चलकर यही हाल होता है, वहाँ यम इसे पीटते हैं।

घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहे सजाय।।
सो हेड़ा घड़ीआल ज्यों दुखी रैण विहाय।।
बुड्ढा होआ सेख फरीद कंबण लग्गी देह।।
जे सौ वरयां जीवणा भी तन होसी खेह।।

एक काँपते हुए बुजुर्ग ने फरीद साहब से कहा, ''मैं बूढ़ा हो गया हूँ, कोई दवाई बताएं कि मैं जवान हो जाऊँ।'' उस समय सर्दी का मौसम नहीं था, वह बुजुर्ग बिना सर्दी के ही काँप रहा था। हम जानते हैं कि बूढ़े आदमी की देह काँपने लग जाती है, यह उसके वश की बात नहीं होती लेकिन मन फिर भी अंदर से कहता है कि मेरी उम्र लम्बी हो जाए, मुझे जवानी वापिस मिल जाए। हम जानते हैं कि एक बार जवानी हाथ से गई तो बुढ़ापा आ जाता है।

फरीद साहब उस बुजुर्ग से कहते हैं, ''देख प्यारेया, अब तेरा समय आ गया है, तेरी देह काँप रही है अगर तुझे सौ बरस की उम्र मिल जाए तो भी तेरा तन कब्र में जाकर मिट्टी में मिल जाना है।''

फरीदा बार पराइऐ बेसणा सांई मुझै न देह।।
जे तू एवैं रखसी जीउ सरीरों लेह।।

फरीद साहब अपने गुरु के आगे फरियाद करते हैं, ''हे गुरु परमात्मा, तू मुझे पराए दरवाजे पर न बिठा अगर तूने मुझे ऐसे ही जन्म–मरण में लगाए रखना है तो इससे बेहतर है कि तू मेरे तन में से इस जीव आत्मा को निकाल ले ताकि मेरा शरीर छूट जाए।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जो घर छड गवावणा सो लग्गा मन माहे
जित्थे जाए तुध वरतना तिसकी चिन्ता नाहे

महात्मा प्यार से कहते हैं, ''हमने एक दिन यहाँ से बिस्तर झाड़कर चले जाना है। हमारे दिल में यह घर समाया हुआ है लेकिन हमने जिस घर जाना है हमें उस घर की चिन्ता नहीं।''

कंध कुहाड़ा सिर घड़ा वण कै सर लोहार।।
फरीदा हौं लोड़ी सौह आपणा तू लोड़ह अंगयार।।

जस्सा लुहार फरीद साहब का दोस्त था, वह आमतौर पर फरीद साहब के तप स्थान से लकड़ियाँ काटकर लाता था। एक दिन उसने सिर पर पानी का मटका और कंधे पर लकड़ियाँ काटने वाला कुल्हाड़ा रखा हुआ था। फरीद साहब बैठकर तप करते–करते थक गए तो पेड़ के साथ खड़े होकर अभ्यास करने लगे ताकि नींद न आए। तप करते–करते उनका शरीर भी लकड़ी की तरह दुबला हो गया था

जस्सा लुहार को कम नज़र आता था। उसने फरीद साहब को पेड़ की लकड़ी समझकर कुल्हाड़े का दस्ता मारकर देखा कि लकड़ी ठीक है। ऐसा करने से फरीद साहब की समाधि खुल गई। फरीद साहब ने कहा, ''प्यारेया, तेरे सिर पर घड़ा और कंधे पर कुल्हाड़ा है, मैं परमात्मा से मिलने के लिए बंदगी कर रहा हूँ और तू मेरे कोयले करना चाहता है, तू मेरा कैसा दोस्त है?''

फरीदा इकना आटा अगला इकना नाहीं लोण।।
अग्गै गए सिञापसन चोटां खासी कौण।।

अब फरीद साहब जस्सा लुहार से कहते हैं, ''किसी के पास बहुत सारा आटा है और किसी के पास सब्जी में डालने के लिए

नमक भी नहीं है। कोई तो बहुत ज्यादा अभ्यास करके अपनी पूँजी जमा कर लेते हैं और कईयों के पास नमक जितना भी अभ्यास नहीं है, वे आगे जाकर क्या खाएंगे? आगे परमात्मा ने लेखा माँगना है वहाँ कौन मार खाएगा?'' हम जानते हैं कि जब पुलिस वाले चोर के साथ बुरा व्यवहार करते हैं तो वहाँ उसका कोई दर्दी नहीं होता। तू रोज़ मेरे पास आता है, तू जप–तप कर खुदा को क्या जवाब देगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बह लेखा कर समझाया

वहाँ जीव को लेखा करके समझाया जाता है कि यह तेरा ही किया हुआ है, अब तू इसे भोग।

पास दमामे छत सिर भेरी सडो रड।।
जाय सुत्ते जीराण मह थीए अतीमा गड।।

आप एक राजा की मौत को देखकर कहते हैं कि राजा मर गया, वह सब महल–माड़ियाँ उसी तरह छोड़ गया। उसे एक यतीम की तरह कब्र में रख दिया। ऐसा भी समय था जब राजा के दरवाजे पर भट्ट लोग ढोल और बाजे बजाते थे, अब कोई तूती नहीं बज रही कोई बाजा नहीं बज रहा, महल सूना हो गया है।

मैं पंजाब में देखता रहा हूँ कि राजाओं के दरवाजे पर शाम को दो–तीन घंटे भट्ट लोग बाजे बजाकर राजाओं का मनोरंजन करते और राजाओं से अच्छी तनख्वाह लेते थे।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआं उसारेदे भी गए।।
कूड़ा सौदा कर गए गोरीं आय पए।।

फरीद साहब बड़े प्यार से कहते हैं, ''आज उन ऊँची–ऊँची महल–माड़ियों को बनाने वाले नहीं रहे। जो इनमें बस रहे हैं, आज

इन्हे अपना–अपना कह रहे हैं वे भी नहीं रहेंगे। इनका अहंकार करना झूठा सौदा है, सबने चार दिन भोग–भोगकर चले जाना है।''

सन्त हमें परमात्मा से जोड़ने के लिए आते हैं, दुनिया की जायदादों के साथ जोड़ने के लिए नहीं आते। जब इस शरीर ने ही साथ नहीं जाना तो क्या हम धन–दौलत साथ ले जाएंगे? महाराज जी कहा करते थे, ''यह शरीर भी पराया है किराए का मकान है।''

महात्मा समझाते हैं कि इन चीजों का कोई खसम–खसाई नहीं होता। हमारे बड़े–बुजुर्ग इनकी उल्टियाँ करके छोड़ गए हैं, हम इन्हें चाटने में लगे हुए हैं। इन महल–माड़ियों और धन–दौलत ने हमारे बुजुर्गों का साथ नहीं दिया तो हम क्या उम्मीद लगाए बैठे है?

फरीदा खिंथड़ मेखां अगलीआं जिंद न काई मेख।।
वारी आपो आपणी चले मसायक सेख।।

एक फकीर जंगल में अपनी गुदड़ी सिल रहा था, उसका विचार था कि फटे–पुराने कपड़े पहनने से परमात्मा मिल जाता है। फरीद साहब उस फकीर से कहते हैं, ''देख प्यारेया, तू गुदड़ी को टाँके लगा रहा है, क्या कभी इस जिंद को भी कोई मेख लगाई है, इस देह में बैठकर कभी भजन–सिमरन किया है? यहाँ पर न कोई रिद्धि–सिद्धि वाला रहता है न कोई कलाबाजी करने वाला रहता है, सबने इस संसार से चले जाना है।''

फरीदा दोंह् दीवीं बलंदयां मलक बहिठा आय।।
गढ़ लीता घट लुट्टया दीवड़े गया बुझाय।।

उस गुदड़ी वाले अखोती फकीर ने सवाल किया, ''क्या यह सच है कि काल देखते–देखते ही ले जाएगा या वह चोरी से आकर मारता है?'' फरीद साहब ने कहा, ''प्यारेया, उस समय चन्द्रमा

और सूरज के दोनों दीपक जलते होंगे, तेरी दोनों आँखों के सामने मौत का फरिश्ता आ जाएगा, इस शरीर पर कब्जा कर लेगा और दोनों आँखों को बुझा जाएगा, फिर ये आँखें संसार को नहीं देख सकेंगी, वह छिपता नहीं क्योंकि उसे किसी का डर नहीं।''

फरीदा वेख कपाहै जे थीआ जे सिर थीआ तिलाह।।
कमादै अर कागदै कुंने कोयलिआह।।

महात्माओं की आँखें खुली होती हैं। उन्हें अनेक जन्मों का ज्ञान होता है कि हम किस जन्म में क्या थे? हम कैसे पशु–पक्षियों के जामें में आए, हमने कितनी पत्नियाँ और कितने पति बनाए। उस फकीर ने आपसे फिर सवाल किया, ''क्या परमात्मा के दरबार में कष्ट होता है?''

आप उस फकीर से कहते हैं, ''तू आँखों से इस संसार को देख रहा है कि ईख भी जानदार है, उसकी हालत देख! जमींदार पहले उसे काटता है फिर उसे छीलता है और उसके बाद बेलन में डालता है, ईख को कितना कष्ट होता है, वह कैसे उबाले खाता है। मीठा बनने के लिए उसे कितना कष्ट सहना पड़ता है। ईख के फोक को भी आग में जलाया जाता है हो सकता है वह भी किसी समय अच्छा इंसान हो।''

इसी तरह कपड़ा बनने के लिए रूई को कितनी भूख–प्यास व गर्मी सहनी पड़ती है फिर उसे कातने के लिए मशीनों में डाला जाता है। पिंजाई मशीन की चोटें खाता है आखिर दर्जी के पास जाकर कटाई सहता है, हो सकता है वह भी कभी अच्छी आत्मा हो।

घड़े की हालत देखें! घड़ा बनने के लिए उसे कितनी तकलीफें सहनी पड़ती हैं। पहले कुम्हार मिट्टी गूँथता है, उसे चक्क पर चढ़ाता है, रस्सी से काटता है फिर आग का सेक देकर पकाता

है। सब चीज़ें जानदार हैं, सबको ज्ञान है लेकिन हम सोचते हैं कि ये चीज़ें ऐसे ही बनी हुई हैं। हम जब अंदर जाते हैं तो हमें ज्ञान होता है कि जिन्होंने परमात्मा की भक्ति नहीं की, इंसानी जामें की कीमत नहीं समझी उनकी यह हालत हुई।

जब मैं बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन सिंह जी के पास लेकर गया तब उनके साथ फत्ती फकीर भी था। फत्ती फकीर भी उसी गाँव था जहाँ बाबा बिशनदास जी रहते थे। फत्ती फकीर अंदर जाता था। जब महाराज सावन सिंह जी से बात हुई तो फत्ती फकीर ने कहा, ''आपका एक जामा राजा फरीद कोट का भी हुआ है।'' महाराज सावन सिंह जी ने हँसकर कहा, ''मैंने कई जामों में कड़ाके की गरीबी भी देखी है अगर आज मैं उन महलों पर दावा करूँ तो क्या वे मुझे उन महलों में घुसने देंगे?'' महात्माओं को बहुत तजुर्बा होता है, वे अपने आपको छिपाकर रखते हैं।

मंदे अमल करेंदया ऐह सजाय तिनाह।।

आप कहते हैं, ''कोयले की क्या हालत होती है? पहले कोयले को जलाया जाता है फिर उस पर पानी डालकर बुझाया जाता है, इस तरह कोयले को कितना कष्ट सहना पड़ता है। जिस तरह हाथ जल जाए और उसके ऊपर पानी डालें तो कितना कष्ट होता है? इस संसार में जो जीव भजन-सिमरन नहीं करते, ऐब-पाप करते हैं, वे जीव ऐसे जामों में आकर ऐसी सजाएं भुगतते हैं।''

फरीदा कंन मुसल्ला सूफ गल दिल काती गुड़ वात।।
बाहर दिसै चानणा दिल अंधिआरी रात।।

एक पाखंडी साधु ज्ञान-ध्यान की बातें करता था। फरीद साहब ने उससे कहा कि तूने अभ्यास करने वाला कपड़ा कंधे पर

रखा हुआ है और लोगों को काटने के लिए दिल में कैंची है। मुँह से मीठी–मीठी बातें करता है, तुझे बाहर लाईट नज़र आ रही है लेकिन तेरे दिल में अंधेरा है।

दो आदमी झूठ बोलने में बहुत माहिर थे, उन्होंने आपस में सलाह की कि हम दुनिया को बुद्धू बनाएंगे। एक–दूसरे की झूठी बात को सच बना दिया करेंगे, तू मेरा गवाह और मैं तेरा गवाह। उन दोनों ने राजा के पास जाकर कहा कि हम बहुत बड़े महात्मा हैं, हमें त्रिलोकी तक दिखाई देता है, पहले हम शिकार खेला करते थे।

राजा ने उनसे कहा कि कोई करतब करके दिखाओ कि आपने शिकार में क्या मारा? उनमें से एक ने कहा, ''मेरा साथी शिकार में बहुत माहिर है, इसने एक दिन हिरन को तीर मारा। एक ही तीर से हिरन का पैर, कान और सींग तीनों में छेद कर दिए।'' राजा ने कहा, ''यह तो बिल्कुल सफेद झूठ है, पैर कहाँ, कान कहाँ और सींग कहाँ?'' उसने कहा, ''यह बहुत बड़ा निशानेबाज है। जब इसने तीर मारा, उस समय हिरन अपने पैर से कान पर खारिश कर रहा था। पैर, कान और सींग तीनों एक ही जगह पर थे। बेशक यह झूठ था लेकिन उन्होंने इसे सच बना दिया।''

फिर राजा ने दूसरे आदमी से पूछा तो उसने कहा, ''एक दिन पेड़ पर कबूतर बैठा था, मैंने कबूतर को गुलेल मारी तो वह कबूतर भुनकर नीचे गिर पड़ा।'' राजा ने कहा, ''ऐसा कैसे हो सकता है कि गुलेल मारने से कबूतर का कबाब बन गया उसे आग पर चढ़ाना ही नहीं पड़ा।'' पहले वाले आदमी ने कहा, ''महाराज, कबूतर ने पत्थर खाए हुए थे, जब उसे गुलेल लगी तब पत्थरों की रगड़ से आग पैदा हो गई और कबूतर भुनकर नीचे आ गया।'' यह भी सफेद झूठ था लेकिन उन्होंने झूठ को भी सच बना दिया।

ऐसे लोग मिलकर पार्टी बना लेते हैं उनके साथ हलवा–पूरी खाने वाले भी होते हैं; वे ऐसे ही झूठ को सच बना देते हैं कि इस महात्मा को बहुत कुछ दिखता है अगर ये आँखें बंद करे तो इन्हें त्रिलोकी तक दिखाई देता है, ये बहुत परमार्थी है।

गुरु नानकदेव जी कुरुक्षेत्र गए, वहाँ एक आदमी कभी आँखें खोलता तो कभी आँखें बंद करता था। उसने अपने आगे माया का लोटा रखा हुआ था। उन्होंने बाला, मर्दाना से कहा कि यह बिल्कुल पाखंडी है। यह आँखें इसलिए बंद कर लेता है कि लोग समझें कि बाबा समाधि लगाकर बैठा है। लोग उसकी बहुत तारीफ करते कि इसे त्रिलोकी तक दिखाई देता है।

गुरु नानकदेव जी ने बाला से कहा कि तू इसका लोटा उठाकर इसके पीछे रख दे और खुद उसके आगे हाथ जोड़कर बैठ गए। जब उसने आँखें खोली तो लोटा गायब पाया, उसके गुस्से की कोई हद न रही। वह गुरु नानकदेव जी के गले पड़ गया कि आपने मेरा पैसों वाला लोटा उठाया है। गुरु नानकदेव जी ने हँसकर कहा

काल नाहीं जोग नाहीं, नाहीं सत के ढब
मगर पीछे कछु न दिसे, सुई ते तिन लोए

तू लोगों को ठगने के लिए कहता है कि तुझे त्रिलोकी तक दिखाई देता है। क्या तुझे अपने योग से पीछे पड़ा हुआ लोटा दिखाई नहीं दे रहा? वह शर्मिन्दा हुआ।

परमात्मा कृपाल कहा करते थे, ''बेशक परमात्मा ऊँचा है सच भी ऊँचा है लेकिन सच्चा आचरण रखना इससे भी ऊँचा है।'' फरीद साहब कहते हैं, ''हम सच्चे–सुच्चे बनें, शब्द–नाम की कमाई करें ताकि परमात्मा हमारी सच्चाई को देखकर हमारे लिए अपना दरवाजा खोल दे।'' ***

पांच

परमात्मा की भक्ति

13 जनवरी 1987 - मुम्बई : DVD 83

हाँ भाई, हर रोज की तरह आपके आगे सूफी सन्त शेख फरीद की बानी रखी जा रही है। सूफी का मतलब साफ दिल, जहाँ नाम ही नाम हो और दिल के अंदर किसी के लिए भी नफरत न हो क्योंकि सबके अंदर परमात्मा बैठा है। फरीद साहब भजन–अभ्यास में ही रहे, पहले आपके पास 'शब्द–नाम' का रास्ता नहीं था, आप काफी समय जंगलों में भटकते रहे।

फरीद साहब की जिंदगी काफी तजुर्बे से गुजरी। एक दिन आप जंगल में से आ रहे थे, आपको काफी भूख लगी हुई थी। भूख मौत से भी बुरी है। सुबह खाते हैं शाम को पेट फिर खाना माँगता है, शाम को खाते हैं सुबह फिर भूख लग जाती है। आप कहते हैं:

फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खाके तड़के फेर खड़ी

रास्ते में एक आदमी खरबूजे खाकर चला जा रहा था। फरीद साहब ने खरबूजे के छिलके उठाकर खा लिए क्योंकि आपको बहुत भूख लगी हुई थी। थोड़ी देर बाद वही आदमी आया, उस आदमी ने फरीद साहब से पूछा, ''मेरा चाकू गिर गया है क्या तूने उठाया है?'' फरीद साहब ने उससे कहा, ''मैंने खरबूजे के छिलके तो जरुर खाए हैं लेकिन मैंने तेरा चाकू न देखा है, न उठाया है।''

जब किसी ने अहंकार दिखाना हो, जबरदस्ती करनी हो तो उसके आगे चाहे जितनी मर्जी सफाई दें वह बात ही नहीं सुनता। उस आदमी ने फरीद साहब को मारा–पीटा लेकिन फरीद साहब हँसते रहे। उस आदमी ने फरीद साहब से कहा, ''मैं तुझे मार रहा हूँ, तू हँस क्यों रहा है?'' फरीद साहब ने कहाः

जिन्निआं खुशीया मांणियां तेते लग्गे रोग
छिल्ला कारण मारीए फल खाए क्या होग

फरीद साहब ने कहा, ''मैं इसलिए हँस रहा हूँ कि मैंने तो छिलके ही खाए हैं, मुझे मार पड़ रही है। पता नहीं फल खाने से कितनी मार पड़ेगी?'' फरीद साहब अपनी बानी में जिक्र करते हैं कि बंदा इतना तप–अभ्यास करे कि उसके तन में रक्त न रहे अगर उसे चीरा जाए तो पानी ही निकले।

कुछ सिखों ने गुरु अमरदेव जी के आगे इस सवाल को रखा कि फरीद साहब की बानी में लिखा है कि इंसान इतना तप करे कि चीरने से भी उसमें से खून न निकले पानी ही निकले क्या यह बात ठीक है या इसमें कोई कमी पेशी है? गुरु अमरदेव जी महाराज ने उन सिखों को बहुत प्यार से समझाया कि खून के बगैर तन नहीं हो सकता। जो **परमात्मा की भक्ति**, तप करते हैं उनके अंदर लोभ का रक्त नहीं रहता क्योंकि उन्हें परमात्मा का, मौत का डर लगा रहता है कि हमें भी हिसाब–किताब देना पड़ेगा इसलिए उनके अंदर से लोभ का रक्त खत्म हो जाता है। जिस तरह सोना आग का ताप सहकर शुद्ध हो जाता है।

गुरु अमरदेव जी ने एक बहुत अच्छी साखी सुनाई कि एक ऋषि कुमूत जंगल में तप कर रहा था। जब वह अपने अभ्यास से उठा तो उसके पैर में काँटा चुभ गया। उसने काँटा निकाला लेकिन

खून नहीं निकला क्योंकि वह सारी जिंदगी तप–अभ्यास करता रहा। इस खुशी में वह नृत्य करने लगा, उसको खुश देखकर पशु–पक्षी भी उसके साथ नृत्य करने लगे। देवताओं ने शिव के आगे विनती की, ''देखो जी, यह क्या हो रहा है? आपने भी जिंदगी में बहुत तप–अभ्यास किए हैं आप इसे समझाएं।''

शिवजी ने ऋषि से कहा कि तू इस तरह क्यों कर रहा है? ऋषि ने कहा कि मैं तप में सबसे आगे हूँ, मैं शिरोमणि हूँ। मेरे तन से खून नहीं पानी निकला है। शिवजी ने उसका अहंकार दूर करने के लिए अपने शरीर का कुछ हिस्सा चीरकर दिखाया और कहाः

अहंकारया सो मारया

तप–अभ्यास का मतलब अपने अंदर नम्रता और आज़ज़ी पैदा करना है। फरीद साहब की बानी गौर से सुनेंः

फरीदा रत्ती रत न निकलै जे तन चीरै कोय।
जो तन रत्ते रब स्यों तिन तन रत न होय।
एह तन सभो रत है रत बिन तन न होय।
जो सह रत्ते आपणे तित तन लोभ रत न होय।
भै पइऐ तन खीण होय लोभ रत विच्चों जाय।
ज्यों बैसंतर धात सुध होय त्यों हर का भौ दुरमत मैल गवाय।
नानक ते जन सोहणे जे रत्ते हर रंग लाय।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''रक्त के बिना तन नहीं हो सकता। जो अंदर प्रभु के साथ, शब्द के साथ जुड़ जाते हैं, उनके अंदर लोभ खत्म हो जाता है। वे इस तरह साफ हो जाते हैं जिस तरह सोने को अग्नि का सेक शुद्ध कर देता है। वे परमात्मा के दरबार में सुंदर लगते हैं, परमात्मा के दरबार में उनकी शोभा होती है।''

फरीदा सोई सरवर ढूंढ लहो जित्थों लब्भी वत्थ।।
छप्पड़ ढूंढै क्या होवै चिक्कड़ डुबै हत्थ।।

फरीद साहब कहते हैं, ''आप ऐसी संगत–सोहबत में जाएं जहाँ आपकी जिंदगी बने, आपका भूला हुआ मन परमात्मा की भक्ति में लगे और आप **परमात्मा की भक्ति** कर सकें।'' हमारे ऊपर संगत का जबरदस्त असर पड़ता है अगर हम बुरे लोगों की संगत करते हैं तो हमारे अंदर बुराई पैदा हो जाती है अच्छे लोगों की संगत करते हैं तो हमारे अंदर भी अच्छे गुण आ जाते हैं।

एक हंस जोहड़ में बैठा था, वह जोहड़ में चोंच मारता तो उसमें से गंद ही निकलता था। फरीद साहब उस हंस से कहते हैं, ''तू उस सरोवर में जा जहाँ तेरी खुराक मोती है, जोहड़ से तुझे क्या मिलेगा?'' इसी तरह हमें भी अच्छे पुरुषों की संगत–सोहबत में जाकर फायदा उठाना चाहिए।

फरीदा नंढी कंत न रावयो वड्डी थ मुईआस।।
धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआस।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जब जवानी थी, **परमात्मा की भक्ति** का वक्त था। उस समय परमात्मा की भक्ति करके जीवन सफल बनाना था लेकिन जब यह देह कब्र में चली जाती है तब कब्र में जाकर आशा करते हैं कि मुझे परमात्मा मिले और माफ करे।''

फरीदा सिर पलया दाढ़ी पली मुच्छां भी पलीआं।।
रे मन गहिले बावले माणह् क्या रलीआं।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''तेरी दाढ़ी–मूछें और सिर के बाल भी सफेद हो गए हैं लेकिन तेरा मन अभी भी परमात्मा की तरफ नहीं आता, रंगरलियों और दुनिया की तरफ ही जाता है।''

फरीदा कोठे धुक्कण केतड़ा पिर नीदड़ी निवार।।
जो देंह लधे गाणवें गए विलाड़ विलाड़।।

अब फरीद साहब कहते हैं, ''अगर कोई आदमी छत के ऊपर चढ़कर दौड़े तो वह कितनी दूर चला जाएगा? बस, बीस–पचास फुट दूर ही जाएगा क्योंकि आगे जगह ही नहीं, यही हालत हमारे वजूद की है। परमात्मा ने गिनती के दिन और गिनती के श्वास दिए हैं। तू इन श्वासों को गाफिल मन के पीछे लगकर खराब न कर, यह देह तो कुछ ही सालों की है। कुछ बचपन में गुजर जाती है, कुछ जवानी की लापरवाही में गुजर जाती है, आखिर बुढ़ापा आ जाता है, कफ–बलगम घेर लेते हैं, जोड़ो में दर्द होने लग जाता है। तू थोड़ी सी जिंदगी के बाद आगे कहाँ जाएगा?''

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआं एत न लाए चित।।
मिट्टी पई अतोलवीं कोय न होसी मित।।

तू यहाँ दिल लगाकर बैठा है कि मेरा मकान सबसे अच्छा हो, ऊँचा हो और उसमें अच्छी मीनाकारी हुई हो। अफसोस! आखिरी वक्त चाहे कोई राजा है, चाहे प्रजा है, चाहे किसी भी कौम का मालिक है, ऊपर तो बेहिसाब मिट्टी ही पड़नी है। यहाँ दिल लगाकर क्या करेगा? अगर कब्र में पड़ता है तो बेहिसाब मिट्टी डालते हैं अगर जलाया जाता है तो राख की एक मुट्ठी बन जाती है।

फरीदा मंडप माल न लाय मरग सताणी चित धर।।
साई जाय समाल जित्थै ही तौ वंजणा।।

फरीद साहब हमें चेतावनी देते हैं, ''तू दुनिया के पदार्थ मकान, ज़ायदाद में अपना दिल मत लगा। तू उस जगह जाकर देख

जहाँ तूने मरने के बाद जाकर रहना है क्योंकि वहाँ माता–पिता, बहन–भाई, यार–दोस्त कोई भी साथ नहीं होगा।''

अमल जो कीते दुनी विच सिर दरगाह आए काम

हम जो अमल करते हैं वे ही हमारे गवाह होंगे, वहाँ हमारे अमल, करतूत ही हमारे साथी–संगी होंगे।

फरीदा जिनं कंमीं नाहिं गुण ते कंमड़े विसार।।
मत सरमिंदा थीवही सांई दै दरबार।।

जिन कामों में कोई गुण नहीं उन कामों को छोड़ दें ताकि परमात्मा के दरबार में शर्मिन्दगी न उठानी पड़े।

महात्मा कहानी सुनाते हैं कि किसी वेश्या ने अपनी दासी से कहा, ''तू पड़ोस में जाकर देख कि फलां आदमी मरकर स्वर्ग में गया है या नर्क में गया है?'' वहाँ से एक महात्मा गुजर रहे थे, उन्होंने सोचा कि इस लड़की को इतना ज्ञान कैसे हो सकता है कि वह आदमी स्वर्ग में गया है या नर्क में गया है? महात्मा ने सोचा निर्णय करना जरूरी है। महात्मा वहीं बैठ गए। दासी ने वापिस आकर अपनी मालकिन से कहा, ''वह आदमी स्वर्ग में गया है।''

महात्मा ने दासी से पूछा, ''बेटी, तुझे यह कैसे पता लगा कि वह आदमी स्वर्ग में गया है।'' दासी ने कहा, ''महात्माओं से सुना है कि जाने के बाद जिसका यश हो, लोग जिसे अच्छा कहते हों वह आदमी अवश्य ही स्वर्ग में जाता है। जिसके जाने पर लोग लानतें दें कि अच्छा हुआ यह चला गया, अत्याचार करता था, लोगों को दुःख देता था वह आदमी अवश्य ही नर्कों में जाता है।''

फरीद साहब कहते हैं, ''आप वह काम न करें जिससे आपको मालिक के दरबार में जाकर शर्मिन्दगी उठानी पड़े।''

फरीदा साहिब दी कर चाकरी दिल दी लाह भरांद।।
दरवेसां नों लोड़ीऐ रूक्खां दी जीरांद।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तू **परमात्मा की भक्ति** कर। सबसे पहले विश्वास कर कि मैं जो काम करता हूँ वो ठीक है, परमात्मा इसे मंजूर करेगा। डाँवाडोल मत हो, तू कभी कहता है कि परमात्मा मिलेगा, कभी कहता है नहीं मिलेगा, तू इस भ्रम को दिल से निकाल दे। जिन्हें विश्वास होता है उन्हें परमात्मा जरुर मिलता है और उन्हें अपने घर के अंदर जगह देता है। परमात्मा का भक्त बनना ज्यादा से ज्यादा मुश्किल है।'' कबीर साहब कहते हैंः

फकीरा फकीरी दूर है, जैसे पेड़ खजूर
चढ़ गया ते अमर फल, गिर गया ते चकनाचूर

मालिक के प्यारे कूड़े–करकट के ढेर की तरह होते हैं। हर किसी की मर्जी है उस ढेर के ऊपर अच्छा फल फैंके या कूड़ा फैंके, वे बुरा नहीं मानते, खामोश होकर सहन कर लेते हैं। इसी तरह फरीद साहब ने पेड़ की मिसाल दी है चाहे कोई पेड़ को काटे, चाहे उसके ऊपर पानी डाले, चाहे कोई पत्थर मारे; पेड़ बुरा नहीं मानता। पेड़ खाने के लिए फल ही देता है। हज़रत बाहू कहते हैंः

ज्योंदया मर रहणां होवे तां वेश फकीरी बहिए हू
जे कोई सिट्टे गुद्दड़ कूड़ा वांग अरूड़ी रहिए हू
जे कोई कड्डे गाल उलांभा जी जी ओहनूं कहिए हू

यह तो सुनने वाले और करने वाले की मर्जी होती है कि उसने किस भाव से समझना है। चाहे कोई भाव लेकर आए या अभाव लेकर आए, सन्त दोनों के साथ ही प्यार करते हैं। सन्त सबके अंदर परमात्मा को देखते हैं और सबको परमात्मा के बच्चे समझकर ही प्यार करते हैं। उनकी नज़र में औरत–मर्द अलग अलग नहीं, उनके दिल में किसी मुल्क के लिए नफरत नहीं होती।

फरीदा काले मैंडे कपड़े काला मैंडा वेस।।
गुनहीं भरया मैं फिरां लोक कहैं दरवेस।।

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे इस संसार में अपनी सच्चाई पेश करने के लिए नहीं आते। वे हमें नम्रता और प्यार सिखाने के लिए आते हैं। वे यह नहीं कहते कि हम सच्चे–सुच्चे हैं बल्कि वे कहते हैं कि हम सबसे ज्यादा गुनाहगार हैं। कबीर साहब कहते हैंः

बुरा जो देखन मैं गया बुरा न मिलया कोए
जब देखया दिल आपणा मुझसे बुरा न कोए

इसका मतलब यह नहीं कि कबीर साहब बुरे थे। सन्त हमें नम्रता–आज़जी सिखाते हैं। परमात्मा को नम्रता प्यारी है। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर आप प्रभु से मिलना चाहते हैं तो अपने अंदर दीनता लेकर आएं क्योंकि प्रभु–परमात्मा सबका मालिक है, वह किसके आगे दीन हो।''

उन दिनों साधु आमतौर पर काला पहनावा पहनते थे बाद में भगवा, सफेद और कई रंग के पहनावे चले। फरीद साहब कहते हैं, ''जब लोग मुझे फकीर कहते हैं तो मुझे बहुत शर्म आती है कि मेरे अंदर तो कई अवगुण हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जप तप सयंम धर्म न कमाया, सेवा साध न जाण हर राया
कहो नानक हम नीच कर्मा, शरण पड़े की राखो शरमा

सेवक की जिंदगी बनाने वाला उसका गुरु है। जब तक गुरु देह में बैठा है, गुरु अहंकार नहीं करता कि मैं पढ़ा हुआ हूँ, किसी हुनर का मालिक हूँ, कमाई वाला हूँ या कोई करामात रखता हूँ। गुरु हमेशा ही अपने दिल के अंदर नम्रता और प्यार रखता है।

तत्ती तोय न पलवै जे जल टुब्बी देय।।
फरीदा जो डोहागण रब दी झूरेंदी झूरेय।।

अब फरीद साहब प्यार से बहुत अच्छी मिसाल देकर बताते हैं अगर खेती सूख जाए, सड़ जाए फिर चाहे आप उसे पानी में खड़ा कर दें, उसमें हरियाली नहीं आएगी, हरे पत्ते नहीं निकलेंगे क्योंकि वह सड़ चुकी है। जो आत्मा सतसंग में आकर भी नहीं समझती बाद में पछताती है कि ओह! मैंने अपनी जिंदगी खराब कर ली। सन्त–महात्माओं का कहना नहीं माना, 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं की मन को बुरी तरफ से मोड़कर अच्छी तरफ नहीं लगाया।

जां कुआरी ता चाओ वीवाही तां मामले।।
फरीदा एहो पछोताओ वत कुआरी न थीऐ।।

इसमें औरत–मर्द का सवाल नहीं। हम जब तक कुँवारे हैं हमें चाव होता है कि हमारी शादी हो जाए। शादी हो जाती है बाल–बच्चे हो जाते हैं तो कई बार बच्चों की पढ़ाई का खर्च चलाने और उनके रिश्ते–नाते करने के लिए भी कष्ट आते हैं फिर इंसान कई बार ये भी सोचता है कि अगर मुझे पहले पता होता तो मैं शादी ही न करवाता लेकिन तब तक समय हाथ से निकल चुका होता है। महात्मा कहते हैं कि परमात्मा ने आपको जो जिम्मेदारियाँ दी हैं घबराएं नहीं, उन्हें खुश होकर निभाएं।

जब सेवक को नाम मिल जाता है तो उसके दिल में ख्याल आता है कि मैं किसी न किसी तरह अपनी आत्मा को मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर ले जाकर 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ूं, कब मेरा पर्दा खुले, कब मैं उस गुरु के नूरी प्रकाश के दर्शन करूं?

परमात्मा बेइंसाफ नहीं, जब सेवक प्यार–मौहब्बत से अपने ख्याल को एकाग्र करके तीसरे तिल पर पहुँचता है तो परमात्मा उसका पर्दा खोल देता है। जब पर्दा खुल जाता है तो परमात्मा इसे बहुत सारे काम सौंप देता है कि जो आत्माएं मेरे साथ नहीं

जुड़ी, उन्हें मेरे साथ जोड़ लेकिन आत्माओं को संदेश देना बहुत मुश्किल होता है। संसार में यह संदेश दुःख उठाकर देना पड़ता है फिर सेवक पछताता है कि मैंने ऐसे ही इतना अभ्यास किया? लेकिन जिसे वह एक बार बाँहों में ले लेता है फिर उसे बिछोड़ता नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोय
जो सुख साधु संग है सो बैकुंठ न होय

कल्लर केरी छप्पड़ी आय उलत्थे हंझ।।
चिंजू बोड़न ना पीवह् उडण संदी डंझ।।

अब फरीद साहब एक हंस की मिसाल देते हैं कि वह जोहड़ में जाकर अपनी खुराक मोती ढूंढने लगा लेकिन वहाँ जाला और कीचड़ ही था। हंस के दिल में ख्याल आया कि मैं उड़ जाऊँ, हंस कोदरे के खेत में जाकर बैठ गया। जमींदार लट्ठ लेकर आए कि हंस को मारें लेकिन वे ये नहीं जानते थे कि हंस कोदरा नहीं खाता।

इसी तरह मालिक के प्यारे संसार में आकर हमें प्यार सिखाते हैं लेकिन हम उनके पीछे पड़ जाते हैं। सन्त–महात्मा किसी की जायदाद पर कब्जा करने के लिए नहीं आते, वे तो मुसाफिर की तरह चार दिन काटने के लिए आते हैं, पता नहीं कब परमात्मा की आवाज पड़ जानी है। ऊपर गया हुआ साँस नीचे आएगा या नहीं, लोगों को पता नहीं होता कि महात्मा यहाँ कितना समय रहेगा।

पंजाब में एक पुराना गाँव संधू है, मैं वहाँ सतसंग देने के लिए गया। मैंने वहाँ किले के कुछ निशान खड़े हुए देखे तो मैंने उन लोगों से पूछा कि ये निशान कैसे हैं? यह धरती बेआबाद क्यों है? उन लोगों ने बताया कि दो सौ साल पहले भी यहाँ आठ घर थे और आज भी आठ घर हैं। हमें एक साधू का श्राप है कि हम लोग

कभी फले–फूलेंगे नहीं। गाँव के लोगों ने बताया कि यहाँ एक साधू तप–अभ्यास करता था। गाँव के लोगों ने साधू से कहा कि यहाँ हमने किला बनवाना है, तू एक तरफ हो जा। साधू ने कहा, ''अगर तुम दीवार थोड़ी सी पीछे कर लो तो क्या हर्ज है।'' गाँव के लोगों ने साधू से कहा क्या तू इस धरती का मालिक है? साधू ने कहा, ''मैं मालिक तो नहीं अगर आप पीछे हट जाएं तो क्या हर्ज है?'' साधू ने बहुत मिन्नते की लेकिन गाँव के लोगों ने साधू को बैलों के पीछे बाँधकर घसीटा आखिर उसकी मौत हो गई। साधू ने तो उन्हें क्या बद्दुआ देनी थी? साधू ने कहा था कि तुम्हारा यह किला यहीं पड़ा रह जाएगा।

हम जो करते हैं कुदरत साँस–साँस का हिसाब लेती है। उन दिनों आमतौर पर डाके पड़ते थे तभी से गाँवों में रिवाज़ चला कि इकट्ठे होकर रहना चाहिए या बारात इकट्ठी होकर जानी चाहिए, आज यह रिवाज़ बन चुका है।

हंस उडर कोध्रै पया लोक विडारण जाय।।
गहिला लोक न जाणदा हंस न कोध्रा खाय।।
चल चल गईआं पंखीआं जिनीं वसाए तल।।
फरीदा सर भरया भी चलसी थक्के कवल इकल।।

अब फरीद साहब कहते हैं, ''दुनिया के बहुत से मालिक बड़े–बड़े किले बनाकर यहाँ से खाली हाथ चले गए और हमने भी खाली हाथ चले जाना है।'' नामदेव जी अपनी बानी में लिखते हैंः

मेरी मेरी कौरव करते दुर्योधन से भाई
बारह योजन छत्र झुला था देही गिरज न खाई
सरब सोने की लंका होती रावण से अधिकाई
कहाँ भए दर बांध्यो हाथी खिन्न में भई पराई

फरीदा इट सिराणे भोएं सवण कीड़ा लड़यो मास।।
केतड़यां जुग वापरे इकत पयां पास।।

फरीद साहब कहते हैं, ''देख भई प्यारेया, अच्छे रेशमी मखमल के गद्दों की जगह सिर के नीचे रखने के लिए ईंट मिल जाएगी। कीड़े मांस को तोड़–तोड़कर खा जाएंगे, किसी ने तुझ सोए हुए को नहीं उठाना। पता नहीं कब्र में कितना समय निकल जाएगा।'' कबीर साहब कहते हैंः

जां जलिये तां होय भस्म तन रहे किरम दल खाई

देह को जलाते हैं तो जलकर राख की एक मुट्ठी हो जाती है अगर इसे कब्र में रखते हैं तो थोड़े समय में ही कीड़े शरीर को तोड़–तोड़कर खा जाते हैं।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुट्टी नागर लज्ज।।
अजराईल फरेसता कै घर नाठी अज्ज।।

फरीद साहब कहते हैं, ''यह देह बहुत खूबसूरत है, सब इसके साथ प्यार करते हैं। अंदर श्वाँसों की माला चल रही है लेकिन एक दिन इसने टूट जाना है। पता नहीं मौत का देवता किसके घर मेहमान बनकर लेने आ जाता है, उस पर किसी का जोर नहीं।''

जब श्वाँस रूपी माला टूट जाती है, आँखें इसी तरह देखती हैं लेकिन इनकी रोशनी खत्म हो जाती है, हम इन आँखों को ऊपर–नीचे हिला नहीं सकते। मुँह में जुबान है लेकिन यह ऐसे वचन नहीं बोलती जैसे वचन अब हम बोल रहे हैं। इसी तरह शरीर में टाँगें भी होती हैं लेकिन ये हरकत नहीं करती।

परमात्मा ने दया करके हमें सुंदर स्वरूप दिया है अगर आँख चली जाए तो कीमत देकर भी आँख प्राप्त नहीं कर सकते अगर

टाँग चली जाती है बेशक आज के युग में टाँग लगा देते हैं लेकिन वह पहले जैसी टाँग बिल्कुल नहीं होती अगर हाथ चला जाए तो कुदरत की तरह हाथ प्राप्त नहीं कर सकते।

कई प्रेमियों ने आँखों का ऑपरेशन करवाया तो मैंने उनसे पूछा, ''क्यों भई, निगाह अच्छी बनी है?'' उन्होंने कहा, ''हाँ, दूर तक दिखाई देता है।'' जब मेरी आँखों का ऑपरेशन हुआ तो पहले की तरह साफ दिखाई नहीं दिया, मैंने डॉक्टर से कहा कि दूर तक तो दिखाई देता है लेकिन साफ दिखाई नहीं देता। डॉक्टर बहुत समझदार था, उसने कहा महाराज जी, जैसी नज़र कुदरत ने दी थी यह वैसी नहीं, यह तो काम चलाने वाली है।

महात्मा प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ने आपके ऊपर मेहर करके आपको सुंदर स्वरूप दिया है। अंदर श्वाँसों की माला चलने की वजह से ही माता–पिता, बहन–भाई, यार–दोस्त सब हमारा आदर करते हैं लेकिन जब श्वाँसों रूपी माला हरकत में नहीं आती तो हमें कोई भी नहीं रखता, कोई कौड़ी देने के लिए भी तैयार नहीं होता। कबीर साहब कहते हैंः

तन ते प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार
आधी घड़ी कोऊ न राखत घर ते देण निकार

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुट्टी नागर लज्ज।।
जो सज्जण भोएं भार थे से क्यों आवह् अज्ज।।

फरीद साहब कहते हैं, ''ऐसे सज्जन जो सारी जिंदगी मैं–मैं करते हैं, **परमात्मा की भक्ति** नहीं करते किसी को नेक सलाह नहीं देते और खुद भी नेक सलाह ग्रहण नहीं करते वे धरती पर बोझ होते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

जो प्रभ कीये भक्त ते वांहझ तिन ते सदा डराने रहिए

इस संसार से नेक आदमियों ने भी चले जाना है और बुरे आदमियों ने भी चले जाना है लेकिन आगे जाकर दोनों का ही फर्क पड़ता है। नेक लोगों को परमात्मा के घर में शोभा मिलती है और बुरे लोगों को लानतें सहनी पड़ती हैं।

फरीदा बे निवाजा कुत्तया एह न भली रीत।।
कबही चल न आया पंजे वखत मसीत।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''देख भई, तू कभी मस्जिद, मंदिर या गुरुद्वारे में गया? हमने प्रेम–प्यार से जितने भी धर्मस्थान बनाए हैं, उन्हें बनाने का इतना ही मकसद है कि हम वहाँ जाकर जो कुछ सुनते हैं उस पर अमल करें। घर का कारोबार निपटाकर इन धर्मस्थानों में जाकर थोड़ी देर **परमात्मा की भक्ति** करें। ये धर्मस्थान रीति–रिवाज के लिए नहीं बनाए गए थे, ये अपने आपको सुधारने के लिए बनाए गए हैं। मुसलमानों के लिए मस्जिद में जाकर पांच वक्त नमाज पढ़नी जरूरी है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

पंज नमाजा वक्त पंज पंजे पंजा नाओ

सबसे पहले यही माला फेरनी है कि अपनी नीयत को साफ रखें, स्वभाव को शान्त रखें, हक–हलाल की रोजी–रोटी खाएं। दिल को मोम बनाना है और सब जीवों पर दया करनी है। जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है तू उसकी बंदगी भी कर।

उठ फरीदा उजू साज सुबह निवाज गुजार।।
जो सिर साईं ना निवै सो सिर कप्प उतार।।

फरीद साहब हमें चेतावनी देते हैं, ''देखो प्यारेयो, आप लोग सुबह उठें, अगर पूरा स्नान नहीं होता तो हाथ–मुँह धो लें। इसी को मुसलमान उजू करना कहते हैं। सुबह अमृत वेले उठकर

परमात्मा के साथ जुड़ जाएं, **परमात्मा की भक्ति** करें। जो सिर उस समय परमात्मा के आगे नहीं झुकता, परमात्मा की भक्ति नहीं करता, उस सिर को काट देना चाहिए।'' आप कहते हैः

हौं बलिहारी पंखियां जंगल जिन्हां वास
कंकर चुगन थल वसन रब न छोडन पास

मैं उन पशु–पक्षियों पर बलिहार जाता हूँ जिनका वास जंगल में है। वे सर्दी–गर्मी में अपना खास बचाव नहीं कर सकते, आंधी–तूफान में मारे भी जाते हैं लेकिन वे भी सुबह उठकर अपनी–अपनी बोली में परमात्मा को याद करते हैं।

जो सिर साईं ना निवै सो सिर कीजै कांय।।
कुंने हेठ जलाईऐ बालण सदै थांय।।

फरीद साहब किसी को यह तर्क नहीं देते बल्कि अपने आपको कहते हैं कि जो सिर सुबह के समय परमात्मा के प्यार में नहीं झुकता, उस सिर को काटकर आग में जला दें। मुसलमानों में जलाने से चिढ़ते हैं। आप उस जाति के होते हुए भी यह लिहाज नहीं रख रहे कि जलाना नहीं चाहिए। आप अपने सुधार की तरफ ख्याल कर रहे हैं कि **परमात्मा की भक्ति** करनी क्यों जरूरी है?

फरीदा कित्थै तैंडे मापयां जिनीं तूं जणिओहि।।
तैं पासों ओय लद गए तूं अजै न पतीणोहि।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तू सोचकर देख, तू अपनी कुल का मान करता है कि मेरी कुल ही ऊँची है। तेरे माता–पिता कहाँ हैं? वे भी यहीं पैदा हुए थे और वे चले गए हैं, जाते हुए तुझे बताकर भी नहीं गए कि हम कहाँ जा रहे हैं? तेरे दिल को अभी भी ठोकर नहीं लगी कि मैं **परमात्मा की भक्ति** करूँ, परमात्मा का प्यारा बनूँ।''

मैं बताया करता हूँ कि जब घर में मौत आती है पुत्र, माता के साथ सलाह नहीं करता, पिता बेटे के साथ सलाह नहीं करता। वक्त आने पर सब अपने–अपने रास्ते पर चले जाते हैं कोई किसी को बताकर नहीं जाता। मौत आने पर हम उसे कंधे पर उठाकर श्मशान भूमि में ले जाते हैं लेकिन हम भूल जाते हैं कि एक दिन हमारे साथ भी ऐसा ही होगा।

फरीदा मन मैदान कर टोए टिब्बे लाह।।
अग्गे मूल न आवसी दोजक संदी भाह।।

किसी ने फरीद साहब से सवाल किया कि आप हमें परमात्मा को पाने का उपदेश दें, जिससे हम परमात्मा से मिल सकें? फरीद साहब ने कहा, ''सबसे पहले आप मन के मैदान को साफ करें। आपके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार डेरा लगाकर बैठे हुए हैं ये आपका पीछा नहीं छोड़ रहे आप इनकी तरफ पीठ कर लें फिर आपको नर्क की आग नहीं झेलनी पड़ेगी।''

फरीदा खालक खलक मह खलक वसै रब माहिं।।
मंदा किस नों आखीऐ जां तिस बिन कोई नाहिं।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी की बानी है। आप कहते हैं, ''देख भई फरीद, खिल्कत परमात्मा में बसती है और परमात्मा खिल्कत में बसता है।'' परमात्मा ही सबके अंदर बैठा है। किसी को बुरा कहना किसी समाज के साथ नफरत करना इस तरह है जैसे हम परमात्मा के साथ ही नफरत कर रहे हैं।

हमें चाहिए कि महात्मा की बानी को प्यार और ठंडे दिल से समझें। पता नहीं काल ने किस समय आवाज लगा लेनी है। हमनें सबको परमात्मा की खिल्कत समझकर सबके साथ प्यार करना है।

***

छह

यह दुनिया रंगीला बाग है

8 फरवरी 1987 - 84 आर.बी. राजस्थान : AUDIO 193

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे सदा ही संसार में आकर हमें होका देते हैं कि यह संसार चलो–चली का मेला है, यहाँ कोई सदा नहीं रहा। हमें पता नहीं कि हम पिछले जन्मों में कितनी पत्नियाँ बनाकर छोड़ आए हैं, कितने पति बनाकर छोड़ आए हैं और हमने कितने बच्चे पैदा किए, कितने घर बनाए और हम कहाँ–कहाँ फिरे, हमें याद नहीं अगर किसी को याद भी हो और वह उस घर में जाकर दाखिल हो जाए तो क्या उस घर के लोग उसे घर में घुसने देंगे? फौरन कहेंगे कि हम तुझे नहीं जानते, तू चोर है, ठग है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला था। वे संतुष्ट नहीं थे और कहा करते थे कि मंजिल काफी ऊँची है लेकिन मेरे पास इससे ज्यादा कुछ नहीं हैं। जब मुझे पेशावर में महाराज सावन सिंह जी की जानकारी मिली तो उस समय मैं आर्मी में नौशरा में था। मैं बाबा बिशनदास जी को लेकर महाराज सावन सिंह जी के चरणों में पहुँचा। बाबा बिशनदास जी के नज़दीक के एक मुसलमान फकीर फत्ती रहता था, वह भी हमारे साथ हो गया। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी को मेरे बारे में बताया कि इसने बहुत कर्मकांड, जप–तप, धूनियाँ और जलधारा

वगैरह किया हुआ है। मैंने इसे 'दो–शब्द' का भेद दिया है। महाराज सावन ने बहुत गौर से सुना और कहा, ''जीव जन्म–जन्मांतर से किसी न किसी तरफ लगा हुआ है लेकिन मुक्ति नाम में है। नाम पूरे गुरु से मिलता है, नाम कोई अक्षर नहीं।''

महाराज सावन सिहं जी अक्सर कहा करते थे, ''अगर नाम अक्षर होता तो चरखा कातने वाली पाँच साल की लड़की भी नाम दे सकती थी। नाम तवज्जो होती है, महात्मा हमारे अंदर नाम टिका देते हैं। हमें पता है कि पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है, अंदर जाने वाला ही हमें अंदर लेकर जा सकता है। फत्ती फकीर ने महाराज सावन से कहा, ''महाराज जी, आपका एक जामा राजा फरीदकोट के घर भी हुआ है।'' महाराज सावन ने कहा, ''मैंने कई जामों में कड़ाके की गरीबी भी देखी है अगर आज मैं जाकर उन महलों पर दावा करूं कि ये महल मैंने बनाए हैं क्या कोई मुझे उन महलों में घुसने देगा?''

दो किस्म के इंसान इस संसार में आते हैं। एक वे होते हैं जो यह कहते हैं कि आप किसी का बुरा न सोचें, सबके अंदर परमात्मा बैठा है अगर किसी को नेकी का ईनाम या बुराई का दंड देना है तो वह परमात्मा ने ही देना है। आपको किसी का फिक्र क्यों लगा हुआ है? दूसरे इस किस्म के इंसान भी संसार में आते हैं जो लोगों को बाँटकर चले जाते हैं। वे अपने–अपने तरीकों के मुताबिक अनेकों ही रब बनाकर चले जाते हैं। आजकल समाजो में यही हो रहा है।

सन्त–महात्मा जब संसार में आते हैं तो वे हमें बताते हैं कि हम सबका परमात्मा एक है, उससे मिलने का साधन और तरीका भी एक है। हम सब उस परमात्मा के बच्चे हैं परमात्मा बाहर किसी भी कर्म–धर्म से नहीं मिलता, परमात्मा जब भी मिलता है अंदर जाकर ही मिलता है।

आप महात्माओं की जिंदगी पढ़कर देखें, गुरु नानकदेव जी महाराज के दो बच्चे, पत्नी और माता–पिता थे लेकिन जब उनके दिल के अंदर यह ख्याल पैदा हुआ कि परमात्मा से मिलना चाहिए तो वे खुद अमली तौर पर इसमें कामयाब हुए। उन्होंने बहुत लोगों को मुफ्त में 'शब्द–नाम' का भेद दिया, पत्नी या माता–पिता की परवाह नहीं की। सारी दुनिया में खुला होका दियाः

घर में घर दिखाए दे सो सतगुरु पुरख सुजान
पंज शब्द धुनकार धुन ते वाजे शब्द निशान

महात्मा देह में बैठकर कभी यह नहीं कहते कि हम कोई गुरु या पीर हैं। महात्मा कहते हैं कि आप हमें अपना भाई, दोस्त या जो मर्जी कह लें। माता–पिता ने जो नाम दिया है, आप उस नाम से भी बुला सकते है, बाहर की बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। वे हमें ये जरूर कहते हैं कि आप अंदर जाकर खुद सच्चाई को देखें कि हमने जो किया है, वह आप भी कर सकते हैं।

महाराज कृपाल हमेशा कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है उस काम को दूसरा आदमी भी कर सकता है।'' महात्माओं की ज़िंदगी पढ़ने से पता लगता है कि उनके दिल में कितनी तड़प थी अगर वे अमीर घर में पैदा हुए तो उन्होंने अमीरी की परवाह नहीं की अमीरी को लात मारकर 'शब्द–नाम' की कमाई की। दुनिया को ऊँचा नहीं समझा परमात्मा को ऊँचा समझा। उन्होंने लोक–लाज की परवाह नहीं की अगर वे गरीब घर में पैदा हुए तो वे लोगों पर बोझ नहीं बने।

रविदास जी सारी उम्र जूतियाँ बनाते रहे। आपने अपने दस नाखूनों की मेहनत से अपना पेट पाला और साध–संगत की मुफ्त सेवा की। कबीर साहब ने सारी जिंदगी ताना बुना।

शाह बलख बुखारा को परमार्थ का शौक था। शाह बलख बुखारा का ऐसा सौभाग्य बना कि एक रात वह अपने महल में सोया हुआ था, उसे लगा कि कोई आदमी महल के ऊपर चल रहा है। बलख बुखारा ने उससे पूछा, ''तुम कौन हो?'' उस आदमी ने कहा, ''मैं सारबान हूँ, मेरा ऊँट खो गया है मैं ऊँट ढूंढ रहा हूँ।'' बलख बुखारा ने कहा, ''यह बादशाह का महल है यहाँ चिड़िया नहीं फटक सकती तो ऊँट कैसे आ सकते हैं?'' कबीर साहब ने कहा, ''तू दिल में परमात्मा से मिलने का शौंक और तड़प रखता है लेकिन फूलों की सेज पर सोता है, तूने कभी यह सोचा है कि फूलों की सेज पर रंगरलियाँ मनाते हुए कभी परमात्मा मिला है?'' बलख बुखारा आला पात्र था, उसके लिए इतना ही बहुत था।

बलख बुखारा रात की घटना से परेशान था, सुबह कचहरी लगाकर बैठा। कबीर साहब फिर एक रौबदार आदमी का रूप धारण करके कचहरी के अंदर चले गए, किसी के रोकने से नहीं रूके। कबीर साहब ने आगे जाकर पूछा, ''मैं इस मुसाफिर खाने में रात काटना चाहता हूँ।'' उन लोगों ने कहा, ''तू पागल है यह तो राजमहल है मुसाफिर खाना नहीं।'' कबीर साहब ने पूछा, ''यह महल किसने बनवाया था?'' उन्होंने कहा कि यह महल हमारे बड़े बुजुर्गों ने बनवाया था। कबीर साहब ने पूछा, ''यहाँ इससे पहले कितने राजा–महाराजा रहे हैं?'' उन लोगों ने काफी कुछ गिनकर बताया। कबीर साहब ने कहा, ''यह फिर मुसाफिर खाना नहीं तो और क्या है? जब वे लोग नहीं रहे तो तुम कौनसी आशा लगाकर बैठे हो? महात्मा संसार में आकर हमें बहुत प्यार से बताते हैं, ''सज्जनों, खाली हाथ आए हैं और खाली हाथ चले जाना है, हम किसकी आशा लगाकर बैठे हैं, आगे किसने हमारी मदद करनी है?'' महात्मा के अंदर कमाल की तड़प होती थी।

शाह बलख बुखारा सारी दुनिया में घूमा कि कोई ऐसा है जो मुझे 'शब्द–नाम' का भेद दे? किसी ने उसे बताया कि काशी में जाति के जुलाहे, कबीर साहब हैं। पहले लोक–लाज थी आखिर उसने कबीर साहब के पास जाकर कहा, ''मुझे कुछ दें।'' कबीर साहब ने पूछा, ''तू कहाँ से आया है?'' उसने कहा, ''मैं शाह बलख बुखारा हूँ।'' कबीर साहब ने कहा, ''मैं एक गरीब जुलाहा हूँ और तू शाह बलख बुखारा है, तेरी मेरी गुजर कैसे होगी?''

शाह बलख बुखारा को परमार्थ का शौक था, वह आला पात्र था। उसने कहा कि आप मुझे जो भी रूखा–सूखा देंगे मैं वैसा ही खा लूँगा। मैं बादशाह बनकर नहीं, भिखारी बनकर आपके दरवाजे पर आया हूँ। आप मुझे जो काम बताएंगे मैं उस काम को श्रद्धा–प्यार से पूजा समझकर करूंगा।

शाह बलख बुखारा छह साल तक उनके काम में मदद करता रहा। लोई, कबीर साहब के साथ काम में हाथ बँटाती थी, उसने कहा, ''यह एक बादशाह होकर हमारे दरवाजे पर काम कर रहा है, हम जो रूखा–सूखा देते हैं, वह खा लेता है, आप इसे कुछ दें।'' कबीर साहब ने कहा कि अभी बर्तन तैयार नहीं। लोई ने कहा, ''मैं कैसे समझूँ कि अभी बर्तन तैयार नहीं।''

कबीर साहब ने लोई से कहा कि तू कुछ छिलके वगैरह लेकर छत पर चली जा, जब मैं इसे बुलाऊँगा तब तू इसके ऊपर फैंक देना। जब कबीर साहब ने बलख बुखारा को अंदर बुलाया तो लोई ने उसके ऊपर छिलके फैंक दिए। बलख बुखारा बहुत नाराज होकर कहने लगा, ''अगर मैं बलख बुखारे में होता तो तुझे देख लेता।'' लोई ने कहा कि मैं तो इसे बहुत प्रेमी समझती थी लेकिन यह अंदर से कैसा है?

इस तरह छह साल और बीत गए। लोई तो तर्जुबा कर चुकी थी वह क्या कहती। कबीर साहब अंदरूनी राज़ से वाकिफ थे। कबीर साहब ने कहा, ''अब बर्तन तैयार है।'' लोई ने कहा, ''मैं कैसे समझूँ मुझे तो यह पहले की तरह ही लगता है।'' कबीर साहब ने कहा कि तू अब गंद वगैरह लेकर ऊपर चढ़ जा। लोई ने ऊपर से गंद फैंक दिया। बलख बुखारा सब कुछ देख चुका था कि यह शरीर तो इससे भी गंदा है वह ऊपर की तरफ देखकर कहने लगा, ''मेरे ऊपर गंद फैंकने वाले तेरा भला हो मैं तो इससे भी गंदा हूँ।'' मन के अंदर तो गंद ही गंद भरा है।

कबीर साहब ने जब उसे साफ देखा तो नाम दे दिया। आपको पता है जब दिल में तड़प हो तो क्या वक्त लगता है? वक्त तो तब लगता है जब हम नाम प्राप्त कर लेते हैं लेकिन हमारे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उसी तरह रहते हैं तो नाम किस तरह प्रकट होगा? अंदर तो दुनिया भरी हुई है।

आपके आगे फरीद साहब की बानी रखी जा रही है। सूफी सन्त फरीद साहब मुसलमानों में पैदा हुए थे। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने गुरु ग्रंथ साहब में उन महात्माओं की बानी दर्ज की है जो परमगति को प्राप्त थे, जिनका रास्ता पाँच शब्द का था। फरीद साहब के दिल में बचपन से ही बहुत तड़प थी। आपने बहुत सारे तप और कर्मकांड किए लेकिन परमात्मा नहीं मिला, आपको **बिछोड़े का दर्द** था।

बिछोड़े का दर्द वही समझ सकता है जो बिछोड़े से वाकिफ हो। जिसे बिछोड़े का पता नहीं वह क्या समझ सकता है? हम यहाँ बच्चों के लिए रोते हैं। धन चला जाए तो धन के लिए रोते हैं। पत्नी पति के पीछे रोती फिरती है, पति पत्नी के पीछे रोता फिरता है

लेकिन ऐसे भी इंसान आते हैं जो परमात्मा के बिछोड़े में रातों को जागते हैं और रोते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

सुखिया सब संसार है खाए और सोए
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए

सारी दुनिया खाती है सोती है लेकिन मुझे मालिक से मिलने का दुःख लगा हुआ है, मैं रात को जागता हूँ और रोता हूँ। इसी तरह फरीद साहब कहते हैं, जिस दिन मेरा जन्म हुआ, अच्छा होता अगर मेरी माता ने मेरा नाड़ुआ काटने की बजाय मेरा गला काट दिया होता। मैं जिंदगी में इतने दुःख न सहता, मैं **बिछोड़े का दर्द** भी न सहता। अगर हम सबके ऐसे ख्याल हों तो हम यहाँ किस तरह बैठे रह सकते हैं? हम फौरन परमात्मा से मिल सकते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि प्रेमी आत्मा का सन्तों के पास आना इस तरह है जिस तरह खुष्क बारूद को आग के नज़दीक कर दें लेकिन हम गीले बारूद हैं। जिस तरह हमें सतसंग की तपिश मिलती है थोड़ी बहुत कमाई करते हैं तो हमारे अंदर भी दुनिया की तरफ से खुष्की हो जाती है और हमारी आत्मा परमात्मा की तरफ जाग जाती है। गौर से सुनेंः

फरीदा जे देंह नाला कपया जे गल कपह चुख।।
पवन न इतीं मामले सहां न इती दुख।।
चबण चलण रतंन से सुणीअर बह गए।।
हेड़े मुती धाह से जानी चल गए।।

फरीद साहब हमारी हालत बयान करते हैं कि जिस तरह बालपन सदा नहीं रहता उसी तरह जवानी सदा नहीं रहती, बुढ़ापा आ जाता है। आप बुढ़ापे की हालत बयान करते हैं कि जो दाँत

सख्त चीज़ों को चबा लेते थे वे दाँत निकल जाते हैं। प्रकाशमान नेत्र बंद हो जाते हैं। कानों से कम सुनाई देने लगता है तो हम बनावटी यंत्रों से कितनी देर सुनेंगे? पैरों से जितनी ऊँची–ऊँची छलाँगे लगा लेते थे, ये भी अब रह गए हैं। हमारी देह धाह मार कर रोती है कि मेरे साथी जो मेरे साथ ही पैदा हुए थे, ये मेरा साथ छोड़ गए हैं। कभी किसी डाक्टर के पास जाते हैं तो कभी किसी डाक्टर के पास जाते हैं। फरीद साहब कहते हैंः

दंदा कन्ना तिन्हां दित्ती हार
देख फरीदा नस गए ओह मुड कतीन दे यार

दाँत, कान, हाथ, पैर जो शरीर के साथ ही पैदा हुए थे वे हमारे जीते जी हमारा साथ छोड़ जाते हैं। जब हमारे शरीर के अंग ही साथ नहीं जाते तो हम जिन रिश्तेदारों की आशा लगाकर बैठे हैं, ये कब साथ देंगे? इसलिए नाम जपने में ही फायदा है।

फरीदा बुरे दा भला कर गुस्सा मन न हढाय।।
देही रोग न लगई पलै सभ किछ पाय।।

सन्त हमें यह संदेश नहीं देते कि आप किसी के साथ लड़ाई–झगड़ा करें। कोई मजहब यह नहीं सिखाता कि आप किसी के साथ घृणा करें या बुरा व्यवहार करें। सब धर्मग्रंथ हमें परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। सबने मानवता के गीत गाए हैं कि सबके अंदर परमात्मा है। महात्मा कहते हैं अगर कोई आपका बुरा करता है फिर भी आप उसका बुरा करना तो क्या सोचें भी नहीं। परमात्मा आपके पास आ जाएगा क्योंकि परमात्मा खाली जगह ढूंढता है।

मेरे गुरुदेव जी महाराज कहा करते थे, ''परमात्मा इंसान की तलाश में हैं लेकिन इंसान बनना बहुत मुश्किल है। आप इंसान बनकर देखें, परमात्मा आपके पास बिना बुलाए ही आ जाएगा।''

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बाग।।
नौबत वज्जी सुबह स्यों चलण का कर साज।।

फरीद साहब कहते हैं कि **यह दुनिया रंगीला बाग है**, यहाँ गोरे काले पौधे लगे हुए हैं। सन्त–महात्मा यहाँ अपनी नौबत भी बजा रहे हैं कि प्यारेयो, तैयार हो जाएं, सदा ही आगे की तैयारी याद रखें, यहाँ सदा कोई नहीं रहा। जिस तरह बाग में चम्बा, आम, अंगूर अनेकों प्रकार के पौधे लगे हुए हैं। जब सुबह होती है तो बाग का माली किंगरी बजाता है कि पक्षी उड़ जाएं लेकिन स्याने पक्षी माली के किंगरी बजाने से पहले ही उड़कर चले जाते हैं क्योंकि उन्हें पता है आखिर हमने यहाँ से उड़ना ही है।

इसी तरह सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे इस बाग के रंगों को देखकर इसमें अपना मन नहीं लगाते, वे हमेशा उन पक्षियों की तरह इस संसार में रहते हैं। हम भी इस संसार बाग में पक्षियों की तरह हैं जिस तरह पक्षियों का घौंसला कभी कहीं तो कभी कहीं होता है। हमारी हालत इससे अच्छी तो नहीं। पता नहीं कहाँ–कहाँ घर बनाकर छोड़ जाते हैं फिर बनाते और फिर छोड़ जाते हैं।

फरीदा रात कथूरी वंडीऐ सुत्तयां मिलै न भाओ।।
जिंनां नैण नींद्रावले तिंनां मिलण कुआओ।।

आप कहते हैं कि परमात्मा इंसानी जामें में ही अपने प्यारे बच्चे सन्तों को नाम की कस्तूरी देकर भेजता है। जो लोग आलसी हैं वे सोचते ही रह जाते हैं। वे कहते हैं कि हमें पता है कि नाम के बिना मुक्ति नहीं है। हम यह काम कर लें, वह काम कर लें फिर जाकर नाम ले आएंगे। परमात्मा की प्लानिंग का किसी को पता नहीं कि उसकी क्या प्लानिंग है? ऐसे आलसियों को कस्तूरी

किसी भाव से नहीं मिलती। हम जिस तन का मान करते हैं उस तन ने यही रह जाना है। धन उतनी देर ही हमारा है जितनी देर हमारे गले से आवाज निकलती है, जब आवाज निकलनी बंद हो जाती है तो कौन किसे धन देता है? कबीर साहब कहते हैंः

कौडी कौडी जोड़ के जोड़या लख करोड़
मरती वरया रे नरा लई लगोंटी तोड़

मरते वक्त घर के लोग जेबें टटोलते हैं। आपको पता ही है कि मरते वक्त क्या–क्या करते हैं? कोई कहता है कि इससे वसीयत करवा लें। कोई कुछ तो कोई कुछ कहता है। हम यह सब आँखों से देखते हैं लेकिन हमारे कानों पर जूं तक नहीं रेंगती।

फरीदा मैं जानयां दुख मुझ कू दुख सबाइऐ जग।।
ऊचे चढ़ कै देखया तां घर घर एहा अग।।

अब यह बहुत सोचने वाली बात है, जिन महात्माओं ने मन के साथ संघर्ष करके अपनी जिंदगी बनाई है उन्हें पता है कि दुनिया किन दुखों में पीड़ी जा रही है। फरीद साहब कहते हैं कि मैं समझता था कि ये विषय–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार मुझे ही परेशान कर रहे हैं, मुझे ही इनका दुख लगा हुआ है। जब काम की अग्नि भड़कती है तो यह इंसान को अंधा कर देती है, जानवरों वाले काम करवा लेती है। इसी तरह जब मोह की अग्नि भड़कती है तो इंसान सारे गुरु–पीरों को छोड़कर मोह को प्राप्त करता है। मोह से बँधा हुआ इंसान ही इस संसार में आता है।

इन पाँच डाकुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे है। सूक्ष्म, त्रिकुटी में दूसरी मंजिल पर है, जब हम तीसरी मंजिल पर जाते हैं तो आत्मा से

स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे उतार लेते हैं, वहाँ इनका नामों निशान नहीं। वहाँ जाने के लिए हमें दिन–रात संघर्ष करना पड़ता है, भूख–प्यास झेलनी पड़ती है। यह बातों का मजबून नहीं करनी का मजबून है।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि इन पाँचों ने तो सारा संसार ही दुःखी कर रखा है, यही जन्म–मरण का कारण बना हुआ है। हम बातों से महात्मा बनते हैं लेकिन ये किसी महात्मा को बेइज्जत करते हुए आगे पीछे नहीं देखते। आप पुराण पढ़कर देखें, 'शब्द–नाम' की कमाई करने वाले किसी भी महात्मा की कहानी नहीं मिलेगी कि वे इस तरह फेल हुए। अब फरीद साहब कहते हैं कि मुझे ऊपर सच्चखंड में पहुँचकर पता चला कि इस घाणी में तो सब ज्ञानी–ध्यानी, पढ़े–लिखे लोग पीड़े जा रहे हैं।

फरीदा भूम रंगावली मंझ विसूला बाग।।
जो जन पीर निवाजया तिन्हां अंच न लाग।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज फरीद साहब से कहते हैं, ''देख प्यारेया, तू दुनिया के बाग की बात करता है लेकिन मैं तुझे यह बताना चाहता हूँ कि जब हम अपनी आत्मा को तीनों पर्दों से आजाद कर लेते हैं तो हमें यह दुनिया काँटो की बजाय फूलों की तरह लगती है, **यह दुनिया रंगीला बाग है**। जो अपने गुरु–पीर के कहे अनुसार 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं वे अपनी आत्मा को दागी करके इस संसार से नहीं जाते, उन्हें आँच तक नहीं लगती।''

धर्मदास ने अपने गुरु कबीर साहब के आगे बहुत प्यार से कसम खाकर कहा थाः

सुपने इच्छया न उठे गुरु आन तुम्हारी हो

गुरुदेव, मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ कि स्वपन में भी इन पाँच डाकुओं की इच्छा नहीं उठती। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज बहुत प्यार से कहते हैंः

निमख स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावे
घड़ी मुहत रंग माणें रलिया बहोर बहोर पछतावे

कोई पागल ही होगा जो एक सैकिंड की विलासिता के लिए करोड़ों जन्म दुःख पाएगा। करोड़ दिन के तैंतिस हजार साल बनते हैं। महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि जिन्हें पूरे गुरु मिल जाते हैं वे नाम की कमाई करते हैं।

फरीदा उमर सुहावड़ी संग सुवंनड़ी देह।।
विरले केई पाईअन जिन्हां प्यारे नेंह।।

फरीद साहब कहते हैं, ''किनकी देह सुंदर है, किनकी देह को देखकर दुनिया तर जाती है? ऐसे बहुत विरले हैं जिनका उस प्यारे परमात्मा गुरु के साथ प्यार लगा होता है, उनके साथ प्यार लगाकर हम भी प्यार बन जाते हैं।''

कंधी वहण न ढाह तौ भी लेखा देवणा।।
जिधर रब रजाय वहण तिदाऊ गौं करे।।

फरीद साहब होका देकर कह रहे हैं, ''आप इस ख्याल को दिल से ही निकाल दें कि हम जो कर्म कर रहे हैं उसे कोई देख नहीं रहा, परमात्मा सब कुछ देख रहा है। दरिया में जिस तरफ पानी का बहाव होता है, पानी उसी तरफ चला जाता है।''

इसी तरह आपने लेखा जरूर देना है, हम बहुत से जन्मों में अच्छे कर्म करते हैं तो परमात्मा हमारी किस्मत में अपने मिलाप का अक्षर डाल देता है। बचपन से ही हमारा झुकाव सतसंग की

तरफ होता है, नाम की तरफ हो जाता है तो हम बुरे कर्मों की तरफ से बचना शुरु कर देते हैं। अगर हमारे पिछले जन्मों के बुरे कर्म हैं तो चाहे कोई हमें कितना भी समझा ले, हमसे प्यार–मौहब्बत कर ले, फिर भी हमारे अंदर बुरे ख्याल आएंगे।

इसलिए फरीद साहब कहते हैं जहाँ उस मालिक की रजा है कर्मों के मुताबिक हम उस तरफ लग जाते हैं। पापों की तरफ लग गए तो बुद्धि पापों से भर जाती है। कोई हमें कितना भी समझा ले हम कहेंगे, ''नहीं, हमारे कर्मों में यही कुछ लिखा हुआ है।'' परमात्मा ने किसी के कर्मों में यह नहीं लिखा कि तू खोटे कर्म कर।

हमारे तीन प्रकार के कर्म हैं। संचित, प्रालब्ध और क्रियमान। संचित कर्मों का स्टॉक ब्रह्म में है। प्रालब्ध कर्म हम हर जन्म में करते हैं और अगले जन्म में भोगते हैं ये कर्म घटते या बढ़ते नहीं। क्रियमान वे कर्म हैं जिन्हें करने के लिए आज हम स्वतंत्र हैं। सन्त–महात्मा मानव जाति पर दया करने के लिए आते हैं।

सन्त–महात्मा जब नाम देते हैं, हम पर दया करके हमारे संचित कर्मों का स्टॉक खत्म कर देते हैं। प्रालब्ध कर्मों का भी अंदर इस किस्म का इंतजाम करते हैं कि जब वे हमारे अंदर 'शब्द' रखते हैं और हम नाम की कमाई करते हैं तो आत्मा मजबूत हो जाती है, हम प्रालब्ध कर्म आसानी से भोग लेते हैं। कुछ कर्म नाम जपने से कट जाते हैं। आप क्रियमान कर्म सोचकर करें। आपने मिर्च बीजी हैं तो आप मिर्च ही काटेंगे अगर ईख बीजा है तो ईख ही काटेंगे आगे के लिए कर्म सोचकर करें क्योंकि ये कर्म आपने ही काटने हैं। जैसे हमारे कर्म हैं, हमारी बुद्धि पर वैसा ही असर पड़ा हुआ है। मैले कर्म हैं तो मैली बुद्धि है अच्छे कर्म हैं तो अच्छी बुद्धि है।

फरीदा डुक्खां सेती देहों गया सूलां सेती रात।।
खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कप्पर वात।।

फरीद साहब कहते हैं कि बचपन से दुःख गले में पड़े, बुरी सोहबत की, डाके मारे, चोरियाँ की, कत्ल किए आखिर उन्हें भोगने के लिए थाने, तहसीलों, जेलों में जाकर जिंदगी बर्बाद हो गई। रात, अपने लिए तो दुखों से भरी हुई बीतनी ही थी परिवार के लोग भी तारे गिन–गिनकर दिन चढ़ाते हैं कि कब दिन होगा। खुद तो दुःखी होना था, परिवार को भी दुःखी कर दिया। जिंदगी सूलों के बिछौने की तरह हो जाती है। हमारी जिंदगी का बेड़ा परमात्मा के हाथ में है, परमात्मा इसका मल्लाह है लेकिन हमारा भूला हुआ मन फिर भी परमात्मा के ऊपर ऐतबार नहीं करता, कहता है कि मैं जो कुछ करता हूँ वह ठीक है क्योंकि अहंकारी मिथकर चलता है।

लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेत।।
बेड़े नों कप्पर क्या करे जे पातण रहै सुचेत।।

फरीद साहब कहते हैं, ''बहुत लम्बी नदी बह रही है। क्या चौरासी का चक्कर खत्म होने वाला है? यह बड़ा ही लम्बा है। वही स्याने बंदे हैं जो किनारे पर खड़े होकर सोचते हैं कि मल्लाह समुंद्र की घुम्मड़–घेरियों से वाकिफ है, मल्लाह बेड़ा लेकर आया है, मैं इसके बेड़े में सवार होकर चला जाऊँ।''

महात्मा हमेशा ही संसार में 'शब्द–नाम' का बेड़ा लेकर आते हैं। ऐसा नहीं कि वे आज ही बेड़ा लेकर आए हैं पहले नहीं आए या आगे नहीं आएंगे। महात्मा कहते हैं कि भ्रावो, आप चौरासी से बचने के लिए इस नाम के बेड़े में चढ़ जाएं। कबीर साहब कहते हैंः

जम का दंड मूंड मे लागे कहे कबीर तब ही नर जागे

हम उस समय जागते हैं जब दुःख–कलेश आकर घेर लेते हैं फिर हम कहते हैं कि इसे सुखमनी साहब सुनाएं। हिन्दू कहते हैं इसे गीता सुनाएं या हाथ पर दीपक जलाकर दिखाते हैं कि इस लाईट पर ध्यान लगाएं। आप देखें! मरते समय कोई आदमी यह कहे कि मुझे प्यास लगी है अगर उस समय कुआँ खोदें तो वह किस तरह कामयाब हो सकता है? अगर हमने मीठा पानी पीना है गिलास में पानी डालकर मीठा–मीठा कहें तो कभी भी पानी मीठा नहीं हो सकता, मीठे का इंतजाम भी पहले करना पड़ता है।

महात्मा कहते हैं अगर आपने ज्योत में ख्याल ले जाना है तो आप जीते जी ज्योत को जगाएं। परमात्मा ज्योत रूप, शब्द रूप होकर सबके अंदर विराजमान है लेकिन हम सोचते हैं, बाहर रूई की बत्ती बनाकर उसकी ज्योत जगाएं, उसमें ध्यान टिकाने से हम मुक्त हो जाएंगे। कबीर साहब कहते हैंः

दीवा बले अगम का बिन बत्ती बिन तेल

वह अगम का दीपक सबके अंदर बिना बत्ती और तेल के जल रहा है। गुरु रामदास जी महाराज कहते हैंः

राम नाम है जोत सवाई तत्त गुरुमत काढ लीजे

राम नाम की ज्योत सबके अंदर जल रही है। गुरुमुख महात्मा अंदर उस ज्योत के दर्शन करते हैं और हमें भी ज्योत का अनुभव करवाते हैं। महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते, महात्मा कहते हैं, ''आओ करो और देखो।''

फरीदा गल्ली सो सज्जण वीह इक ढूंढेदी न लहां।।
धुक्खां ज्यों मांलीह कारण तिन्हां मा पिरी।।

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारों ने बहुत खोज की होती है, फरीद साहब ने काफी खोज की। आप गुरु नानकदेव जी, बाबा सावन सिंह जी की हिस्ट्री पढ़कर देखें। बाबा जयमल सिंह जी ने पूर्व से लेकर पश्चिम तक हर जगह खोज की कि हमें कोई 'पाँच शब्द' देने वाला मिल जाए, आखिर आप कामयाब हुए।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि ऐसा कोई समाज या धर्मस्थान नहीं जिसमें मैं श्रद्धा–प्यार से नहीं गया। बचपन से मेरा दिल–दिमाग खुल्ला था। मैं मस्जिद में भी उसी तरह जाता था जिस तरह मुझे मंदिर से प्यार था। जिस तरह मुझे मंदिर से प्यार था उसी तरह मुझे गुरुद्वारे और चर्च के साथ भी प्यार था। मुझे बचपन से ही पता था कि वह परमात्मा हर जगह है। मैंने किसी के साथ घृणा नहीं की लेकिन सच्चाई को ढूंढने के लिए बंदे को हर जगह जाना पड़ता है।

इसी तरह फरीद साहब हर जगह गए। आप कहते हैं अफसोस की बात है कि बातें करने वाले तो बहुत लोग मिल जाते हैं लेकिन मैं जिस अंदर के भेदी को ढूंढ रहा हूँ, वैसा मुझे एक भी नहीं मिला। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गल्ली किन्हें न पाया

बातों से किसी ने परमात्मा को नहीं पाया और न कोई पा ही सकता है। आप महात्माओं की हिस्ट्री पढ़ें। गुरु नानकदेव जी ने ग्यारह साल ईंट–पत्थरों का बिछौना किया, क्या वे अच्छे बिस्तरों पर सो नहीं सकते थे? अक्क–रेत का आहार किया क्या वे अच्छे खाने नहीं खा सकते थे? यह कुर्बानी का मजबूत है।

फरीदा एह तन भैकणा नित नित दुखीऐ कौण।।
कंनीं बुजे दे रहां कित्ती वगै पौण।।

जिसने 'शब्द–नाम' की कमाई के लिए लगना है उसे अवश्य ही कई बातों का पालन करना पड़ता है। कई बातों की कुर्बानी करनी पड़ती है, अपनी मान–पदवी का ख्याल छोड़ना पड़ता है। लोगों के ताने–मेहणें सहने के लिए दिल को मजबूत बनाना पड़ता है। सुख को छोड़कर दुखों को आवाज लगानी पड़ती है। जब हम मश्क पूरी कर लेते हैं तो परमात्मा हमें दुनिया में भी मान देता है। ऐसा नहीं कि वह हमें दुख ही दुख देता है, सुख की दवाई दुख है। सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है, मोती प्राप्त करने के लिए समुंद्र के गहरे पानी में डुबकी लगानी पड़ती है।

इसी तरह जिस सुख का अंत दुख है, उसे सुख नहीं कह सकते। दुनिया के पदार्थों में सिवाय दुख के आज तक किसी ने कुछ भी प्राप्त नहीं किया। किसी ने आपको ताना मारा, ''फकीरा, तेरा तन सूख गया है, तूने अच्छा खाकर नहीं देखा। आप फकीर लोग शादी नहीं करवाते अगर शादी हुई हो तो छोड़कर चले जाते हो, आप लोगों की कोई इज्जत–मान नहीं।'' फरीद साहब ने हँसकर कहा, ''यह तन तो रोज ही भौंकता है कि तू मुझे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लज्जतें दे लेकिन मैं इनके पीछे लगकर कुत्ता नहीं बनता, ये अपने आप ही भौंककर हट जाते हैं।''

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला था, उन्होंने जिंदगी में काफी समय नमक और मीठा नहीं खाया था अगर उन्हें खाने के लिए पूछते तो वे कहते कि कुत्ता बाँधा हुआ है। फरीद साहब कहते हैं कि मैंने कान में बुज्जे दिए हुए हैं, मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की बात नहीं सुनता।

फरीदा रब खजूरी पक्कीआं माखिअ नई वहंन।।
जो जो वंञै डीहड़ा सो उमर हत्थ पवंन।।

किसी ने फरीद साहब से कहा कि तू यहाँ भूखा क्यों बैठा है? मैं अरब जा रहा हूँ, वहाँ की खजूरें बहुत मीठी हैं चल तुझे वहाँ की खजूरें खिला लाएं। अरब, मौहम्मद साहब का जन्म स्थान है। मुसलमान जाति में जो आदमी एक बार वहाँ की परिक्रमा कर आए, उसका जन्म सफल समझा जाता है लेकिन मुसलमानों में ऐसे कई कमाई वाले फकीर हुए हैं जो इस बात को नहीं मानते, वे कहते हैं कि खुदा अंदर है, बाहर किसी को नहीं मिलता।

फरीद साहब कहते हैं अगर आप अंदर जाएं, अंदर रंगीले बाग हैं, मीठे फल लगे हुए हैं और अंदर की खजूरें बहुत ही मीठी हैं। सारे सन्त इस बात का इकबाल करते हैं कि आपके अंदर ही माली है, बूटे हैं और बूटे लगाने वाला भी है। आप जो चीजें बाहर देखते हैं वे परमात्मा ने आपके जिस्म के अंदर भी रखी हुई हैं।

जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावे
पीपा परम व परम तत्त है सतगुरु होय लखावे

हमें कोई ऐसा महात्मा मिले जो अंदर जाता हो और हमें भी अंदर ले जाए। फरीद साहब कहते हैंः

फकीरा फकीरी दूर है जैसे पेड़ खजूर
चढ़ गया तो अमर फल गिर गया तो चकनाचूर

जिस तरह खजूर का फल ऊपर लगता है। उसी तरह उम्र काफी होती है और इसमें बहुत उतार–चढ़ाव आते हैं अगर तू अंदर जाए तो अंदर उस नाम अमृत को प्राप्त कर सकता है।

फरीदा तन सुक्का पिंजर थीआ तलीआं खूंडह् काग।।
अजै सो रब न बाहुड़यो देख बंदे के भाग।।

आप प्यार से कहते हैं कि तन सूखकर पिंजर हो गया है, पसलियाँ अलग–अलग दिखती हैं। फरीद साहब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को कौआ कहकर बयान करते हैं कि वे अभी भी ठूंगे मारते हैं कि तू हमें भी खुराक दे। क्या हालत है, बूढ़े हो जाते हैं फिर भी हमारा मन इस तरफ से नहीं मानता। हम सोचते हैं कि हमें कौन देख रहा है लेकिन आप अपने दिल में झाँककर देखें कि हम बुजुर्ग होकर क्या करते हैं? महात्मा फरीद साहब हमें बाणी में कहते हैंः

पंजे विषय भगेंदया उम्र गँवाई यार
ऐह मन न रजया ते हुण कद रजसी यार

यह हालत है कि तन सूखकर पिंजर हो गया बीमारी ने शरीर का सब कुछ खत्म कर दिया लेकिन मन अभी भी भोगों से पीछे नहीं हटा। राजा भृतहरि अपना घर, औरतें, महल सब छोड़कर चले जा रहे थे। रास्ते में किसी का थूक पड़ा था, वह धूप में चमक रहा था। दिल में ख्याल आया कि लाल पड़ा है, उस पर हाथ मारा तो हाथ पीक से भर गया। भृतहरि ने मन को लाख लानतें मारीः

सुंदर मंदर नारी छड्डी अर सखियन के साथ
रे मन धोखे लाल के ते भरया पीक से हाथ

राजा भृतहरि चले जा रहे थे, एक कुत्ते के सिर में कीड़े पड़े हुए थे उसका सारा शरीर उजड़ा हुआ था, उसमें से पीक बह रही थी। ऐसे कुत्तों को खाने के लिए कोई कुछ नहीं डालता, वह भूखा था, उससे बिल्कुल उठा नहीं जा रहा था। पास में कुतिया थी, वह उसे चाटने लगा कि मैं इसके साथ भोग करूं। फरीद साहब कहते हैं कि बूढ़े की ऐसी हालत हो जाती है, मन फिर भी दुनिया के विषय–विकारों से नहीं हटता।

कागा करंग ढंढोलया सगला खाया मास।।
ए दोय नैनां मत छुहयो पिर देखन की आस।।

फरीद साहब कहते हैं, ''इन पाँच कौओं ने शरीर का माँस खत्म कर दिया है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भोगो रोग सो अंत विगूवे, आय जाए दुख पाएंदा

भोग से रोग और रोग से बीमारियाँ होती हैं। आपको पता ही है फिर हम जगह–जगह जाकर इलाज करवाते हैं, डाक्टर के आगे हाथ जोड़ते हैं कि हमारा ईलाज करें। आप अपना ईलाज खुद कर सकते हैं। इसके खोटे भाग्य देखें कि यह रब की तरफ नहीं लगता, बुराईयों की तरफ से तौबा नहीं करता।

फरीद साहब फरियाद करते हुए कहते हैं, ''हे कौओं, तुम मेरा माँस न खाओ, मेरे जिस्म के अंदर परमात्मा बसता है। मैं भक्ति में लग गया हूँ, नाम की कमाई में लग गया हूँ। अब यहाँ तुम्हारा ठिकाना नहीं, तुम उनके पास जाओ जो तुम्हें जगह देते हैं।''

कागा चूंड न पिंजरा बसै त उडर जाहि।।
जित पिंजरै मेरा सौह वसै मास न तिदू खाहि।।

फरीद साहब कहते हैं, ''कौओं, मेरे शरीर के अंदर परमात्मा बसता है, मैंने तो शरीर को भक्ति, नाम की कमाई करके सुखा लिया है। अब तुम परमात्मा के पिंजर को खाने के हकदार नहीं क्योंकि मैंने तुमसे कोई भी काम नहीं लिया। मैं जैसा आया वैसा ही फिर रहा हूँ, परमात्मा मेरे अंदर है तुम कोई और ठिकाना ढूंढो।''

फरीदा गोर निमाणी सड करे निघरया घर आओ।।
सरपर मैथे आवणा मरणों ना डरिआहो।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जब बुढ़ापा आ जाता है कब्र आवाजें मारती है कि मौत सिरहाने आ गई है। बच्चों से कहते हैं कि डाक्टर से कोई ऐसा यंत्र लगवाओ कि मेरी उम्र बढ़ जाए। पत्नी को आवाजें मारता है, बेटों को आवाज मारता है लेकिन महात्मा कहते हैं कि अब क्या बनता है?

मैं बताया करता हूँ कि मेरे दोस्त ने एक दिन अदरक पी ली। वह अदरक की गर्मी से परेशान हुआ तो उसने गुरमेल को आवाज लगाई कि बेटों को बुलाओ। उस समय मैं मुम्बई गया हुआ था, जब मैं वापिस आया और मुझे पता लगा तो मैंने उससे कहा, ''अगर मर जाता तो क्या बेटे आकर छुड़ा लेते?'' महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि देखो भई प्यारेयो, कब्र आवाजें मारती है, बुढ़ापा मौत को आवाजें मारता है। कब्र कहती है आखिर तेरा ठिकाना मेरे अंदर ही है, तू मरने से क्यों डरता है?

एनीं लोयणीं देखदयां केती चल गई।।
फरीदा लोकां आपो आपणी मैं आपणी पई।।

फरीद साहब कहते हैं, ''हम अपने साथियों और परिवार वालों को अपना साथ छोड़ते हुए देखते हैं। हम उन्हें अपने कंधों पर उठाकर अपने–अपने रीति–रिवाज के मुताबिक जलाते हैं या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। कई ऐसे भी हैं जो मुर्दे को उसी तरह रख देते हैं उस मुर्दे को कौए और कुत्ते खा जाते हैं। हम सोचते हैं कि मौत तो इसके लिए थी, हमारे लिए तो दुनिया की ऐशों–ईशरतें और शराब–कबाब ही हैं।''

आप कहते हैं कि इन आँखों के देखते–देखते बड़े लोग जा चुके हैं। दुनिया में हर किसी को अपनी पड़ी हुई है। कोई कहता है कि मैं अपने लड़के की शादी कर दूँ। कोई कहता है कि मैं अपने

धन को किसके नाम पर कर दूँ, इसे कहाँ रखूँ। कोई कहता है कि मुझे किसी तरीके से मान–बड़ाई मिले। कोई दिन–रात पढ़ रहा है कि मैं अच्छा मुलाजिम बन सकूँ। सारी दुनिया इसी धंधे में लगी हुई है। हम अपने–अपने कारोबार को प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन मुझे अपनी पड़ी हुई है। **मैं कहता हूँ कि मुझे इस जामें में परमात्मा मिल जाए तो मेरा मनुष्य जामें में आना सफल हो जाएगा नहीं तो जिस तरह कुत्ते–बिल्ले पेट भरकर चले जाते हैं, पक्षी पेड़ों पर बैठकर चले जाते हैं ऐसे ही मेरा जामा निष्फल चला जाएगा।**

आप सँवारह् मैं मिलह् मैं मिलयां सुख होय।।
फरीदा जे तू मेरा होय रहैं सभ जग तेरा होय।।

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि मेरे गुरुदेव कहा करते थे, ''भगवान इंसान की तलाश में है, भगवान की सदा ही कोशिश रहती है कि मुझे कोई इंसान मिले लेकिन इंसान बनना मुश्किल है।'' इसलिए भगवान कहता है, ''फरीदा, जो कोई अपने आपको सँवार लेता है, समझ लेता है मैं उसी का हो जाता हूँ। वहाँ जाकर डेरा लगा लेता हूँ। जो मुझे अपना बना लेता है वक्त आने पर सारा संसार उसका बन जाता है।

त्रेता युग में श्री रामचन्द्र जी महाराज हुए, हम उन्हें प्यार से याद करते हैं। कबीर साहब को संसार में आए हुए काफी अरसा हो गया है, सिर्फ हमारा ही मुल्क नहीं बल्कि इस संसार का कोना–कोना समुंद्र, पहाड़ों की चोटियाँ सब जगह उनको याद किया जाता है इसी तरह गुरु नानकदेव जी महाराज ने लोगों के दिलों पर राज किया। लोग सुबह उठकर प्यार से पहले गुरु नानकदेव जी का नाम जपते हैं क्योंकि उन्होंने भगवान को अपने अंदर जगह दी, अपने आपको सँवारा। वे जहाँ भी बैठे उन्होंने लोगों का सुधार किया।

सतसंगी पर बहुत भारी जिम्मेदारी होती है, वह आप सुधरा है और उसका धर्म बनता है कि वह दूसरे लोगों का भी सुधार करे। दूसरे लोगों से कहे कि इस तरह चलने से मेरा फायदा हुआ है, आप भी इस तरह चलें। सतसंगी में से नाम की खुशबू निकले, पता लगे कि यह कहाँ जाता है इसलिए आप कहते हैं, ''अगर तू मेरा हो जाए तो सारा संसार ही तेरा हो सकता है।''

कंधी उत्ते रूखड़ा किचरक बंनै धीर।।
फरीदा कच्चै भांडै रखीऐ किचर ताईं नीर।।

अब फरीद साहब कहते हैं, ''दरिया के किनारे खड़ा पेड़, जिसकी जड़ों में पानी पेड़ को गिराने की ताक में है। वह पेड़ कितने दिनों तक रह सकता है? जब पानी का जोर पड़ेगा तो फौरन उसकी जड़ों से मिट्टी निकल जाएगी और वह पेड़ गिर जाएगा। इसी तरह यह देह भी कच्चे बर्तन की तरह है, यह देह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में फँसी हुई है, इसमें नौं सुराख लगे हुए हैं। हम इसकी क्या आशा लगाकर बैठे हैं, आप कच्चे बर्तन में कितनी देर पानी रख लेंगे? अगर हमने इस देह में बैठकर नाम जप लिया तो फायदा है नहीं तो यह देह यहीं पर छोड़ जानी है।

फरीदा महल निसक्खण रह गए वासा आया तल।।
गोरां से निमाणीआं बहसन रूहां मल।।

आमतौर पर हम जब बाहर जाते हैं तो राजा–महाराजाओं की यादगारें देखते हैं कि किस तरह किले की सिर्फ नींव ही रह गई है। वक्त की सरकार ने उस किले के निशान संभालकर रखे हुए हैं, सरकार पैसा खर्च करती है। हर आदमी की देखने की अपनी–अपनी दृष्टि होती है कि हम उसे किस भाव से देखते हैं।

सन् 1947 में जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय मैं दिल्ली गया हमारी आर्मी ने पहली सलामी दी थी। हमें लाल किला दिखाने वाले आदमी ने सारी हिस्ट्री बताई कि यह दिवान–ए–आम है, यह दिवान–ए–खास है, यह नहर–ए–बहिश्त है, यहाँ तख्त–ए–तोश होता था। शाहजहाँ यहाँ बैठकर नाच–रंग देखता था। उस जमाने में एक नाली से गर्म पानी और दूसरी नाली से ठंडा पानी आता था।

आखिर में उसने बताया कि शाहजहाँ के लड़के औरंगजेब ने ही उसे कैद कर लिया, उसकी मौत आगरा के किले में हुई। सारी दुनिया ही यह देखकर और सुनकर आती है लेकिन अपनी–अपनी दृष्टि होती है, हर इंसान की अलग–अलग सोचनी होती है। यह सब सुनकर मुझे बुखार हो गया कि शाहजहाँ का कैसा कर्म होगा? शाहजहाँ ने अपने लड़के के लिए कितना पैसा खर्च किया होगा, कितनी खुशी मनाई होगी, उसे पाला–पोसा लेकिन उसे पता नहीं था कि इसी लड़के ने मुझे कैद कर लेना है।

शाहजहाँ की हिस्ट्री में आता है कि उसने अपने बेटे को पत्र लिखा, ''बेटा, तू हिन्दुओं को देखकर खुश नहीं होता, उन्हें बुरा समझता है लेकिन वे अपने मरे हुए माता–पिता को भी अन्न–पानी पहुँचाने की कोशिश करते हैं, उनके नाम पर दान–पुण्य करते हैं। तेरा पिता जीवित है, मेरे ऊपर जो पहरेदार है तू उनसे कह दे कि वह मुझे पेट भरकर पानी पिला दिया करें।''

औरंगजेब ने उसी समय दो अक्षरों में अपने पिता को पत्र का जवाब दिया कि तूने जिस स्याही से यह पत्र लिखा है, जब तुझे प्यास लगे तो इस स्याही को चूस लिया कर। आप देखें! एक बादशाह पानी के लिए भी दुखी हुआ। आज वे महल सूने पड़े हैं, वहाँ कबूतर बोलते हैं, कोई झाड़ू निकालने वाला भी नहीं है।

उन्हीं दिनों दिल्ली में औरंगजेब के हुक्म से गुरु तेगबहादुर साहब का कत्ल किया गया। औरंगजेब ने अपनी सच्चाई का होका दिया कि हम लोग सच्चे हैं, यह महात्मा ठीक नहीं लोगों को गुमराह करता है। जिस जगह गुरु तेगबहादुर साहब को कत्ल किया गया था आज उस जगह लोग जूते पहनकर नहीं जाते और सारा दिन प्रसाद बाँटते हैं। वक्त पाकर उस फकीर की इज्जत हो रही है, लोग मान–तान कर रहे हैं अगर औरंगजेब को पता होता कि लोग मुझे बुरा कहेंगे तो वह गुरु तेगबहादुर साहब का कत्ल न करता।

आखीं सेखा बंदगी चलण अज्ज कि कल।।
फरीदा मौते दा बंना एवैं दिसै ज्यों दरीआवै ढाहा।।
अग्गै दोजक तपया सुणीऐ हूल पवै काहाहा।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मौत इस तरह जबरदस्त आती है जैसे पानी के जोर से दरिया का बाँध टूट जाता है। आगे यम जीवों को तपते हुए कड़ाहे में तल रहे हैं। यम यही कहते हैं कि इसे मारो–पीटो, तेल के अंदर तल दो, इसने वहाँ अत्याचार किए थे।''

इकना नों सभ सोझी आई इक फिरदे बेपरवाहा।।

जिन्हें समझ आ गई वे नाम जपने लगे, सतसंग पर अमल करने लगे, महात्मा ने जो कहा उसे पल्ले बाँध लिया। जिन्हें समझ नहीं आई वे बेपरवाह फिरते हैं और कहते हैं, ''हाँ, देखेंगे किसने लेखा माँगना है?''

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा

प्यारेयो, कह लेना तो आसान है लेकिन ऐसे ख्याल गलत रास्ते पर ले जाने वाले हैं। आप इस दुनिया में भी देख लें, सारे परिवार या गाँव के लोगों के एक जैसे कर्म नहीं होते। कोई सुखी

है तो कोई दुखी है, कोई घर के अंदर बिमारी का हिसाब दे रहा है तो कोई बेरोजगारी का हिसाब दे रहा है। जब हम यहाँ भी सबको एक जैसा नहीं देखते तो आप ऐसा न सोचें कि मालिक के दरबार में कोई हिसाब पूछने वाला नहीं। झूठी आत्माओं को वहाँ भी जगह नहीं मिलती। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नानक जीव उपाएके लिख नावे धर्म बहाल्या
उत्थे सच्चो ही सच निबड़े सुण बख्त अग्गे जजमाल्या
थाव न पाए कूड़ यार मुँह काले दोजक चालया

अमल जे कीतया दुनी विच से दरगह ओगाहा।

धर्मराज को किसी की गवाही की जरूरत नहीं, तेरे अच्छे या बुरे कर्म ही तेरी गवाही देंगे।

फरीदा दरीआवै कंनै बगुला बैठा केल करे।।
केल करेंगे हंझ नो अचिंते बाज पए।।
बाज पए तिस रब दे केलां विसरीआं।।
जो मन चित न चेते सन सो गालीं रब कीआं।।

फरीद साहब हमें बाहरी मिसाल देकर समझा रहे हैं कि दरिया के किनारे बगुला बैठा है, देखने में बगुला बहुत सुंदर होता है। बगुले ने एक टाँग पर खड़े होकर ध्यान लगाया होता है, उसका ध्यान परमात्मा की तरफ नहीं होता, मछली की तरफ होता है। जब मछली थोड़ी सी बाहर निकलती है तो वह उसे काटकर ऊपर की तरफ उछालकर खुशियाँ मना रहा होता है। ऐसे खुशियाँ मनाते हुए पीछे बाज पड़ जाता है क्योंकि बाज भी परमात्मा के हुक्म से पैदा होता है और उसका खाज भी जानवर होते हैं। जब बाज बगुले को खाने लगता है तो बगुला अपना खेल भूल जाता है।

यह दुनिया रंगीला बाग है हम भी दुनिया के रंगीले बाग में ऐशो–ईशरत, शराबों–कबाबों के खेल कर रहे हैं। हम कहते हैं कि शायद ये बकरियाँ, भेड़े, गाय हमारी खुराक के लिए पैदा की गई हैं। हम कत्ल करके उनके माँस को मसाले लगाकर खा रहे हैं अगर कोई हमसे जोरावर हमें मारकर तलकर खाए और यह कहे कि तुम हमारे लिए ही पैदा किए गए हो तो क्या हम सुख महसूस करेंगे?

अगर हमारे सामने हमारे बच्चे को काटा जाए तो क्या हमारी आँखों में से पानी नहीं निकलेगा? जरूर निकलेगा और हम फरियाद भी करेंगे। जिन गायों के आगे से उसके बछड़े को पकड़कर ले जाते हैं तो गाय की आँखों में से पानी निकलता है लेकिन कौन उसकी फरियाद सुने? दुनिया में कोई अदालत है जिसमें जाकर वह दरख्वास्त दे?

शिकारी हिरण को तीर या गोली मारता है तो हिरण जख्मी हो जाता है। कोई उसकी मलहम पट्टी करता है? वह छिपकर अपनी जान बचाता है, हम फिर उसे पकड़ लेते हैं। हो सकता है किसी समय वह हमसे भी अच्छा इंसान हो, सेठ–साहूकार हो। मनुष्य के जामें में गलतियाँ की तो आज निचले जामों में आकर हिसाब–किताब दे रहा है। अगर हम गलतियाँ करते हैं तो क्या हम उसकी जगह पर आकर जन्म नहीं लेंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लिए दिए बिन रहे न कोय

शेर बकरी को खा रहा था। बकरी हँसने लगी तो शेर ने कहा, ''तू हँस रही है, दर्द महसूस नहीं कर रही?'' बकरी ने कहा, ''दर्द तो होता है, जान सबको प्यारी है लेकिन मैं इसलिए हँस रही हूँ कि हम घास–पत्ते खाने वाले जीव हैं, हमारी उल्टी करके चमड़ी उतारी जाती है लेकिन जो हमें खाएंगे उनकी क्या हालत होगी?

अगर कोई हमारी पुकार सुने तो हमारे बच्चों को नपुंसक कर दे ताकि हमारी औलाद ये दुःख सहन न करे।'' कबीर साहब कहते हैंः

बकरी पाती खात है ताकि काडी खाल
जो बकरी को खात है तिनके कौन हवाल

आज हम जिसका माँस तलकर खा रहे हैं वह भी हमारा माँस तलेगा। परमात्मा ने किसी को भी ऐसी छूट नहीं दी कि तू हर जन्म में लोगों के माँस को मसाला लगाकर स्वाद ले और तुझसे कोई न पूछे। जिस तरह दरिया के किनारे बगुला खेल कर रहा था, बाज ने उसे सारा खेल भुला दिया उसी तरह जब हम ऐसी ऐशो–ईशरत करते हैं तो हमारे पीछे भी मौत का बाज पड़ जाता है। हम जो खेल करते हैं वह सारा ही भूल जाते हैं।

मैंने अनेकों आदमी देखे हैं, जब मौत का फरिश्ता आता है तो वे काँपते हैं, वे कहते हैं कि मैंने बहुत पाप किए हैं, हमें परमात्मा ने कब बख्शना है? लेकिन यह तौबा तो पहले करनी थी। जो किसी का माँस खाता है, शराब पीता है, किसी का कत्ल करता है क्या कभी सोचता है कि मेरे लिए भी मौत है? जिन महात्माओं की आँखे खुली हैं वे कहते हैं, ''जितना एक इंसान को जीने का हक है उतना ही पशु–पक्षी को भी जीने का हक है। आप जैसा बर्ताव अपने लिए चाहते हैं वैसा ही बर्ताव अपने पड़ोसी के साथ करें।''

साढ़े त्रे मण देहुरी चलै पाणी अंन।।
आयो बंदा दुनी विच वत आसूणी बंन।।

फरीद साहब कहते हैं कि हर बंदे की देह साढ़े तीन हाथ की होती है। आज के युग में देह पानी और अन्न के सहारे चल रही है। बहुत गिनती की पूँजी मिली है, आमतौर पर आयु सौ साल की है लेकिन गिनती के लोग ही सौ साल तक की आयु पूरी करते हैं।

बाकी साठ–सत्तर साल या इससे छोटी उम्र में ही सांसारिक यात्रा पूरी करके चले जाते हैं।

मलकल मौत जां आवसी सभ दरवाजे भंन।।
तिन्हां प्यारयां भाईआं अग्गै दित्ता बंन।।
वेखो बंदा चलया चहुं जणयां दै कंन।।

फरीद साहब कहते हैं, ''प्यारेया, जब मौत आती है तो परिवार के लोग घर में हाजिर होते हैं लेकिन कोई यह नहीं सोचता कि इसके साथ क्या हुआ है, इसका क्या उपाय हो सकता है? परिवार के लोग उसे फट्टे पर रखकर रस्सी के साथ बाँध देते हैं।''

मैंने अपनी जिंदगी में यहाँ तक देखा है कि एक बूढ़ी औरत गुजर गई। कुछ लोगों ने कहा कि पोतो से कहो कि वे इस बूढ़ी औरत के पैरों को हाथ लगा ले। उसकी एक बहू ने अपने लड़के की बाँह पकड़ ली कि इसे तो तावीज करवाया हुआ है। हम आखिरी वक्त में पैरों को हाथ लगाने से भी डरते हैं।

फरीद साहब कहते हैं कि हम जिस कुल–कुटुम्ब का इतना मान करते थे, सबने पकड़कर फट्टे पर रस्सी से बाँध दिया। चार जने उसे उठाकर चल पड़ते हैं। हमने देह में बैठकर जो अच्छे–बुरे कर्म किए होते हैं, आगे जाकर वही हमारे काम आते हैं बाकी जो हमने कुल–कुटुम्ब बनाया होता है वह न हमारी मदद करता है और न हमें बचा ही सकता है। घर वाले पास ही बैठे होते हैं लेकिन किसी को यह नहीं पता कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान पकड़कर ले कहाँ गया, वे हमारी क्या मदद कर सकते हैं?

कबीर साहब कहते हैं कि दमामें बज रहे हैं, पास ही संतरी खड़े हैं, राईफलें ले रखी है लेकिन वह मौत का देवता अंदर आकर

जान को अपने कब्जे में करके ले जाता है। बादशाह के आस–पास पहरेदार खड़े ही रह जाते हैं। फरीद साहब कहते हैं कि बंदा वहाँ खुद नहीं जा सकता, उसे चार आदमी उठाकर ले जाते हैं।

फरीदा अमल जे कीते दुनी विच दरगह आए कंम।।
फरीदा हौं बलिहारी तिन पंखीआं जंगल जिन्हां वास।।
कंक्कर चुगन थल वसन रब न छोडन पास।।

मैं उन पक्षियों पर बलिहार जाता हूँ जो कंकर–पत्थर चुगकर भी परमात्मा को याद करते हैं। मैं उन महात्माओं पर बलिहार जाता हूँ जो इस संसार में आकर फल–फूल और रूखा–सूखा खाकर अपनी गुजर करते हैं। महात्मा कभी भी खाने के स्वादों में नहीं फँसते।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी की जिंदगी का इतिहास है कि उनका रसोईया बंता सिंह था। एक बार महाराज जी को जुकाम था तो उसने बूरा–चीनी मिलाकर देने की बजाय गलती से नमक डाल दिया। महाराज जी ने कोई शिकायत नहीं की। जब उसने खाकर देखा तो भागकर आया कि महाराज जी मैंने गलती से बूरा–चीनी की बजाय नमक डाल दिया। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''सन्त कभी भी खाने का स्वाद नहीं लेते, वे खाते समय अपनी सुरत को अंदर ले जाते हैं। खाने के स्वाद का पता तो तब लगता है जब उसे जुबान पर रखकर खाएं।''

फरीदा रुत फिरी वण कंबया पत झड़े झड़ पाहिं।।
चारे कुंडां ढूंढीआं रहण किथाऊ नाहिं।।

जब ऋतु बदल जाती है तो वन काँप जाता है, पुराने पत्ते झड़ जाते हैं। बसंत ऋतु चली जाती है, शरद ऋतु आ जाती है, झड़े हुए पत्ते फिर डाली के साथ नहीं लगते।

हमारी भी यही हालत है, बुढ़ापा आ जाता है शरीर के अंग जवाब दे जाते हैं। आज तो जवानों के सिर और हाथ भी हिलते हैं। बूढ़ों का तो आपको पता ही है कि सिर बस के स्टेंरिंग की तरह हिलता है। हाथ हिलते हैं, सिर हिलता है, सही ठिकाने से कुछ नहीं होता। मुँह में रोटी का निवाला डालता है तो इधर–उधर निकल जाता है, घरवाले खिलाते हैं। अब किस चीज का मान करें? पता नहीं प्यारेयो, किसके साथ क्या होना है? अच्छे से अच्छे डॉक्टर के पास जाता है कि मुझे रखो, किसी न किसी तरह मेरी कँपकँपी हट जाए। अब वह कैसे हट सकती है? पेड़ के पत्ते वाली कहानी है, कभी कहीं फिरता है, कभी कहीं फिरता है।

फरीदा पाड़ पटोला धज करी कंबलड़ी पहरेओ।।
जिन्हीं वेसीं सौह मिलै सेई वेस करेओ।।

जिस वक्त फरीद साहब हुए हैं उस समय फकीरों का पहनावा कंबली होती थी अगर किसी के ऊपर काली कबंली होती तो कहते कि यह फकीर है। शुरु–शुरु में फरीद साहब ने फकीरों वाला पहनावा पहना। आप बाहर जितने मर्जी पहनावे पहन लें, बाहर के पहनावे से हमारा मन बस में नहीं आता। कई सालों के बाद आपने कहा कि मैं कंबली को फाड़कर इसकी झंडी बना लूं। वह वेश करूं, वह भक्ति करूं जिससे मुझे परमात्मा मिले।

काय पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहरेय।।
नानक घर ही बैठयां सौह मिलै जे नीअत रास करेय।।

सन्त–महात्मा जब भी संसार में आते हैं वे हमें यह उपदेश नहीं देते कि सफेद कपड़ों की जगह भगवे कपड़े पहनने से परमात्मा मिल जाएगा या भगवे कपड़े उतारकर काले कपड़े पहनने से

परमात्मा मिल जाएगा। अगर हमें इस तरह परमात्मा मिलता हो तो यह बहुत ही सस्ता सौदा है। महात्मा कहते हैं कि अपनी–अपनी कौम में रहें, अपनी गृहस्थी में रहते हुए आपको जो जिम्मेदारियाँ मिली हैं उन्हें पूरा करते हुए 'शब्द–नाम' की कमाई करें।

हमारे अंदर हमारा जानी–दुश्मन मन बैठा है, यह हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लहरों में फँसाता है। कभी कहता है कि घर–बार छोड़कर साधू–फकीर बना जाए। जब साधू–फकीर बन जाते हैं तो मन कहता है कि घर चलें, यहाँ क्या पड़ा है, घर में ही भक्ति कर लेंगे लेकिन यह मन हमें न घर का छोड़ता है, न घाट का छोड़ता है। कंबली फाड़ने की और घर–बार छोड़ने की क्या जरूरत है अगर आप 'शब्द–नाम' की कमाई करेंगे तो घर बैठे ही परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।

आप गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़कर देख लें! आज से तीन सौ साल पहले योगी और भगवे कपड़े पहनने वालों का बहुत जोर था। आज से चालीस–पचास साल पहले भी उन लोगों की काफी भरमार थी। आमतौर पर हम लोग सोचते हैं कि भगवे कपड़े पहनने से ही परमात्मा मिल जाता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी 'शब्द–नाम' की कमाई करते थे, वे बाहर के किसी भेष को मान्यता नहीं देते थे लेकिन सिखों के मन में यह बात बैठ गई कि भेष से ही परमात्मा मिल सकता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने एक गधे के ऊपर शेर की खाल डालकर उसे बाहर छोड़ दिया। सुबह जो भी किले से बाहर निकले वह अपना लोटा फैंककर वापिस आ जाए कि महाराज जी बाहर शेर फिर रहा है।

गुरु साहब ने कहा अच्छा भई, कोई इंतजाम करते हैं। गुरु साहब ने देखा कि वाक्य ही अब इन लोगों का दिमाग ये काम

करने लगा है कि वह शेर है। उन्होंने अपने साथ कुछ योद्धा लिए और किले का दरवाजा खुला छोड़ दिया, दूसरी तरफ थोड़ी सी आवाज की तो वह गधा भागकर किले में आ गया। आगे उस गधे का भाईचारा ईंटे ढो रहा था, उन गधों को देखकर वह गधा ऊँची सुर में बोला। कुम्हार ने देखा कि यह तो मेरा गधा है लोग इससे ऐसे ही डर रहे थे, कुम्हार ने उसके ऊपर पड़ी हुई शेर की खाल उतार दी और उसके ऊपर ईंटे रख दी। जो लोग रोज ही गुरु साहब के पास आकर बातें करते थे कि महाराज जी शेर हमें खाने के लिए आया है वे सारे लोग शर्मिन्दा हुए।

गुरु साहब ने हँसकर कहा, ''मैंने आपको समझाने के लिए यह सारा कौतुक किया। गधे के ऊपर शेर की खाल डालने से गधा शेर नहीं बन जाता तो कपड़े रंगकर कैसे कोई महात्मा बन जाएगा?''

लोक डरावन कारणे तिन भेख बनाया
निर उद्यम टुकड़ा खावड़ा ओह बाबा नाम धराया

भेष तो लोगों को डराने के लिए बनाया होता है। अपना कमाना छोड़कर लोगों का खाना शुरु कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

गृही का टुक्कर बुरा नौं नौं उंगल दाँत
भजन करे तो उबरे नहीं तो कड्डे आँत

गृहस्थी की रोटी पचाना खाला जी का बाड़ा नहीं। बीबीयाँ किसी को खाना मुफ्त में नहीं देती। हमारा जातिय तजुर्बा है कि घर में बच्चा बीमार हो, भाई रोटी लेने के लिए आता है तो बीबी रोटी बच्चे के सिर पर वारकर भाई को देती है। जो उस रोटी को खाएगा उस पर जरूर असर होगा। सन्त–महात्मा जब भी संसार में आते हैं वे दस नाखूनों की कमाई करते हैं और हम सबको कहते हैं कि आप दस नाखूनों की मेहनत से अपना और बच्चों का पेट पालें।

जैसा खाईऐ अन्न वैसा होय मन।

अगर आप बुरे तरीके से अन्न–पानी कमाएंगे तो उसका असर आपके बच्चों के ऊपर होगा। आपकी औलाद कभी भी आपकी कहेकार नहीं होगी। मैंने बहुत से मुलाजिम देखें हैं जो रिश्वत लेकर अच्छी जायदाद बना लेते हैं, उनके बच्चे बड़े होकर उनकी इज्जत नहीं करते। फिर वे कहते हैं कि हमने इन बच्चों को बहुत प्यार से पढ़ाया है लेकिन ये बच्चे हमारे कहेकार नहीं। यह सुनकर कई बार चुप कर जाना पड़ता है अगर कोई सुने तो समझा भी देता हूँ कि आपने इन्हें कैसा अन्न खिलाया है?

तुलसी साहब कहते हैं, ''पराया खाना छोड़ दे नहीं तो जिसका खाया है उसका जरूर देना पड़ेगा।'' आप सन्त–महात्माओं की जिंदगी पढ़कर देख लें सब सन्त–महात्माओं ने दस नाखूनों की किरत की। कबीर साहब ने कहा थाः

मर जाऊ माँगू नहीं अपने तन के काज

बेशक जान निकल जाए लेकिन किसी के आगे हाथ नहीं फैलाऊँगा। कबीर साहब ने सारी जिंदगी ताना बुना। गुरु नानकदेव जी ने करतारपुर गाँव में खेती की, अपनी और अपने बच्चों की परवरिश की, जाते हुए कह गएः

गुरु पीर सदाए मंगण जाए ताँके मूल न लग्गी पाए
घाल खाए कुछ हत्थों दे नानक राह पछाणे से

परमात्मा उसके लिए दरवाजा खोलेगा जो दस नाखूनों से मेहनत करके खाता है और उसमें से साध–संगत की सेवा भी करता है। महात्मा दुनिया में एक नमूना बनकर पेश आते हैं और सेवकों को भी यही उपदेश करते हैं कि आप इस तरह करें तभी परमात्मा दरवाजा खोलेगा।

आप लोगों को धोखा दे सकते हैं लेकिन अंदर बैठा परमात्मा धोखा नहीं खाता। आप यह बात दिमाग से निकाल दें अगर दस–बीस हजार आदमी हमें महात्मा कहने लग जाएं तो क्या हम महात्मा बन जाएंगे? जो यहाँ अनपढ़ हैं वे आगे जाकर भी अनपढ़ ही रहेंगे। इसी तरह जो यहाँ डाकू, चोर हैं या किसी का खाते हैं, मरने के बाद परमात्मा उन्हें महात्मा की डिग्री नहीं देता। आप नेक कमाई करें।

फरीद साहब ने हमें प्यार से समझा दिया कि आप अपनी नीयत को अपने अंतिश करण को साफ करें, ये नाम की कमाई से ही साफ हो सकती है। आपको जंगलों–पहाड़ों में जाने की जरूरत नहीं, आपको परमात्मा मिल सकता है। हमें चाहिए कि हम सन्त–महात्माओं की बाणी को समझने पर जोर दें। कोई बाणी यह नहीं कहती कि आप दिन–रात तोते की तरह पढ़ते जाएं लेकिन इसे समझें नहीं। महात्मा कहते हैं कि पढ़े बिना हमें समझ नहीं आती लेकिन हम जो पढ़ते हैं उसे समझें। गुरु नानक साहब कहते हैंः

जिसका गृह तिस दीया ताला कुंजी गुरु सौंपाई
अनिक उपाय करे नहीं पाए बिन सतगुरु शरणाई

जिस परमात्मा ने यह देह बनाई है उसने ताला लगाकर कुंजी गुरुमुखों के हवाले कर दी है। सन्त–महात्मा आकर हमें कोई नई बात नहीं बताते। सन्त–महात्माओं ने 'शब्द–नाम' का होका दिया है, वे शब्द–नाम का प्रचार करते हैं। हमें भी चाहिए कि हम इस इंसानी जामें से फायदा उठाएं, पता नहीं फिर यह जामा मिले या न मिले? कबीर साहब कहते हैंः

मानस जन्म दुलर्भ है होत न बारम्बार
ज्यों वन फल पक्के भोंऐ गिरे बोहर न लग्गे डार

***

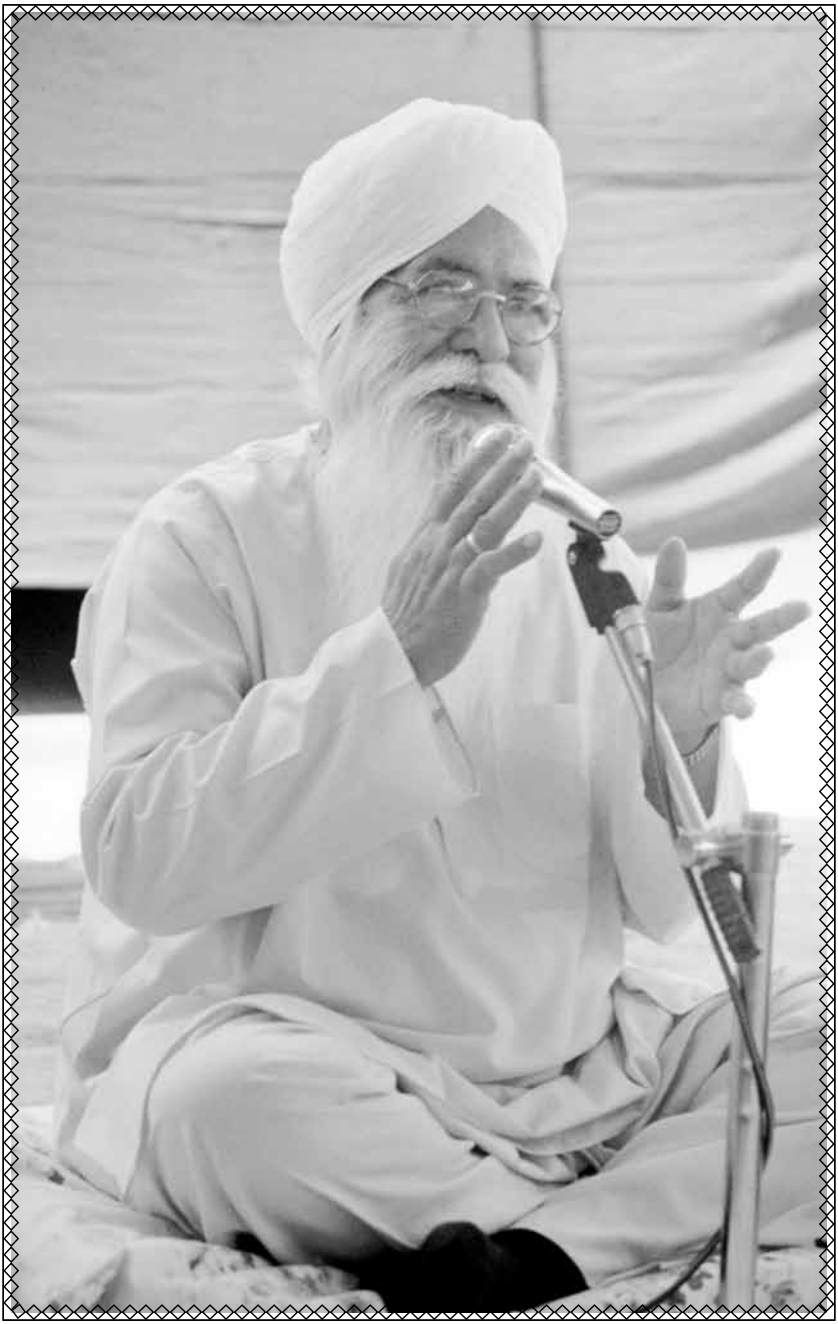

सात

सच्चा प्यार

31 मार्च 1987 - 16 पी.एस. राजस्थान : DVD 532 (1)

मैंने इस साल शेख फरीद साहब की बानी पर काफी सतसंग किए हैं और आज भी मैं शेख फरीद साहब की बानी का सतसंग ले रहा हूँ। आपका जन्म मुसलमान घराने में हुआ था, आप सूफी महात्मा की शरण में आए। सूफी का मतलब होता है साफ दिल, जहाँ नाम ही नाम हो, दुनिया की कोई मैल न हो। फरीद साहब की जिंदगी के हालात तप–त्याग मेरी जिंदगी से मिलते हैं बल्कि आपने मुझसे भी ज्यादा तप और त्याग किया।

हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम सच्चाई के साथ परमात्मा की खोज करें तो हमारी पुकार सुनकर परमात्मा हमें जरूर मिलता है। अगर सच्चे दिल से खोज करते हुए हमारी मृत्यु भी हो जाती है तो अगला इंसानी जामा अच्छा होगा और गुरु जरूर मिलेगा। सच्ची खोज बेकार नहीं जाती, यह खोज परमात्मा के दरबार में भक्ति के बराबर ही होती है।

फरीद साहब अच्छे खानदान में पैदा हुए थे। आपकी शादी उस समय दिल्ली के तख्त पर बैठे बादशाह की लड़की के साथ हुई थी। जब किसी के अंदर परमात्मा से मिलने का **सच्चा प्यार**

जागता है तो वह दुनिया के तख्त–ताज को लात मारकर परमात्मा की खोज में लग जाता है। आपने बहुत भूख–प्यास काटी लेकिन शौक–शौक ही होता है, प्यार, प्यार ही होता है।

हमारा जन्म किसी न किसी समाज में होता है। भक्तों और संसारियों का रास्ता एक नहीं होता और न ही इनका मिलाप होता है। दुनिया का विश्वास रीति–रिवाज और कर्मकांड में होता है। मालिक के प्यारयों का विश्वास परमात्मा में होता है।

फरीद साहब मुसलमानों वाले रीति–रिवाज नहीं करते थे। काजियों और मुल्लाओं ने आपकी विरोधता की। उस समय न्याय काजियों के हाथ में था और पढ़ाई का इंतजाम मुल्ला करते थे। मुसलमानों ने फरीद साहब से कहा कि तू नमाज नहीं पढ़ता, रोजे नहीं रखता। फरीद साहब ने बड़े प्यार से कहा कि अपने दस नाखूनों से मेहनत करके पेट भरना ही सच्चा रोजा है। न्याय करना, हर जीव पर तरस करना, मौहब्बत करना और सबके अंदर परमात्मा को समझना ही सच्ची नमाज है।

आपके जीवनकाल में एक घटना घटी। कपड़ा बुनने वाले गरीब जुलाहे के घर पर किसी तगड़े जमींदार ने कब्जा कर लिया। जुलाहे ने सोचा कि मैं काजी को एक अच्छी सी पगड़ी दूं ताकि काजी मेरे हक में फैसला कर दे, हाँलाकि मेरा हक बनता है क्योंकि यह मेरा घर है। जुलाहा काजी को एक अच्छी सी पगड़ी बनाकर दे आया और काजी से कहा, ''वह जमींदार बहुत तगड़ा है, मेरे घर पर उसका हक नहीं बनता। मैं बाल–बच्चों वाला एक गरीब आदमी हूँ, आप मेरे हक में फैसला करके मुझे न्याय देना।''

काजी ने खुश होकर पगड़ी अपने सिर पर बाँध ली। जमींदार तगड़ा था, वह काजी के घर एक दूध देने वाली गाय छोड़ आया।

काजी और उसके बच्चे रोज दूध पीकर खुशियाँ मनाते। जमींदार ने काजी से कहा, ''बेशक मैं झूठा हूँ लेकिन तू न्याय मेरे हक में ही करना।'' काजी ने कहा कि तू बेफिक्र हो जा, मुझे दूध बहुत अच्छा लगता है और मेरे बच्चे भी दूध पीकर खुश हैं, न्याय तेरे हक में ही होगा।

आखिर जब काजी ने अदालत लगाई तो वे दोनों ही वहाँ पेश हुए। काजी जमींदार के हक में फैसला देने लगा तो गरीब जुलाहे ने कहा, ''आप मेरी पगड़ी की तरफ तो देखें।'' काजी ने कहा, ''अरे उल्लू! पगड़ी की तरफ क्या देखूं, उसे तो गाय ने खा लिया है।'' फरीद साहब ने कहा कि यह सच्चा न्याय नहीं। सच्ची नमाज पढ़ना, परमात्मा के आगे प्रार्थना करना ही सच्चा न्याय है। कबीर साहब के जीवनकाल में भी ऐसी ही घटना घटी थी। आप कहते हैंः

काजी मुल्ला जो लिख दिया छाड़ चले हम कछु न लिया

काजी–मुल्ला ने जो रीति–रिवाज चलाया है उसे छोड़कर हम परमात्मा की भक्ति करने लगे हैं। उस समय के न्यायकार दोनों तरफ से खा लेते थे लेकिन गरीब के हक में कुछ नहीं करते थे।

फरीद साहब के दिल के अंदर अपने गुरु के लिए सच्ची श्रृद्धा, **सच्चा प्यार** था। आपने गुरुमत को सच्चे दिल से पकड़ा था। जो जुबान पर था वही आपके दिल में था। आपने अपने गुरु के पास रहकर अपने गुरु की काफी सेवा की।

फरीद साहब के जीवन से एक सच्ची घटना जुड़ी हुई है। एक वेश्या फरीद साहब के घर के पास रहती थी। वह औरत सदा फरीद साहब के साथ मजाक करती और अपने जाल में फँसाने की कोशिश करती थी।

जब सच्चे दिल से भक्ति करें तो काल किसी न किसी में बैठकर ऐसा जाल फैला ही लेता है। उस समय आजकल की तरह आग जलाने के लिए माचिस नहीं होती थी, न ही अग्नि के खास साधन होते थे। आमतौर पर लोग अपने घरों में अग्नि दबा लेते थे, कई बार अग्नि बुझ जाती थी तो काफी समस्या होती थी। इसी तरह एक दिन उनकी अग्नि बुझ गई, बहुत कोशिश की लेकिन आग नहीं जली। पड़ोस में लैंप जल रहा था, वेश्या हुक्का पी रही थी, गुड़गुड़ाहट की आवाज आई तो फरीद साहब उस तरफ चले गए।

उस औरत ने सोचा पहले तो यह कभी बोलता नहीं था अच्छा हुआ आज खुद ही आ गया। औरत ने उनसे पूछा कि तू कैसे आया है? फरीद साहब ने कहा, ''माता, हमारी आग बुझ गई है, तू आग दे दे।'' औरत ने मजाक के तौर पर कहा कि आग की कीमत आँख है। फरीद साहब ने कुछ नहीं सोचा और अपनी आँख निकालकर उस औरत को दे दी। वह औरत बहुत डरी कि मैंने तो इससे मजाक किया था लेकिन यह तो सीधा–साधा भक्त आदमी है। औरत ने फरीद को आग दे दी, फरीद ने आँख पर पट्टी बाँध ली।

फरीद ने आग पर पानी गर्म करके अपने मुर्शिद को नहलाया तो मुर्शिद ने झाँककर देखा और पूछा, ''फरीद, तूने आँख पर पट्टी क्यों बाँधी है?'' पंजाबी में आम कहावत है अगर किसी की आँख में दर्द हो तो कह देते हैं कि आँख आई है। फरीद ने कहा कि आँख आई है। मुर्शिद ने कहा कि जब आँख आई है तो तूने पट्टी क्यों बाँधी है, तू पट्टी खोल दे। जब फरीद ने पट्टी खोली तो दोनों आँखें एक जैसी थी। फरीद साहब गुरु प्यार में सच्चे भक्त थे।

सन्त हमेशा ही कहते हैं कि आप मन के धोखे से बचें, मन के फरेबों से बचें, यह आपके पीछे नाम की पूँजी लूटने के लिए लगा

हुआ है। अगर हमारे साथ ऐसी कोई घटना घटे तो क्या हम बचे रह सकते हैं, क्या हम गुरु के लिए ऐसी कुर्बानी कर सकते हैं?

दिलहु मुहबति जिन्न सेई सचिआ।।
जिन मनि होरु मुखि होरु सि काँढे कचिआ।।

फरीद साहब हमें प्यार से समझाते हैं कि गुरु–परमात्मा के दरबार में वे सच्चे हैं जिनके दिल में मौहब्बत है। हुजूर कृपाल कहा करते थे, ''दिल को दिल से राह होती है।'' जिनके मन में कुछ और है और जुबान पर कुछ और है, वे कच्चे हैं। जब गुरु–परमात्मा परखता है तो वह कच्चों को अलग कर देता है और पक्कों को परखकर अपने खजाने में दाखिल कर लेता है।

हिन्दुस्तान में नोट प्रचलित हुए थोड़ा ही समय हुआ है। जब हम छोटे थे, उस समय आमतौर पर चाँदी की करंसी होती थी। अपने वक्त के हालात देखकर गुरु नानकदेव जी ने चाँदी के रूपये की मिसाल दी हैः

खरे परख खजाने पायन खोटे भरम भुलामंणया

जब लोग सरकार का टैक्स चुकाने के लिए जाते थे उस समय चाँदी की करंसी दी जाती थी। खजांची रूपयों को अच्छी तरह से परखता था। जिस रूपये में सही चाँदी होती थी, उसे खजाने में दाखिल कर लेता था, दूसरे को टक लगाकर बाहर फैंक देता था।

इसी तरह परमात्मा हर जन्म के बाद हमारी परख करता है कि क्या ये खरे हैं? अगर हम खरे उतरते हैं तो वह हमें अपने खजाने सच्चखंड में दाखिल कर लेता है अगर हम मन इन्द्रियों, विषय–विकारों में लिपटे हुए खोटे हो चुके हैं तो परमात्मा फिर हमें इस संसार में ही जन्म दे देता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

उगड़ गया ऐह खोटा डबुआ जद नदर सर्राफा आया

अगर पाखंडी गुरु का सच्चे शिष्य से मिलाप होता है तो उसका भी आवरण उतर जाता है कि यह किस तरह मन इन्द्रियों का गुलाम है। इसी तरह जब हमें सच्चे सन्त–सतगुरु मिलते हैं तो दिखावे के भक्त शर्मिन्दा हो जाते हैं। वे गुरु के साथ आँख नहीं मिला सकते, सिर झुकाकर बैठ जाते हैं, आँख उठाकर नहीं देख सकते क्योंकि हमारे पाप हमें ऊपर नहीं देखने देते।

जो महात्मा ऊपर से तो मीठी बातें करते हैं, अच्छे–अच्छे भाषण देते हैं लेकिन उनके मन में कुछ और है, दिल में कुछ और है। वे कच्चे हैं, आप उनके पास जाकर कभी भी पक नहीं सकते। किसी भी महात्मा की शरण में जाने से पहले अच्छी तरह देखें कि क्या इस महात्मा ने बीस–तीस साल कोई भजन–अभ्यास किया है, क्या यह अब भजन करता है और इसकी रहनी–बोलनी कैसी है, कहीं यह हमें किताबी ज्ञान तो नहीं दे रहा?

मैं किसी की निन्दा नहीं कर रहा। सच्चाई का बीज नाश नहीं होता, संसार में सच्चाई जरूर है। आज गुरुडम इसलिए नफरत का शिकार है क्योंकि साँप का डसा हुआ इंसान रस्सियों से भी डरता है। एक जगह धोखा खाता है तो जगह–जगह बेविश्वासा हुआ फिरता है। हम जब तक मन–इन्द्रियों का साथ नहीं छोड़ते तब तक कामयाब नहीं हो सकते और अंदर परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल अच्छे पढ़े–लिखे, काफी बड़े लेखक थे लेकिन उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि जो अच्छा लेक्चर दे लेता है या जिसके पास ज्यादा इकट्ठ होता है वही पूरा महात्मा है। महाराज सावन सिंह जी भी यही कहा करते थे कि जो महात्मा अंदर जाता है वह जो कुछ मुँह से कहता है वही उसके दिल में है। ऐसे महात्मा आप तर जाते हैं और अपनी संगत को भी तार लेते हैं।

मैं जब शुरु–शुरु में दिल्ली गया तो महाराज कृपाल के बहुत से सतसंगी मुझसे मिले जिनका आमतौर पर यही सवाल था कि इस ग्रंथ में यह लिखा है, उस ग्रंथ में वह लिखा है। मैंने उन सबसे यही कहा कि मेरी पहले भी यही बात थी और आज भी यही बात है कि ग्रंथ–किताबें जहाँ से निकली हैं वह इंसान की सोचने की शक्ति है। आप उस जगह पहुँच जाएं तो आपको बाहर के किसी भी ग्रंथ की मिसाल देने की जरूरत नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

तू कहता है पुस्तक देखी हम कहते हैं आँखों देखी।

अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि झूठ और सच में कितना फर्क है? बीरबल ने कहा, ''जितना कान और आँख का फर्क है। कान से सुनी बात पर यकीन कर लेना और बात है लेकिन जो आँख से देखा है वही सच्चाई है।''

रते इसिक खुदाइ रंगि दीदार के।।

फरीद साहब कहते हैं कि जो परमात्मा शब्द में रच गए हैं, उनका खाना–पीना, उठना–बैठना खुदा का दीदार है, वही सच्चे आशिक हैं, वही परमात्मा से **सच्चा प्यार** करते हैं। कबीर साहब ने कहा था, ''हे सतगुरु, अगर तू मेरी आँख में आ जाए तो मैं आँख बंद कर लूँ, न मैं किसी को देखूँ और न तुझे ही किसी की तरफ देखने दूं।'' इसका नाम **सच्चा प्यार** सच्ची भक्ति है। ऐसा प्रेमी हर एक के अंदर अपने गुरु का दीदार करता है, गुरु को ही देखता है।

प्यारेयो, जब क्राईस्ट को सूली पर चढ़ाने लगे तो परमात्मा ने क्राईस्ट से पूछा, ''इन लोगों को क्या सजा दूं?'' क्राईस्ट ने कहा, ''ये लोग भोले हैं, अंजान हैं तू इन्हें माफ कर दे।'' वे यही आँखें थी जिसकी वजह से क्राईस्ट उनको माफ करने के लिए कह रहा था क्योंकि उसे वे अपने ही दिखाई दे रहे थे।

विसरिआ जिन नामु ते भुइ भारु थीए।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जो 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करते, उनके पापों के भार की वजह से धरती काँपती है।'' कबीर साहब कहते हैंः

जो प्रभ किए भगत ते वाहंज तिनसे सदा डराने रहिए

जिन्हें प्रभु ने अपनी भक्ति के लिए नहीं चुना या अपनी नाम भक्ति का दान नहीं दिया उनसे सदा ही डरें क्योंकि वे परमात्मा की भक्ति नहीं कर रहे बल्कि अपने ही अहंकार में घूम रहे हैं।

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से।।

फरीद साहब कहते हैं, ''सच्चे फकीर, सच्चे दरवेश, सच्चे भक्त वे हैं जिन्हें परमात्मा ने अपने गले से लगाया और घर आकर ही अपनी भक्ति का दान दे गए।''

तिन धन्नु जणेदी माउ आए सफलु से।।

फरीद साहब कहते हैं कि जिस घर के अंदर वह हस्ती बालक बनकर खेला, वह पिता धन्य था। जिस माता की कोख को भाग्य लगा दिए, वह माता भी धन्य थी। उस माता–पिता और बच्चे का संसार में आना सफल हो गया।

आपको पता ही है कि जो महात्मा पहले हो चुके हैं हम उनके माता–पिता का बहुत सत्कार करते हैं। जिस तरह आज भी बहुत से लोग गुरु नानकदेव जी के माता–पिता को मानते हैं। हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी के माता–पिता का हम बहुत चाव से नाम लेते हैं। इसी तरह हुजूर कृपाल के माता–पिता को हम कितनी बड़ाई देते हैं कि हुक्म सिंह धन्य थे जिसके घर में कृपाल कृपा करने वाला बालक आया। उनकी माता गुलाब देवी को भी

बधाईयाँ देते हैं कि जिसकी कोख से ऐसा लाल पैदा हुआ, जिसने दुनिया को नाम की रंगत चढ़ा दी।

गुरु नानकदेव जी ने अपनी बानी में लिखा है कि वह कुल धन्य है, वह जननी धन्य है जिसने गुरु को पैदा किया। वह सतगुरु धन्य है जो पैदा होकर संसार की मैलों में नहीं फँसा। उसने नाम की कमाई की, परमात्मा से खुशी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया कि जो उसकी शरण में आता है उसे परमात्मा बख्श देता है।

परवदगार अपार अगम बेअंत तू।।

हे परमात्मा! तू सबकी परवरिश करता है, तू अगम है, तेरी गमता को कोई लख नहीं सकता।

जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तू सबकी परवरिश करता है, तू अगम है, बेअंत है अपार है। जिन्होंने तुझे पहचान लिया जो तेरे साथ मिल गए, मैं अपने मुँह से उनके पैर चूमने के लिए तैयार हूँ। अगर मेरे ऊँचे भाग्य हैं तो मुझे उनके पैर चूमने का मौका दे।''

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी।।
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तू बख्शिंद है इसलिए मैं तेरी शरण में आया हूँ, मैं भक्ति और बंदगी की खैर माँगता हूँ। हे सतगुरु परमात्मा, मैं तेरे दर पर खाली झोली लेकर आया हूँ, तू मेरी खाली झोली को भक्ति के पदार्थ से भर दे।''

***

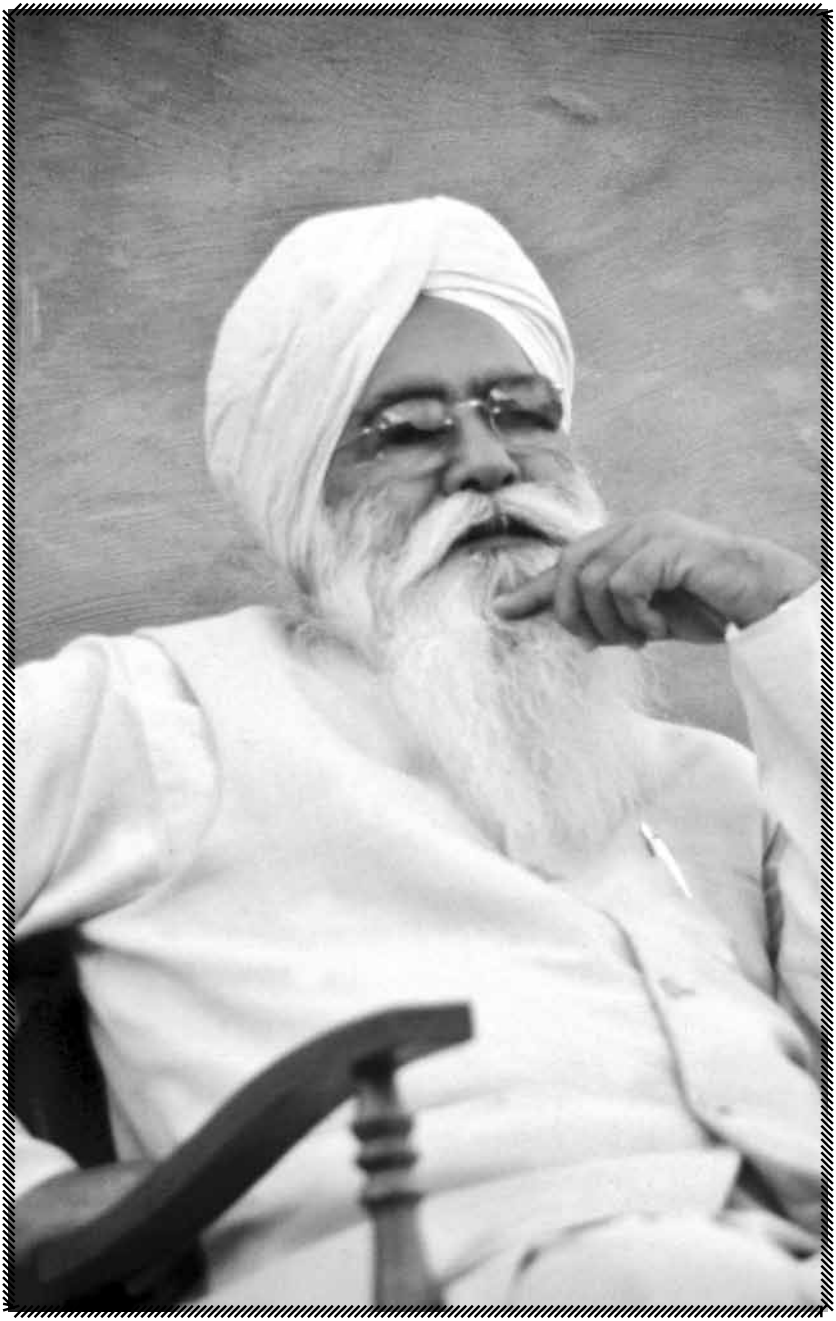

आठ

प्रभु का हुक्म

12 दिसम्बर 1987 - 16 पी.एस. राजस्थान : DVD 101

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे सदा ही संसार में आते हैं उनका रास्ता न कभी बंद हुआ है और न हो ही सकता है। अनेकों महात्मा इस संसार में आए, अनेकों ने और आना है। सब महात्मा हमें यही बताकर गए हैं कि परमात्मा एक है और परमात्मा से मिलने का साधन–तरीका भी एक ही है। चाहे कोई पूर्व का रहने वाला है चाहे कोई पश्चिम का रहने वाला है, सबकी रचना उस परमात्मा ने की है और वह परमात्मा सबके अंदर 'शब्द–रूप' होकर बैठा है।

महात्मा हमें सदा यही बताते आए हैं कि परमात्मा कुलमालिक है, उसका कोई शरीक नहीं, कोई भाई–बंधु नहीं। जिनके अंदर तड़प होती है, परमात्मा उन्हें अपने साथ मिलने का साधन व तरीका समझाता है। महात्मा हमें समझाते हैं कि प्रभु को कौनसा श्रृंगार और कर्मकांड मंजूर है? वह श्रृंगार नम्रता और आज़जी है।

हमारे हुजूर कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा कुलमालिक है, उसे आज़जी और नम्रता की जरुरत है। वही नम्रता फायदेमंद है कि हम अंदर से झुकें लेकिन नम्रता जग दिखावे के लिए न हो।''

फरीद साहब कहते हैं, ''जो लोग अहंकार करते हैं वे ऐसे हैं जैसे ऊँचे पहाड़ या रेत के टीले पर बारिश का पानी नहीं ठहरता, नीचे चला जाता है। इसी तरह जो लोग धन या किसी औहदे का मान करते हैं कि हम तगड़े हैं, हमारे जैसा कौन है? वे हुकूमत के नशे में लोगों को अपने पैरों से ठोकरें मारते हैं, ऐसे लोग संसार से इस तरह खाली हाथ चले जाते हैं जिस तरह रेत के टीले से बारिश का पानी नीचे आ जाता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

प्रभु अहंकर न भावी वेद कूक सुनावे

आप वेद–शास्त्र, ग्रंथ–पोथियाँ पढ़कर देखें। परमात्मा को अहंकार नहीं, नम्रता मंजूर है। जिन्हें यह अहंकार है कि हम धनी हैं, हमारी अच्छी सेहत है, हमारे ज्यादा भाई हैं या हमारा कुल–कुटुम्ब बहुत ऊँचा है, वे संसार में खाली हाथ आते हैं और आखिर में खाली हाथ ही चले जाते हैं। आगे जाकर कोई भाई–बहन या सभा–सोसायटी हमारी मदद नहीं करते।

फरीद साहब बड़े प्यार से कह रहे हैं, ''आप किस चीज़ का मान करते हैं, क्या सेहत का मान है? चार दिन बुखार आ जाए तो मुँह पीला पड़ जाता है, जवानी का मान है, क्या हमने किसी का बुढ़ापा नहीं देखा, धन का मान है, क्या हमने गरीबों को सड़कों पर ठोकरें खाते हुए नहीं देखा?''

सन्त–महात्मा हमें प्यार से बताते हैं, क्या हम कौम का अहंकार करते हैं? जब श्मशान भूमि में अपने साथियों को छोड़कर आते हैं तब जोर–जोर से रोते हैं। जाने वाला चला जाता है, उसकी याद ही आती है, वह दुनिया में वापिस नहीं आता। आप किस चीज़ का अहंकार करते हैं? परमात्मा को नम्रता ही प्यारी है। आपके आगे फरीद साहब की बानी रखी जा रही हैः

फरीदा गरब जिन्हां वड्याईआं धन जोबन आगाह।।
खाली चले धणी स्यों टिब्बे ज्यों मींहाह।।

महमूद गजनवी ने हिन्दुस्तान पर सत्तरह–अठारह हमले किए, उसने ग़नीमत का माल बहुत सोना–चाँदी लूटा। हिन्दुस्तान किसी वक्त सोने की चिड़िया कहलाता था लेकिन ऐसे लोगों ने बाहर से हमले करके इस चिड़िया के पंख चुरा लिए। सब मुल्क सदा गरीब नहीं होते और न सदा अमीर ही रहते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि कई मुल्क जो आज गरीब हैं, हो सकता है पहले वे अमीर हों। आज जो मुल्क अमीर हैं, हो सकता है किसी वक्त वे भी किसी के अधीन हों और गरीब हों।

इसी तरह महमूद गजनवी ने जब बहुत सारा माल लूट लिया, जब उसका आखिरी वक्त आया तो उसने अहलकारों को हुक्म दिया, ''लूटे हुए सामान को बाहर सजा दें, नुमाइश लगा दें, मैं देख लूँ कि मेरे पास कितना धन–दौलत है। जिस धन–दौलत की खातिर मैंने लाखों बच्चे यतीम किए, लाखों औरतों को विधवा बनाया, क्या वह सामान आज मेरे साथ जाएगा? अंत समय में मेरे हाथ कफन से बाहर निकाल देना और यह नारा लगानाः

जुल्म साथ है खाली हाथ है

मेरे साथ जो कुछ होगा मैं उसका भुगतान तो करूंगा ही क्योंकि मैंने जो कर्म किए हैं, उन्हें मैंने ही भोगना है लेकिन मेरे जाने के बाद दुनिया को यह ज्ञान हो जाए कि जब महमूद गजनवी इस संसार से गया तो उसके दोनों हाथ खाली थे।''

फरीदा तिनां मुख डरावने जिनां विसारिओन नाओं।।
ऐथै दुख घणेरया अग्गै ठौर न ठाओं।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''उनके मुँह देखने के काबिल नहीं, उनकी शक्लें डरावनी हैं जिन्होंने इंसानी जामा धारण करके परमात्मा का सिमरन छोड़ दिया, परमात्मा की याद भुला दी उन्हें इस संसार में कभी भी सुख नहीं मिलता। वे कभी विषय–विकारों के जाल में फँस जाते हैं, कभी लड़ाई–झगड़ों के जाल में फँस जाते हैं, कभी काम–क्रोध की लहरों में बह जाते हैं। इन चीजों से हम अपनी शान्ति भंग कर लेते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

जो प्रभ किए भगत ते वाहंज तिनसे सदा डराने रहिए

इस संसार में उन लोगों से डरना चाहिए जो प्रभु की भक्ति से दूर चले गए हैं, **प्रभु का हुक्म**, प्रभु के अस्तित्व को नहीं मानते। प्रभु के भक्त सबके अंदर प्रभु को ही देखते हैं, वे सबको प्रभु समझकर ही प्यार करते हैं। सन्तों की नज़र आत्मा पर होती है, बुराई हमारे मन के अंदर है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नामहीन नकटे नर देखे तिन घस घस नाक वडीजे

आप कहते हैं, ''हमने दरगाह में इन आँखों से देखा है कि काल आगे जाकर उन्हें सजा देता है कि आपको इंसान का जामा बड़ा उत्तम मौका दिया था। जो काम आप पशु–पक्षियों के जामें में नहीं कर सकते वह काम प्रभु की भक्ति है जिसे आप इंसानी जामें में ही कर सकते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

दिवस गवाया खेल के रात गवाई सोए
हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए

फरीदा पिछल रात न जागयों जीवंदड़ों मोयों।।
जे तैं रब विसारया त रब न विसरयों।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जो इंसान का जामा पाकर, भक्ति मार्ग में पैर रखकर रात को नहीं जागता, पिछली रात उठकर

परमात्मा के साथ मिलाप नहीं करता, आप उसे जिंदा न समझें मरे हुए और उसमें कोई फर्क नहीं होता।'' पिछली रात इसलिए कहा गया है कि चौरासी लाख योनियां भोगने के बाद हमें इंसान का जामा मिला है अगर हम इस जामें में बैठकर सिमरन नहीं करते, परमात्मा के साथ मिलाप नहीं करते तो पता नहीं हमें कितना समय कब्र में जाकर सोना पड़ेगा। वहाँ से हमें किसी ने नहीं उठाना। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

वद सुख रैनड़िए पिर प्रेम लगा
घट दुःख निंदड़िए पिर स्यों सदा पगा

रात से कहते हैं, ''तू बढ़ जा। हमारा प्यारे के साथ प्यार लगा हुआ है और नींद से कहते हैं कि तू कम हो जा अगर हमें नींद ने आकर घेर लिया तो हमारा परमात्मा के साथ मिलाप टूट जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

चिड़ी चुकी पोह फुटी वगन बहुत तरंग
अचरज रूप संतन रचे नानक नामें रंग

सुबह होते ही पक्षी अपनी–अपनी बोली में परमात्मा का जिक्र करते हैं, मालिक के प्यारे उस वक्त परमात्मा के साथ मिलाप कर लेते हैं। दुनियादार माया के नशे में सोए होते हैं। जो पिछली रात परमात्मा की भक्ति में नहीं जागते उन्हें मरे हुए के समान ही समझें।

फरीदा कंत रंगावला वड्डा वेमुहताज।।
अल्लाह सेती रत्तां एह सचावां साज।।

फरीद साहब कहते हैं, ''परिपूर्ण परमात्मा कण–कण में व्यापक है वह किसी पर निर्भर नहीं, बे–मोहताज है। जो महात्मा मालिक के प्यारे, परमात्मा में मिल जाते हैं, उनका यही साज है, यही कर्मकांड है।'' वे कहते हैं, ''परमात्मा को यही मंजूर है कि आओ

भई! भक्ति करो, नौं द्वारे खाली करके मेरे साथ मिल जाओ। वे परमात्मा में इस तरह मिल जाते हैं जैसे पतासे के अंदर खंड है।

फरीदा दुख सुख इक कर दिल ते लाह विकार।।
अल्लाह् भावै सो भला तां लब्भी दरबार।।

हम देह नहीं आत्मा हैं। यह देह तो हमें हमारे कर्मों का भुगतान करने के लिए मिली है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सम्पा देख न हरखिए विपत्त देख न रोए
ज्यों सम्पा त्यों विपत्त है विध्ने रचया सो होए

आप दुःख को देखकर घबराएं नहीं धीरज रखें, सब्र रखें और सुख को देखकर अपनी बुद्धिमानी न दौड़ाएं कि हम समझदार थे, शायद, यह सुख हमें हमारी बुद्धिमानी से ही प्राप्त हुआ है ऐसा नहीं है अगर दुःख आता है तो वह हमारे कर्मों की वजह से ही आता है और अगर सुख आता है तो वह भी हमारे कर्मों की वजह से ही आता है। मालिक दरवाजा उनके लिए खोलता है जो दुःख–सुख को बराबर समझकर उसे दिल पर नहीं लगाते। वे समझते हैं कि यह सब कुछ **प्रभु के हुक्म** से ही होता है।

मौत–पैदाइश प्रभु के हुक्म में ही होती है। **प्रभु के हुक्म** के बिना पत्ता तक नहीं हिलता। हम जीव इस दुखी संसार में परेशान क्यों होते हैं? जब हम सब कुछ के कर्त्ता–धर्त्ता खुद बन जाते हैं अगर सुख आ गया तो उस वक्त हम परमात्मा का शुक्र नहीं करते बल्कि ऐसा कहते हैं कि यह हमारी समझदारी से आया है। आप देखें, वही समझदारी होती है, वही घर होता है, वही हमारा दिमाग है, वही हमारा वजूद है लेकिन दुःख भी आ जाता है। दुःख के समय हम परमात्मा में दोष निकालते हैं और परमात्मा को छोड़ जाते हैं कि वह परमात्मा कहाँ है?

एक बूढ़ी औरत बीमार थी, बहुत दुःखी थी, उससे बिस्तर पर लेटे हुए हिला–जुला नहीं जाता था, वह टट्टी–पेशाब भी नहीं जा सकती थी। घरवालों ने सोचा अगर यह परमात्मा को याद करे तो अच्छा है। घर के लोगों ने उस बूढ़ी औरत से कहा कि तू परमात्मा को याद किया कर। बूढ़ी औरत ने नाराज होकर उनसे कहा, ''वाहेगुरु ने तो मुझे इतने दुःख दिए हैं, इतनी बीमारियाँ लगाई हैं।'' इसलिए सन्त हमें प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ऐसे आदमियों के लिए दरवाजा किस तरह खोले?

फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वज्जेंह् नाल।।
सोई जीउ न वजदा जिस अल्लाह् करदा सार।।

फरीद साहब कहते हैं, ''हम दुनिया में एक–दूसरे की नकल करते हैं कि उसने यह किया है मैं भी करूँ। उसने काम भोगा है मैं भी काम भोगूं। वह नाम जपता है मैं भी नाम जपूं लेकिन अपने दिल से कुछ नहीं होता, एक–दूसरे को देखकर उत्साह करते हैं। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि तू अपने आपको भक्त कहलवाता है लेकिन जिस राह पर दुनिया चल रही है तू भी उसी कर्मकांड में फँसा हुआ है, उसी तरह नकल कर रहा है।''

अब फरीद साहब कहते हैं, ''मेरी समझ में आया है कि अल्लाह–भगवान जिसकी संभाल करता है, जिसके लिए अपना दरवाजा खोलता है वह जीव दुनिया की चाल नहीं चलता क्योंकि दुनिया की तो भेड़ चाल है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एक के पीछे दूसरा चलता है लेकिन उन्हें परमार्थ की कोई सूझ–बूझ नहीं होती। एक भेड़ खड्डे में चली जाए तो सारी उसके पीछे ही चली जाएंगी। बाड़े में आग लग जाती है, चरवाहा तरस खाकर भेड़ों को बाहर निकालते

हैं लेकिन भेड़ें सोसायटी नहीं छोड़ती, वहीं चली जाती हैं।'' जिन पर अल्लाह–भगवान मेहर करता है जिनसे अपनी भक्ति करवाना चाहता है वे जीव दुनिया की नकल नहीं करते।

फरीदा दिल रत्ता इस दुनी स्यों दुनी न कितै कंम।।
मिसल फकीरां गाखड़ी सो पाईऐ पूर करंम।।

फरीद साहब कहते हैं, ''दिल दुनिया में रच गया है। आज हम दुनिया की जिन वस्तुओं के लिए परेशान हुए बैठे हैं इनमें से कोई वस्तु हमारे साथ नहीं जाएगी। फकीरों की सभा, फकीरों का सतसंग ऊँचे भाग्य वालों को ही मिलता है अगर भाग्य न हो तो हम सतसंग में जाकर सो जाएंगे या वहाँ कोई नुख्स निकालकर चले आएंगे कि इनको बोलना नहीं आता, मैं ज्यादा पढ़ा–लिखा हूँ, मैं अच्छी तरह बोल सकता हूँ।''

अगर कोई पढ़ा–लिखा महात्मा सतसंग करता है तो हम कहते हैं कि यह बहुत अच्छा फिलॉस्फर है, इसको अच्छा बोलना आता है लेकिन सन्तों का मतलब जीवों के ऊपर दया करना है। सन्त सतसंग के वक्त जीवों के ऊपर अपने वचनों का अमृत छिड़क रहे होते हैं लेकिन भाग्यशाली जीव ही उनसे फायदा उठाते हैं। गुरु अमरदास जी महाराज कहते हैंः

अमृत भिन्नी देहोरी अमृत बरसे रामराजे

गुरु अमृत की गागर होता है उसके मुँह से अमृत ही बरसता है। गुरु जीवों के फायदे के लिए ही बोलता है। हम ऐसे गुरु की संगत तब ही पा सकते हैं जब हमारे पूरे कर्म हों। जिनके पूरे कर्म हैं वही संगत के अंदर आते हैं। महात्मा उन्हें जो कहते हैं, वे उसे **प्रभु का हुक्म** समझते हैं। ऐसे भी जीव होते हैं जो उन महात्माओं के अंदर नुख्स निकालकर चले आते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

कोई आए भाव ले कोई ले अभाव
सन्त दोहां नू पोसदे भाव न गिने अभाव

कोई प्रेम लेकर आता है, कोई अभाव लेकर आता है लेकिन सन्तों का प्यार दोनों के लिए एक जैसा होता है। वही फायदा उठाएगा जो उनकी बात पर एतबार करेगा।

गुरु बेचारा क्या करे जे सिखण में चूक
अंधे एक न लग्गी ज्यों वाँस बजाई फूँक

जिनको संगत का रस आ गया उन्होंने दुनिया की परवाह नहीं की, सतसंग के रस को नहीं छोड़ा।

पहलै पहरै फुलड़ा फल भी पच्छा रात।।
जो जागंन लहंन से साईं कंनों दात।।

जिस तरह बाग के अंदर पौधे हैं, पहले पौधे पर फूल आता है, फूल के बाद फल आता है। रात के पहले हिस्से में जो भजन किया जाता है वह फूल के समान है और पिछली रात का भजन फल के समान है। हम शाम को जो भजन करते हैं उसे यह न समझें कि हमारा वह भजन बेकार जाएगा, मालिक की याद में बिताया हुआ एक सेकिंड भी लेखे में होता है।

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''जब जीव सब तरफ से ख्याल को हटाकर शब्द–धुन सुनता है तब उसकी हाजिरी सच्चखंड में लग जाती है।'' जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमें बहुत प्यार से बताते हैं कि जब भी कोई जीव शब्द–नाम की कमाई के लिए बैठता है तब आकाश से देवता भी उसकी तरफ झाँकते हैं कि कलयुग में यह जीव भजन में बैठा है! मालिक के साथ जुड़ने की तैयारी में लगा हुआ है!

पिछली रात का महत्व इसलिए है कि हम सोकर उठे होते हैं उस वक्त आत्मा ने शरीर में नया–नया प्रवेश किया होता है। उस समय गलियों–बाजारों में शोर नहीं होता, हम दिन भर के ख्याल भूले होते हैं। उस वक्त सुरत को शरीर के रोम–रोम से निकालना आसान हो जाता है, हम वह फल प्राप्त कर लेते हैं।

किसी आदमी ने बाबा जयमल सिंह जी के पैरों पर माथा टेका, वे नाराज हुए क्योंकि सन्त अपने ध्यान में जा रहे होते हैं। जीव उनके पैरों पर गिर जाते हैं। कई बार गिरने का खतरा होता है। नज़दीक खड़े एक प्रेमी ने कहा, ''महाराज जी, दया करो।'' बाबा जी ने कहा, ''दया का वक्त होता है। मैं हर सतसंगी के पास सुबह तीन बजे दया की टोकरी लेकर जाता हूँ जो जागते हैं वे दात ले लेते हैं, जो सोए होते हैं मैं उनके पास से खड़ा होकर वापिस आ जाता हूँ।''

दातीं साहिब संदीआं क्या चलै तिस नाल।।
इक जागंदे ना लहन इकना सुत्तयां देय उठाल।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''दुनिया दाता को छोड़कर दात(दान) की भक्ति करती है, दातों के साथ प्यार करती है। इसमें से कोई ऐसी वस्तु है जो हम साथ ले जाएंगे? एक जागते हुए भी उसको प्राप्त नहीं करते और एक ऐसे भी हैं जिनके दिल में सन्तों से मिलाप की तड़प है।''

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम प्रभु की खोज में लगे हुए हैं तो वह वक्त भी भक्ति में गिना जाएगा।''

हुजूर महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी, कुदरत का उसूल है, जरूर मिलती है।'' परमात्मा हमारे मिलाप का इंतजाम जरूर करता है।

आप देख लें, किस तरह हुजूर कृपाल को बाबा सावन सिंह जी सात साल पहले से ही दर्शन देते रहे। क्या यह सोए हुए को उठाकर देने वाली वस्तु थी? बाबा जयमल सिंह जी के आश्रम से कोहमरी पहाड़ का पाँच–छह सौ किलोमीटर का फासला था। उन्होंने वहाँ जाकर सावन सिंह जी को दात देने के लिए ढूंढा।

जब बाबा जयमल सिंह जी वहाँ से गुजरे तो महाराज सावन सिंह जी ने सोचा कि कोई बुजुर्ग आदमी कचहरी में आया है, शायद! कमिश्नर की कचहरी में पेंशन का काम होगा। जब बाबा जयमल सिंह जी वहाँ से निकले तो उन्होंन बीबी रूक्को से कहा, ''हम इस सरदार की खातिर यहाँ आए हैं।'' बीबी रूक्को ने कहा, ''इन्होंने तो आपको सत श्री अकाल तक भी नहीं बुलाई।'' बाबा जयमल सिंह जी ने बीबी रूक्को से कहा, ''यह आज से चौथे दिन अपने सतसंग में आ जाएगा। स्वामी जी इससे काम लेना चाहते हैं, इसे पता नहीं कि इसके भाग्य में क्या है?''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि वास्तव में मैं चौथे दिन बाबा जयमल सिंह जी के सतसंग में चला गया। जब बाबाजी का सतसंग सुना तो मेरे अंदर से बाईस साल के शक–शकूक एक–एक करके निकल गए। मैंने नाम लेने के लिए गर्दन नीची कर दी, बाबा जयमल सिंह जी ने भरपूर कर दिया।

यही हालत इस गरीब आत्मा की थी। मुझे न कोई महाराज कृपाल का प्रशंसा करने वाला मिला और न ही कोई उनकी निन्दा करने वाला मिला। क्या यह कौतुक नहीं था कि पाँच–छह सौ किलोमीटर की दूरी से कोई साधु किसी बंदे को भेजकर यह कहलवाए कि महाराज जी ने आपसे मिलने के लिए आना है। किसी इंसान को महाराज समझ लेना बड़ा ही मुश्किल होता है

क्योंकि वह भी हमारे जैसी क्रियाओं में लगा होता है लेकिन मेरी जिंदगी का बैकग्राउंड आप लोगों को पता है कि मैं कितने सालों से उनकी याद में बैठा था। मुझे दिन–रात किसी चीज़ की होश नहीं थी, मैं बचपन से ही पूरा नाम मिले बिना रातों को जागता रहा।

एक बंदा हर रोज मेरे पास रात को आठ बजे आता और दस बजे अपने घर चला जाता। इस तरह रोज रात को हमारी दो घंटे की महफिल थी। यह बात हँसने वाली भी है और इसमें ज्ञान भी है। एक रात मैं लेटा हुआ था। मैंने सोचा कि कोई वक्त आएगा तू मर जाएगा, तेरे आस–पास लोग बैठे होंगे। तू सिर नहीं हिला सकेगा, हाथ नहीं हिला सकेगा। मैं इन ख्यालों में था कि वह बंदा आ गया।

पहले मैं उठकर हमेशा उसे सतश्री अकाल बोलता, जी आया नूं बोलता और उसे प्यार से बिठाता लेकिन उस दिन मैंने उसे कुछ नहीं कहा और न ही मुझे पता लगा कि वह प्रेमी मेरे पास आकर खड़ा हो गया है। आखिर वह बोला आज क्या बात है, क्या आप सो गए हैं? जब उसका बोल सुना तो मुझे होश आई। मैं उठा और मैंने कहा कि भाई! मैं सोया नहीं था, मैं शेखचिल्ली की तरह मरा हुआ था। तेरी आवाज सुनकर बोल पड़ा। अब आप सोचकर देखें, वह कौनसी तड़प थी जो नौजवान उम्र में ऐसे ख्याल पैदा करे कि तू मरा हुआ है? बंदे पास ही बैठे नजर आएं।

हुजूर को यह तड़प मंजूर थी, हुजूर आए। जिसको रब मानना हो बंदा उससे यह न पूछे कि तेरी क्या जाति है, तू त्यागी है या गृहस्थी है, तू कहाँ रहता है? मैंने अपने गुरुदेव से ऐसे सवाल नहीं किए। उन्होंने मुझे जो रास्ता दिया, मैं ईमानदारी के साथ उस रास्ते पर चल सका। मैं उनका धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझ सोए हुए को उठाकर अपनी भक्ति में लगाया।

ढूढेंदीए सुहाग कू तौ तन काई कोर।।
जिन्हां नाओं सुहागणी तिन्हां झाक न होर।।

किसी ने फरीद साहब के पास आकर सवाल किया कि महाराज जी! हम बैठते भी हैं, खोज भी करते हैं इस रास्ते पर चलने की कोशिश भी करते हैं, पाप नहीं करते फिर भी हमें परमात्मा क्यों नहीं मिलता? हमें भी कोई पति मिले जिससे हमारी आत्मा सुहागन हो। फरीद साहब ने उससे कहा, ''देख प्यारेया, सुहागन दूसरे आदमी से उम्मीद नहीं करती कि वह मुझे कुर्ता–पायजामा लाकर देगा या खाने को लाकर देगा। पति भूखा है तो उसे उसमें भी सब्र है, पति जंगल में है तो वह उसकी सेवा करके खुश है। सुहागनें किसी से कोई उम्मीद नहीं रखती।''

इसी तरह जो गुरु की भक्ति करता है वह किसी देवी–देवता से कोई उम्मीद नहीं रखता कि वह मेरी मदद करे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि चाहे सुख है, चाहे दुख है वह गुरु का ध्यान करता है ताकि कर्म जल्दी कट जाएं।

आप कहते हैं, ''प्यारेया, तू अभी वैसी सुहागन नहीं बनी। सुहागनें अपने पति के अलावा किसी से उम्मीद नहीं रखती। जो गुरु के भक्त बन जाते हैं वे गुरु के अलावा किसी से कोई उम्मीद नहीं रखते।'' मैं अपने गुरु के आगे यह लफ्ज़ उनकी दया से ही बोल सका कि मैंने कोई परमात्मा नहीं देखा, खुदा नहीं देखा, कोई रहीम नहीं देखा, मैंने तो तुझे ही देखा है, मेरा तुझमें ही विश्वास है।

आप सोचकर देखें, जिससे आप पहले न मिले हों, जिसे आप न जानते हों उस पर इतना बड़ा विश्वास कर लेना जीव की ताकत नहीं, इसमें भी उनका ही हाथ था।

फरीद साहब कहते हैं, ''प्यारेया, सुहागनों की ये हालत होती है कि वे किसी दूसरे से उम्मीद नहीं करती कि वह आकर मेरी मदद करे। उन्हें गुरु की भक्ति, गुरु के ऊपर विश्वास होता है।''

सबर मंझ कमाण ए सबर का नीहणो।।
सबर संदा बाण खालक खता न करी।।

अब फरीद साहब उस प्रेमी को समझाते हैं, ''तू सब्र की कमान बना, संतोष से उसकी डोरी बना फिर जो भी बाण छोड़ेगा वह खाली नहीं जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गुरुमुख बोले सो थाए–पाए, मनमुख बोलया थाए न पाए

जब हम सब्र–संतोष से परमात्मा की भक्ति करते हैं तब ऐसी आत्मा के मुँह से जो आवाज निकलती है, उसे परमात्मा सुनता है।

जो बोले पूरा सतगुरु सो परमेश्वर सुणया
सोई वरतेया जगत में घट घट में रूनया

दुनिया में सन्तों का विरोध करने वाले भी बहुत होते हैं, सन्त विरोधता करने वालों के साथ भी प्यार करते हैं। सन्त परमात्मा के आगे यह अरदास करते हैं कि हे परमात्मा, तू इन लोगों को सब्र बख्श, इनके ऊपर भी दया कर। जो किसी को बद्दुआ दे, उसे सब्र वाला नहीं कहा जा सकता अगर गरीबी आ गई, उस वक्त रब में नुख्स निकाला तो उसे संतोषी नहीं कहा जा सकता।

हमें पता नहीं कि परमात्मा से क्या माँगना है? हम जो वस्तुएं माँगते हैं वे हमें मिल जाती हैं फिर उन वस्तुओं से दुःख और परेशानियाँ पैदा हो जाती हैं तब हम घबराते हैं। फरीद साहब उससे कहते हैं कि प्यारेया, तू सब्र की कमान और संतोष से उसकी डोरी बना फिर परमात्मा तेरे बाण को बेकार नहीं जाने देगा।

सबर अंदर साबरी तन एवैं जालेन।।
होन नजीक खुदाय दै भेत न किसै देन।।

महात्मा कुदरत के नियमों के मुताबिक बिल्कुल साधारण जिंदगी जीते हैं, उनमें कमाल का सब्र और दृढ़ता होती है। वे कभी भूलकर भी किसी के आगे यह नहीं कहते कि हमें भगवान मिला है, हम भगवान के दूत हैं या हम रब–रहीम हैं। अगर तन पर कोई कष्ट है तो उसे झेल लेते हैं क्योंकि सब्र तभी हो सकता है अगर हम कष्ट को झेल लें।

रोम के राजा के इतिहास की एक घटना है कि एक बार उसके दरबार में सब्र और संतोष के ऊपर सवाल आया। राजा ने अपने मंत्रियों से पूछा, ''सब्र और शुक्र का क्या मतलब है?'' राजा के दरबार में बहुत पढ़े–लिखे बुद्धिमान लोग थे। उन सबने उस सवाल का जवाब अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार देने की कोशिश की लेकिन राजा की तसल्ली नहीं हुई। राजा ने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे भी इस बारे में पूछा कि इस सवाल का क्या मतलब है? वज़ीर ने सब्र और संतोष के बारे में समझाने की कोशिश की लेकिन वह भी राजा की तसल्ली नहीं करवा सका।

राजा ने अपने वज़ीर से कहा, मैंने सुना है कि भारत में औरंगजेब एक विद्वान और पढ़ा–लिखा बादशाह है। उसके दरबार में बहुत अच्छे मंत्री हैं। तुम वहाँ जाकर उनसे ये सवाल पूछो शायद, वे तुम्हें सही जवाब दें अगर वे लोग तुम्हें संतुष्ट न कर सकें तो तुम वहाँ एक फकीर को ढूंढना जिसका नाम सरमद है। मैंने सुना है कि सरमद बहुत उच्चकोटि के फकीर हैं, वह इस सवाल का जवाब दे पाएंगे। तुम भारत जाओ और इस सवाल का जवाब लेकर आओ कि सब्र और संतुष्ट होने का क्या मतलब है?

वज़ीर भारत आया और औरंगजेब से मिला। वज़ीर ने औरंगजेब से सब्र और संतोष का सवाल पूछा। औरंगजेब बहुत विद्वान था उसने वज़ीर को समझाने की कोशिश की लेकिन वज़ीर उसके जवाब से संतुष्ट नहीं हुआ। वज़ीर ने और लोगों से भी बातचीत की सबने बेहतर तरीके से समझाने की कोशिश की लेकिन वज़ीर संतुष्ट नहीं हुआ।

आखिर वज़ीर ने लोगों से सरमद फकीर के बारे में पूछा तो वहाँ के लोगों ने बताया कि औरंगजेब बहुत कट्टर धार्मिक किस्म का व्यक्ति है। औरंगजेब ने बहुत सारे साधु–फकीरों को कत्ल करवा दिया है कि मुझे करामात दिखाओ लेकिन सन्त **प्रभु के हुक्म** में रहने को ही बड़ी करामात समझते हैं। औरंगजेब ने सरमद को कैद करके कई ताले लगाकर जेल में रखा हुआ है। सरमद को कोड़े लगते हैं, सरमद को खाने के लिए एक रोटी, पीने के लिए एक प्याला पानी और थोड़ा सा नमक मिलता है। उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं, उसे ढूंढना बहुत ही मुश्किल काम है।

आखिर वज़ीर पूछते–पूछते सरमद फकीर के पास पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने आवाज दी अंदर रोशनी नहीं थी। सरमद ने सलाखों के पास आकर कहा, ''मुझे किसने आवाज दी है?'' तभी कोड़े लगाने वाला जल्लाद आ गया जिसकी बहुत भयानक शक्ल थी उस जल्लाद ने सरमद को बहुत कोड़े लगाए लेकिन सरमद ने चुप करके उन कोड़ो को बर्दाश्त कर लिया। तभी एक आदमी कोदरे की रोटी और एक प्याला पानी लाया सरमद ने अल्लाह ताला को भोग लगवाकर खुश होकर वह रोटी खा ली।

फिर वज़ीर ने सरमद से अपना सवाल पूछा, ''सब्र और संतोष का क्या मतलब है?'' सरमद ने कहा कि मैं तुम्हें इस

सवाल का जवाब दे चुका हूँ लेकिन तुम्हें समझ नहीं आया। तुम कल एक बड़ी सी चादर और पानी से भरी हुई चमड़े की मशक लेकर मेरे पास आना फिर मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। वज़ीर ने कहा कि यहाँ ताले लगे हुए हैं। सरमद ने कहा जो मालिक तुझे रोम से यहाँ लेकर आया है वह तुझे अंदर भी ले आएगा।

अगले दिन जब वज़ीर वहाँ पहुँचा कुदरत ने साथ दिया, ताले वगैरह खुल गए। सरमद ने उस पानी से हाथ–मुँह धोया, चादर से बदन को साफ किया और कहा, ''भई प्यारेया, तू यहीं मेरे पास अभ्यास में बैठ जा, मैं भी बैठ जाता हूँ। मैं जब तुझे उठाऊँ तभी उठना है, बोलना नहीं।'' वहाँ वज़ीर ने देखा कि परमात्मा के दरबार में दूसरी आत्माएं सरमद से बातचीत कर रही थी कि औरंगजेब तुझे इतने कष्ट दे रहा है तू कहे तो हम इसकी बादशाही को नष्ट कर सकते हैं। हम दिल्ली की ईंट से ईंट बजा सकते हैं तू जो कहे हम करने के लिए तैयार हैं लेकिन सरमद ने सबको शांत रहने के लिए कहा कि शांति में ही फायदा है। औरंगजेब और उसके लोगों को कोई नुकसान न पहुँचाया जाए उसे माफ कर दें क्योंकि वह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है?

वज़ीर यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि सरमद परमात्मा का ही रूप है। सरमद के पास परमात्मा की सारी शक्तियां हैं फिर भी उनके अंदर परमात्मा की रज़ा में इतना सब्र है वे नहीं चाहते कि औरंगजेब को कोई नुकसान पहुँचाया जाए। जब सरमद वज़ीर को नीचे लाए तो सरमद ने वज़ीर से पूछा, ''अब तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब मिल गया? अगर तुम्हारे पास परमात्मा की दी हुई सब शक्तियां हैं लेकिन तुम उन शक्तियों का इस्तेमाल नहीं करते तो इसका मतलब है कि तुम परमात्मा की रज़ा में संतुष्ट हो।''

शेख फरीद साहब कहते हैं कि पूर्ण गुरु परमात्मा के प्यारे होते हैं, उनमें बहुत सब्र होता है। वे परमात्मा के पास रहते हैं फिर भी लोगों को यह नहीं बताते कि वे परमात्मा से मिले हुए हैं। जैसे सरमद वज़ीर को ऊपर लेकर गए उसे दिखाया कि सब कुछ परमात्मा की रज़ा में हो रहा है तो हमें भी परमात्मा की रज़ा में संतुष्ट रहना चाहिए।

जिस तरह सरमद ने वज़ीर को सच्चाई दिखाई थी उसी तरह बाबा सावन सिंह ने महाराज कृपाल को सच्चाई दिखाई थी। जब बाबा सावन सिंह जी अपने जीवन के अंत समय में बहुत तकलीफ से गुजर रहे थे तब उनके प्यारे बेटे कृपाल सिंह जी हर रोज महाराज सावन सिंह जी से यह प्रार्थना कर रहे थे कि आप अपनी तकलीफ दूर करें, नामदान का बाकी काम भी आप ही करें।

एक दिन बाबा सावन सिंह जी की मौज उठी तो उन्होंने कृपाल सिंह जी से कहा, ''तू मेरे पास आकर अभ्यास में बैठ और खुद ही देख ले आज सच्चखंड में फैसला होने जा रहा है।'' महाराज सावन सिंह जी ने तवज्जो दी, कृपाल सिंह जी अंदर चले गए वहाँ देखा कि पहुँचे हुए सारे सन्त गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, मौलाना रूम, शमस तबरेज इस बात पर सहमत हैं कि अभी कुछ समय और बाबा सावन सिंह जी को संसार में रहने दिया जाए लेकिन बाबा जयमल सिंह जी नहीं माने। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''इस समय हालात बहुत खराब हैं, अब मैं इन्हें संसार में नहीं रहने दूँगा।''

हम अपने अंदर झाँककर देख सकते हैं कि हम दिल में क्या लेकर अभ्यास में बैठते हैं? मालिक अंदर बैठा है, हम उसे धोखा नहीं दे सकते। इसी तरह जब मंसूर को सूली पर चढ़ाने लगे तब

जल्लादों ने कहा कि तेरे हाथ काटने का हुक्म मिला है। मंसूर ने कहा, ''काट लो, मुझे इन हाथों की जरूरत नहीं मेरे पास रूहानियत के वे हाथ हैं जिनसे मैं अर्श पर हाथ डालकर चढ़ सकता हूँ।'' फिर जल्लादों ने कहा कि तेरे पैर काटने का हुक्म है। मंसूर ने कहा, ''मुझे इन पैरों की जरूरत नहीं, मेरे पास रूहानी पैर हैं जिनसे मैं सचखंड पहुँच सकता हूँ।'' फिर जल्लादों ने कहा कि तेरी आँखें निकालनी हैं। मंसूर ने कहा, ''निकाल लो, मुझे इन आँखों की जरूरत नहीं, मेरे पास वे आँखें हैं जो परमात्मा को देखती हैं।'' सब कुछ काटकर जब उन्होंने कहा कि तेरी जुबान काटनी है तब मंसूर ने कहा, ''एक मिनट रूको, मैं इस जुबान से थोड़ा सा अपने गुरुदेव का, परमात्मा अल्लाह ताला का शुक्र कर लूँ कि यह मेरी ताकत नहीं थी कि मैं इस इम्तिहान में पास हो जाता, यह सब तेरी दया है कि मैं पास हो रहा हूँ।''

परमात्मा ने मंसूर से कहा, ''तू जो कहे मैं इन्हें वह सजा दे सकता हूँ।'' मंसूर ने कहा, ''मैं तो यह कहूँगा कि इन पर भी दया करें ताकि ये मुझे पहचान लें कि मेरे दिल में इनके लिए क्या है?''

गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया गया, उनके सिर में गर्म रेत डाली गई, गर्म पानी में बिठाया गया और हर तरह की अमानवीय यातनाएं दी गई। उनका मित्र मियाँ मीर उनके पास गया और बोला, ''गुरुदेव, आप मुझे हुक्म दें, मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा सकता हूँ।'' गुरु अर्जुनदेव जी ने उससे कहा, ''यह तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन मेरे लिए **प्रभु का हुक्म** मानना जरूरी है।''

तेरा भाणा मीठा लागे नाम पदार्थ नानक माँगे

जिस चंदू सवाई के हुक्म से गुरु अर्जुनदेव जी को कष्ट दिए जा रहे थे, उस घर की बहू गुरु अर्जुनदेव जी की नामलेवा थी।

जब बहू को पता लगा तो वह रात के समय घर से निकली कि मैं गुरु साहब के दर्शन करके आऊँ। जिसके गुरु के साथ इस तरह का सुलूक हो रहा हो वह बंदा क्या नहीं करता। सिपाहियों ने उस औरत को रोक लिया। उस औरत ने सिपाही के पैर पकड़कर कहा, ''इस समय मैं बहुत दुःखी हूँ, मुझे गुरु साहब के दर्शनों के लिए जाने दिया जाए।'' उसके पास जो भी गहने थे उसने सिपाहियों को दे दिए। वहाँ एक महात्मा ने कथन किया हैः

भाणा वरत गया आज लाहौर ऊत्ते, सोहणी जिंदड़ी दुखड़े सही जांदी
तत्ती लौ उत्ते बैठे गुरु अर्जुन, ते तत्ती रेत सीस ते पई जांदी
ऐस वेलड़े थम्मियां कौन देवे, मेरी अंदरों जिंदड़ी ढई जांदी

सबर एह सुआओ जे तूं बंदा दिढ़ करेंह्।।
वध थीवह दीआओ टुट न थीवह् वाहड़ा।।

फरीद साहब कहते हैं, ''उसी सब्र का फायदा है जिस पर वह आखिरी वक्त तक दृढ़ रहे। ऐसा न हो जैसे दरिया का किनारा टूट जाता है तो वह सब कुछ बहाकर ले जाता है। उसी तरह कहीं सब्र रखता–रखता लोगों को बद्दुआ देने लग जाए, करामातें दिखाने लग जाए तो ऐसे सब्र का भी क्या फायदा?''

एक महात्मा जब बाजार जाते तो रास्ते में एक वेश्या का घर था। महात्मा जब उस रास्ते से निकलते तो वेश्या उनसे सवाल करती, ''महात्मा जी! मुँह पर दाढ़ी है या झाड़ी है?'' महात्मा चुप रहते। जब महात्मा का अंत समय आया तो उन्होंने उस वेश्या को बुलाकर कहा, ''बेटी, आज तू वह सवाल कर?'' वेश्या ने कहा कि पहले तो आपने जवाब नहीं दिया? महात्मा ने कहा कि मन का क्या भरोसा है कब गिरा देगा, इस समय मेरी चिता तैयार है, मैं अपनी दाढ़ी साबुत लेकर जा रहा हूँ।

फरीद साहब की जिंदगी की एक जबरदस्त घटना है। आप अपने गुरु के चरणों में सेवादार के रूप में काम करते थे। आप सुबह पानी लाकर गरम करते फिर अपने मुर्शिद को नहलाते। उस समय आज की तरह बिजली के साधन नहीं थे, लोग आग जलाया करते थे। एक दिन फरीद साहब के घर की आग बुझ गई, उस समय आज की तरह माचिस वगैरह नहीं थी।

नज़दीक ही एक वेश्या का घर था। उसके घर से हुक्के की आवाज आ रही थी, नौकरों ने हुक्के में आग रखी हुई थी। फरीद साहब वेश्या के घर चले गए। वेश्या आपको हमेशा ही काम भरी आँखों से देखती। वेश्या ने फरीद साहब से कहा, ''मेरे पास बहुत लोग आते हैं लेकिन तू कभी नहीं आया।'' फरीद साहब ने अपनी आँखें नीचे कर ली और अपने गुरु का ध्यान करने लगे।

वेश्या ने सोचा कि मैं इस मौके से फायदा उठाऊँ। उसने फरीद साहब से कहा, ''तू आज कैसे आया है?'' फरीद साहब ने कहा, ''हमारी आग बुझ गई है, मैं आग लेने आया हूँ। मैंने अपने मुर्शिद को स्नान करवाने के लिए पानी गर्म करना है।'' वेश्या ने कहा कि यहाँ आग मुफ्त नहीं मिलती। फरीद साहब ने कहा, ''बहन जी, क्या मोल लेंगी?'' वेश्या ने कहा, ''आँख।''

फरीद साहब ने किसी तरफ नहीं देखा, ऊँगली डाली और अपनी आँख निकालकर उसके आगे रख दी। यह देखकर वेश्या की आत्मा अंदर से काँप गई कि मैंने तो इससे मजाक किया था लेकिन यह मेरे ख्याल को नहीं समझा, इसने तो सचमुच आँख निकालकर मेरे हाथ पर रख दी।

फरीद ने सोचा कि मुर्शिद को पता न लग जाए इसलिए उन्होंने जल्दी से आँख पर पट्टी बाँध ली। पानी गर्म किया, मुर्शिद के आगे

रखा। मुर्शिद ने फरीद की तरफ देखकर कहा, ''ओ फरीद, तूने पट्टी क्यों बाँधी है?'' फरीद ने कहा, ''महाराज जी, आँख आई हुई है।'' हम पंजाबी लोग आँख दुखती हो तो यही कहते हैं कि आँख आई हुई है। मुर्शिद ने कहा, ''बेटा, जब आँख आई है तो पट्टी क्यों बाँधी है, पट्टी खोल दे।'' यह सहज–स्वभाव ही मुर्शिद के मुँह से निकला था, देखा तो वह आँख दूसरी आँख जैसी थी।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कुदरत ही उनका रूप धारण करके कारोबार करने लग जाती है क्योंकि सन्तों के मुँह से निकला हुआ बाण परमात्मा खाली नहीं जाने देता।''

फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीत।।
इकन किनै चालीऐ दरवेसावी रीत।।

साधु–सन्तों की नकल करनी बहुत मुश्किल है। लोग इनकी नकल तो करते हैं लेकिन दुनिया दिखावे की प्रीत करती है अगर परमात्मा ने धन–पदार्थ दे दिया तो कहते हैं कि देखो जी, परमात्मा की कितनी दया है अगर कुछ कमी पेशी हो गई तो परमात्मा में नुख्स निकालना शुरु कर देते हैं। बुल्लेशाह ने कहा थाः

जित्थे खड़के तवा परात ओत्थे गाइये सारी रात

फरीद साहब जंगलों में घूमते थे, शाह सरफ अच्छा कमाई वाला था। शाह सरफ ने सोचा देखा जाए कि फरीद जो बातें करता है वह इन पर चलता है या नहीं। शाह सरफ ने यज्ञ आरंभ किया कि साधु–सन्तों को खाना खिलाया जाए। शाह सरफ की पत्नी भी अच्छी कमाई वाली थी, उन्होंने सबको बुलावा भेजा। सबके लिए अच्छा खाना बनाया लेकिन फरीद के लिए शाह सरफ की पत्नी ने बारह साल पुराने कड़वे चनों का भोग तैयार किया जिसमें नमक भी नहीं डाला। सबको खाना दिया सबने खुश होकर खाया।

फरीद साहब ने जब खाना मुँह में डाला तो वह खाया नहीं गया। शाह सरफ ने पूछा कि सबने खाना खा लिया तो उसे बताया गया कि सबने तो खाना खा लिया लेकिन फरीद साहब बैठे हैं। शाह सरफ ने फरीद साहब से कहा, ''आप खाना क्यों नहीं खा रहे?'' फरीद साहब ने कहा, ''प्यारेया, यह खाना कड़वा है और इसमें नमक भी नहीं है तू इसमें नमक तो डलवा दे।''

शाह सरफ की पत्नी ने कहा, ''मैंने तो यह खाना फकीरों के लिए बनाया है, मुझे क्या पता था कि यहाँ स्वादु भी बैठे हैं।'' उस वक्त फरीद साहब ने अपने आपसे कहा, ''ऐ मन! तू परमात्मा के साथ दिखावे की प्रीत करता है और नकल उन दरवेशों, रब के प्यारों की करता है। उन्हें जैसा मिला उन्होंने वैसा खा लिया।''

तन तपै तनूर ज्यों बालण हड वलंन।।
पैरीं थक्कां सिर जुलां मूं पिरी मिलंन।।
तन न तपाय तनूर ज्यों बालण हड न बाल।।
सिर पैरीं क्या फेड़या अंदर पिरी निहाल।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''अगर परमात्मा मिलता हो मैं पैरों के भार से चलते हुए थक जाऊँ तो सिर के भार चलने के लिए तैयार हूँ। मुझे अपनी हड्डियाँ तंदूर की भट्टी की तरह भी जलानी पड़ जाएं तो मैं उन्हें जलाने के लिए तैयार हूँ।''

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''देख प्यारेया, पैरों के भार चलने की, हड्डियाँ जलाने की और बाहर शरीर को इतने कष्ट देने की क्या जरूरत है? तू जिस परमात्मा से मिलना चाहता है वह जंगलों–पहाड़ों में नहीं वह प्रीतम तो तेरे अंदर बैठा है। तू बाहर तन को क्यों कष्ट देता फिरता है?''

हौं ढूंढेंदी सजणा सजण मैंडे नाल।।
नानक अलख न लखीऐ गुरमुख देय दिखाल।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं सज्जन को अच्छे–अच्छे मंदिरों में, अच्छे–अच्छे समाजों में, अच्छे–अच्छे कर्मकांडो में ढूंढती थी। मुझे पता नहीं था कि वह सज्जन परमात्मा चौबिस घंटे सोते हुए, जागते हुए, चलते हुए मेरे साथ ही चलता है।''

हम अलख परमात्मा को लख नहीं सकते। जब हम साधु–सन्तों के पास जाते हैं तो वे हमें प्यार से शब्द–रुप परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं, ज्योत के दर्शन करवा देते हैं। हमें अपने कर्मों के मुताबिक थोड़ी बहुत पूँजी जरूर मिलती है। सबके एक जैसे कर्म नहीं होते, मियाँ–बीवी का भी एक जैसा अनुभव नहीं होता।

यह गुरुमुखों की जायदाद है। गुरुमुखों के अंदर परमात्मा नाद–रूप, ज्योत रूप में विराजमान होता है, प्रगट होता है। अगर तू भी उनकी शरण में जाए तो तुझे बाहर के कष्ट सहने की जरूरत नहीं है, वे तुझे बता देंगे कि परमात्मा किस तरह तेरे अंदर बैठा है।

हंसा देख तरंदया बग्गां आया चाओ।।
डुब मुए बग बपुड़े सिर तल उपर पाओ।।

फरीद साहब कहते हैं, ''समुंद्र के अंदर हंस बहुत लम्बी तारी लगा रहे थे, हंस में लम्बी से लम्बी तारी लगाने की शक्ति होती है। कौए की उड़ान बहुत छोटी होती है। कौआ यहाँ से उड़कर थोड़ी देर बाद फिर बैठ जाता है। बगुले की तारी भी छोटी होती है। हंस तैर रहे थे जब बगुले ने हंस की नकल की पानी में तैरने लगा तो उसका सिर नीचे और टाँगे ऊपर आ गई, वह डूबकर मर गया।''

मस्ताना जी कहा करते थे, ''जो पाखंडी लोग कहते हैं कि मैं हाथ लगाकर प्रसाद कर दूँ लेकिन उनकी कमाई नहीं। यह किसी की आत्मा के साथ धोखा करना है, यह पाप सात जन्म तक नहीं उतरता। प्रेमी बहुत कद्र के साथ प्रसाद खाते हैं और कद्र के साथ रखते हैं।'' मैंने देखा है कि लोग अभी भी बाबा जयमल सिंह जी के हाथों का प्रसाद रखकर बैठे हैं, उन लोगों में कितना विश्वास है।

मैं जाणया वडहंस है तां मैं कीता संग।।
जे जाणों बग बपुड़ा जनम न भेड़ी अंग।।

गोईंदवाल में गुरु अमरदेव जी के पास एक पाखंडी साधु आया। गुरु महाराज ने भेष देखकर उसका अच्छा आदर–मान किया, गुरु महाराज उसे अपने बराबर बिठाते थे। गुरु साहब के पास अच्छे मनको की एक कीमती माला थी जिससे वह सिमरन किया करते थे। उस पाखंडी का माला की तरफ ध्यान था कि कब मौका लगे और मैं यह माला उठाकर ले जाऊँ।

एक दिन गुरु साहब उस माला को वहीं छोड़कर दूसरी तरफ चले गए। उस पाखंडी ने माला उठाकर अपने तकिए के नीचे रख ली। सब जगह ढूँढ़ा गया लेकिन माला कहीं नहीं मिली। हवा आई उसके तकिए से कपड़ा उड़ गया, सिक्खों ने माला देख ली और एक सिक्ख ने माला उठाकर कहा कि माला तो यहाँ पड़ी है।

बाबा सावन सिंह के आश्रम में एक भगवा कपड़ो वाला आया। उसने कहा कि आप सुबह तीन बजे प्रेमियों को उठाने के लिए घंटी बजाते हैं, आप यह सेवा मुझे देवें। बाबा जी ने उसे यह सेवा दे दी। वहाँ एक पटवारी रहता था, भगवा कपड़े वाला उस पटवारी से तीन सौ रूपये लेकर चला गया। बस! फिर घंटी किसने बजानी थी? वे हँसकर बताया करते थे, ''वह अभी तक नहीं आया।''

क्या हंस क्या बगला जा कौ नदर धरे।।
जे तिस भावै नानका कागों हंस करे।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''देखो भई प्यारेयो, परमात्मा की नजर में न कोई बगुला है न कोई हंस है। वह सबको एक जैसी तवज्जो देता है, सबका प्यार से पालन–पोषण करता है। उसके लिए बगुले से हंस बनाना क्या मुश्किल है, वह तो कौए को भी हंस बना देता है। सवाल तो हमारे अंदर शौक, विरह और तड़प का है। कौए की खुराक बिष्टा है। हमारी कौए की वृत्ति कब तक है जब तक हम विषय भोगते हैं लेकिन जब विषय–विकार भोगने वालो को 'शब्द–नाम' का रस आ जाता है तो वे हंस बन जाते हैं।''

सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास।।
एक तन लहरी गड थिआ सच्चे तेरी आस।।

आप कहते हैं, ''जीव एक है इसे फँसाने वाली पाँच ताकतें हैं। पाँच कर्म इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार चौदह हैं, इनके आगे चौदह देवता हैं। इसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं। ये सारी वृतियां मिलकर पचास बन जाती हैं।'' ये सारी वृतियां इस ताक में बैठी हैं अगर बंदा पाप करने से हटता है तो इसे पुण्य की तरफ लगा देती हैं। बुराई करने से हटता है तो भले कर्मों की तरफ लगा देती हैं। बंदा इनमें मस्त हो जाता है और इन वृत्तियों में से निकलने के लिए तैयार नहीं होता। इनमें से निकालने वाला गुरु, शब्द, नाम, परमात्मा है लेकिन यह उसकी आवाज को नहीं सुनता।

कृष्ण भगवान ने अर्जुन से कहा था, ''न हमें नेक कर्म छुड़ा सकते हैं और न बुरे कर्म बाँध सकते हैं। अच्छे कर्म सोने की

जंजीरे हैं और बुरे कर्म लोहे की जंजीरें हैं। अगर आज हम सड़क पर झाड़ू देते हैं, नेक कर्म करते हैं तो झाड़ू हाथ से निकल जाता है, महलों में बिस्तर लगा लेते हैं, हुकूमत की बागडोर मिल जाती है। आप जो कर्म करते हैं वे आपको भोगने ही पड़ेंगे।''

कवण सो अक्खर कवण गुण कवण सो मणीआ मंत।।
कवण सो वेसो हौं करी जित वस्स आवै कंत।।

किसी जिज्ञासु आत्मा ने आकर सवाल किया, ''फरीद साहब, वह कौनसा अक्षर है, कौनसा मंत्र है जिसे जपकर मैं पति–परमात्मा को बस में कर लूँ। मैं कौनसा वेश धारण करूं जिससे पति परमात्मा बस में आ जाता है?''आगे फरीद उत्तर देते हैं।

निवण सो अक्खर खवण गुण जिहबा मणीआ मंत।।
ऐ त्रै भैणे वेस कर तां वस्स आवी कंत।।

फरीद साहब कहते हैं, ''सन्त–सतगुरु जो मंत्र देते हैं, सोते–जागते, उठते–बैठते उसका जाप करें। बहनें, नम्रता रख, भरोसा रख, यही वेष धारण करने से कन्त तेरे बस में आ जाएगा।''

मत होंदी होय इयाणा।। ताण होंदे होय निताणा।।
अण्होंदे आप वंडाए।। को ऐसा भगत सदाए।।

वही कामयाब होता है जो मत होते हुए भी चालीस दिन के बालक जैसा बन जाता है, अक्ल को दखल नहीं देने देता। जहाँ अक्ल है वहाँ भक्ति कहाँ? जिस तरह सरमद के पास सब ताकतें थी, वह क्या नहीं कर सकता था? लेकिन उसने भाणां माना।

गुरु गोबिंद सिंह जी के बच्चे नीवों में चिन दिए, उनका घर–बार लूट लिया पिता को शहीद कर दिया फिर भी उन्होंने किसी को बद्दुआ नहीं दी। उनके चारों बच्चे शहीद हो गए तो लोगों ने बहुत

दर्द दिखाया। तो आपने कहा, ''परमात्मा ने मुझे जो बेटों की दात सौंपी थी, मैंने वह दात परमात्मा को सौंप दी है। आज मैं बेफिक्र होकर सो रहा हूँ।'' कह तो हम सारे ही लेते हैं लेकिन ऐसा करना बहुत मुश्किल है। जिसमें ऐसे गुण हैं वही भक्त कहलवा सकता है।

इक फिक्का ना गालाय सभना मैं सच्चा धणी।।

किसी को बुरा वचन न कहें, सबके अंदर वह सच्चा धनी मालिक बैठा है अगर हम किसी का दिल दुखाते हैं तो परमात्मा का ही दिल दुखा रहे हैं, हम परमात्मा के भक्त नहीं बन सकते।

हियाओ न कैही ठाहे माणक सभ अमोलवे।।
सभना मन माणक ठाहण मूल मचांगवा।।
जे तौ पिरीआ दी सिक हियाओ न ठाहे कहीदा।।

सबके दिल मानक की तरह हैं। सभी आत्माएं मानकों की तरह प्योर और पवित्र हैं अगर परमात्मा से मिलने की चाह है तो किसी का दिल न दुखाएं, दिल दुखाना सबसे बड़ा गुनाह है।

कई बार काल सेवादारों को आपस में लड़वा देता है। महाराज सावन सिंह जी वहाँ से गुजर रहे थे उन्होंने उसकी तरफ तवज्जो नहीं दी फिर महाराज जी वापिस आए उन्होंने कहा हाँ भई सुनाओ, एक ने कहा, ''इसने मुझे गाली दी तो मैंने इसे डंडा मारा।'' महाराज सावन ने कहा, ''गाली तुझे कहाँ लगी? डंडा मारा हुआ तो दिखाई दे रहा है; अगर तू न मानता तो हवा आई थी उड़ गई थी।''

फरीद साहब ने हमें इन श्लोकों में प्यार से समझाया है कि हमें **प्रभु के हुक्म** में रहना है। हमारी जिंदगी कैसी होनी चाहिए? आपने हमें जिंदगी भर सब्र–संतोष धारण करने की प्रेरणा दी है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम अपने जीवन को सफल बनाएं और प्रभु के हुक्म में रहें। ***

नौ

घटनाएं तो घटेंगी

5 फरवरी 1988 - 16 पी.एस. राजस्थान : DVD 537 (3)

आपके आगे सूफी सन्त फरीद साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है। आप इस शब्द में प्यार से समझाने की कोशिश करेंगे कि परमात्मा के दरबार में कौनसी आत्माएं मंजूर हैं? जो लोग अंदर से भी सच्चे हैं और बाहर से भी सच्चे हैं उन्हें परमात्मा के दरबार में दाखिला मिलता है। परमात्मा दिखावे की भक्ति, दिखावे के प्यार पर नहीं रीझता।

महाराज सावन सिंह जी अपनी जिंदगी की दो घटनाएं सुनाया करते थे। उनका बेटा बसंत सिंह उनके जीवन काल में ही शरीर छोड़ गया, वह ओवरसियर लगा हुआ था। अंग्रजों के राज्य में किसी भारतीय का अफसर बनना महानता रखता था। उन्होंने अपने बेटे के आखिरी श्वास ब्यास स्टेशन पर ही पूरे करवाए अगर वे उसे डेरे ले जाते तो बीबी रूक्को जो बाबा जयमल सिंह जी के साथ रही थी उसने कहना था कि इसे अभी न जानें दें।

सन्त कुदरत के उसूलों के मुताबिक ही संसार में रहते हैं और अपने सेवकों से भी यही कहते हैं कि नाम का गलत उपयोग न करें, कोई करिश्मा न दिखाएं, सदा मालिक के हुक्म में रहें।

महाराज सावन सिंह जी अपनी माता जी के अंत समय की घटना बताया करते थे जब उनकी माता जी का अंत समय आया उस समय वे छुट्टी पर अपने घर आए हुए थे। माता जी ने कहा, ''बाबा जी आए हैं, मैं जा रही हूँ।'' वे उदास हुए। माता जी ने कहा, ''बरखुरदार, तू उदास क्यों हो रहा है? किसी ने भी सदा यहाँ नहीं रहना।'' महाराज जी ने कहा, ''मैं इस बात से उदास नहीं कि आप जा रही हैं, मुझे खुशी है कि बाबा जी आपको लेने आए हैं। मैं इसलिए उदास हूँ कि कल ब्यास डेरे में सतसंग है, काफी संगत आएगी अगर मैं वहाँ हाजिर नहीं हुआ तो संगत उदास होकर वापिस लौट जाएगी।''

माता जी उनके दिल की बात जानती थी। माता जी ने कहा कि मैं अंदर बाबा जी से विनती करती हूँ, उन्होंने अंदर ध्यान किया और बाबा जी से कहा, ''बरखुरदार, इस तरह कह रहा है।'' बाबा जी ने कहा, ''उससे कहो कि सतसंग कर आए, जब वापिस आएगा तब आपको ले जाएंगे।''

महाराज सावन सिंह जी डेरा गए, सतसंग किया, सबसे मिले–जुले। उनके दिल में ख्याल आया कि बाबा जी ने माता जी को हमारे जाने के बाद ही लेकर जाना है। आज थकावट है, आराम कर लें, कल जाएंगें इसलिए वे वहीं रूक गए।

अगले दिन उन्होंने कुछ साथियों से कहा कि माता जी का अंत समय है, वे चोला छोड़ रही हैं जिन्हें दर्शन करने हैं वे गाँव चलें। गाँव पहुँचने से पहले उन्हें रास्ते में गाँव के आदमी मिले। महाराज जी ने उनसे माता जी का हाल पूछा। उन लोगों ने बताया कि बाबा जी रात को पूछने आए थे कि बरखुरदार सावन आ गया है? जवाब मिला कि अभी नहीं आया। बाबा जी ने कहा, ''अच्छा,

मैं कल आऊँगा, कोई बात नहीं आपको कल ले जाएंगे।'' यह जानकर उनके दिल को तसल्ली हुई और वे घर पहुँच गए।

महाराज सावन कहा करते थे कि अंत समय में किसी बेसतसंगी को पास न रहने दें, नहीं तो सतसंगी आपको बिना कुछ बताए चुप करके चला जाएगा। उनकी रिश्तेदारी में एक चाची थी, महाराज जी ने उसे बाहर जाने के लिए कहा वह बाहर चली गई। महाराज जी माता के पास बैठ गए और उनसे पूछा, ''बाबा जी, आए हैं?'' माता ने कहा, ''हाँ, आए हैं।'' उन्होंने कहा, ''मैं आपको खुशी–खुशी विदा करता हूँ, आप बाबा जी के साथ चली जाएं।''

उनका एक दोस्त हमेशा ही उनको ताना मारा करता था कि नाम क्या चीज़ है? आप इतने बड़े अफसर होकर भी सतसंग में लगे हुए हैं लेकिन जब उसने माता जी का अंत समय देखा तो वह कहने लगा कि मेरी बेटियों और जवाईयों को भी नाम दें।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि मैंने दोनों घटनाओं (जवान बेटे और माता जी) के समय अपने दिल को टटोलकर देखा, न खुशी थी न गमी थी। न मैं रोया, न मैं हँसा। यह सब बाबा जी की दया थी और बाबा जी का ही भाणा था जो मैं मान सका।

महाराज कृपाल अपने जीवन की एक घटना बताया करते थे उनका एक लड़का था। बाजार से जो सामान लाते वह उस सारे सामान पर अपना कब्जा कर लेता था। वह कहता, ''यह सारा सामान मैं ही लूँगा।'' महाराज जी उसे प्यार से कहते, ''तू अच्छी तरह तृप्त हो जा जो बच जाएगा वह हम ले लेंगे।'' उन्होंने घरवालों से कह रखा था, ''यह कर्जा लेने के लिए ही आया है।'' कुछ समय बाद उस लड़के का अंत समय आया वह बीमार हो गया। महाराज कृपाल ने अपनी पत्नी से कहा, ''तू यह मत कहना कि

लड़के का ईलाज नहीं करवाया, तू कहे तो बड़े से बड़ा डॉक्टर बुलवा देता हूँ मगर इसने नहीं रहना।'' उनके लड़के ने उनके हाथों में ही शरीर छोड़ दिया। उन्होंने श्मशान भूमि में जाकर शान्त मन से अपने लड़के का क्रियाक्रम किया।

राजा राम सर्राफ आर्यसमाज का प्रधान था, वह महाराज कृपाल का खास दोस्त था। वह भी श्मशान भूमि में साथ गया। जब राजा राम सर्राफ ने देखा कि महाराज कृपाल पूरी तरह से शान्त हैं, रो–पीट नहीं रहे तो उनके इस विश्वास को देखकर वह महाराज सावन सिंह जी के चरणों में आया और उच्चकोटि का सतसंगी बना। वह इस तरह का सतसंगी साबित हुआ जैसे हार में मोती पिरोया जाता है। उसने गुरु के साथ सच्चा–सुच्चा प्यार किया, नाम की कमाई की।

मेरे कहने का भाव जो इस संसार में जन्मा है, उसका अंत है। हमें ऐसी घटनाएं अपनी जिंदगी में देखनी पड़ती हैं। ऐसा समय हर एक के साथ गुजरता है। कबीर साहब कहते हैंः

देह धरी का दंड सब काहू को होय
ज्ञानी भोगे ज्ञान से अज्ञानी भोगे रोय

बेशक सन्त–महात्माओं का अपना कोई कर्म नहीं होता लेकिन उन पर दुनिया के कर्मों का बहुत बोझ होता है। शरा के कैदी उन्हें किस तरह कष्ट देते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया गया और आपको बहुत शारीरिक कष्ट दिए गए।

शाहजहाँ के चार लड़के थे। बड़ा लड़का दारा शिकोह फकीर दिल था, उसे गद्दी का हक मिला। शाहजहाँ का छोटा लड़का औरंगजेब बहुत चालाक और सियासत से भरपूर था। वह जानता था किस तरह छीनकर राज्य प्राप्त करना है। औरंगजेब ने फौज के

बाबा सावन सिंह जी महाराज

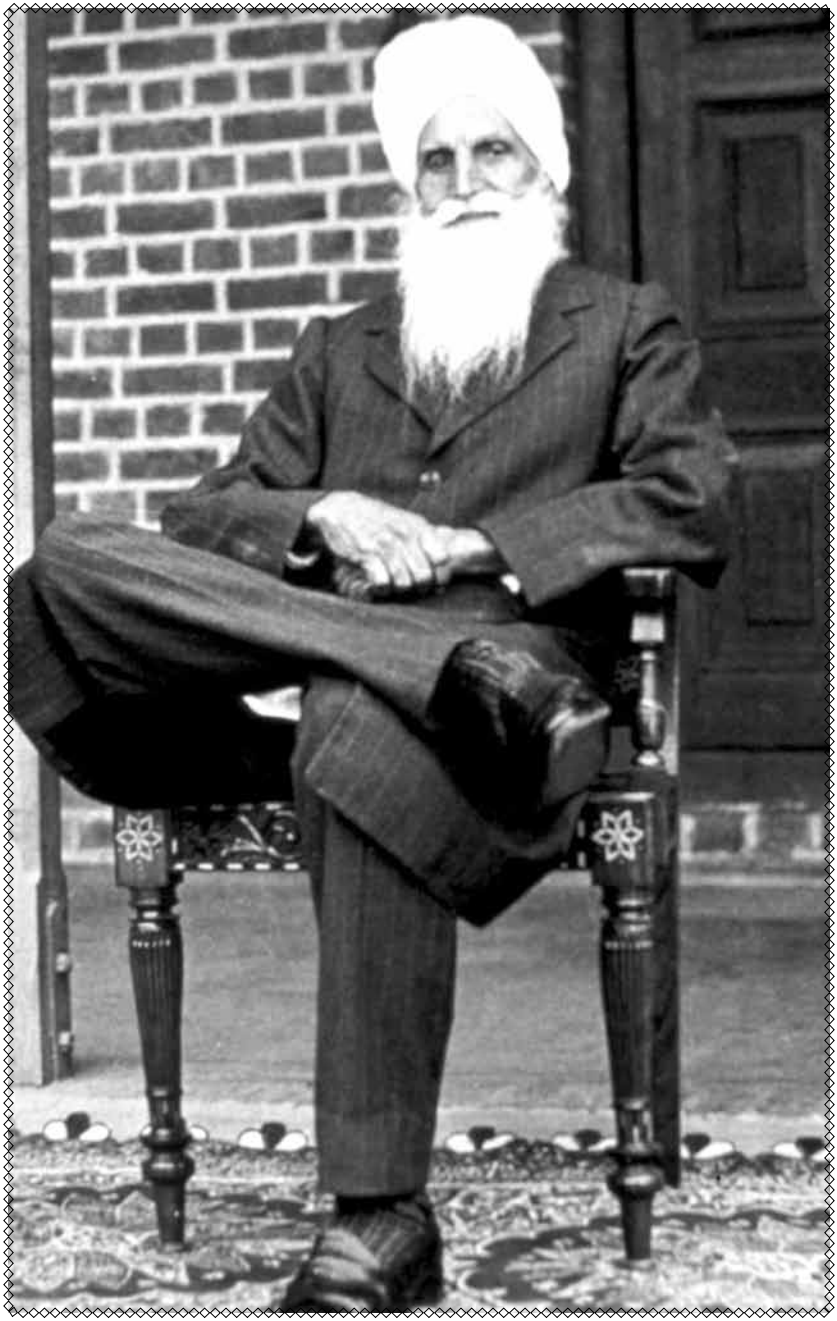

साथ मिलकर हिन्दुस्तान पर कब्जा कर लिया। जब दारा शिकोह को पता लगा कि औरंगजेब ने मेरे राज्य पर कब्जा कर लिया है और अब वह मुझे कैद करके मेरा कत्ल कर देगा। दारा शिकोह दिल्ली से भागकर अमृतसर में सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिंद सिंह जी की शरण में चला गया।

दारा शिकोह फकीरों की संगत का आशिक था, उसने अपनी हालत गुरु हरगोबिंद जी को बताई। गुरु हरगोबिंद ने कहा, ''आपको कोई पकड़ नहीं सकता हम आपको सुरक्षित लाहौर पहुँचा देंगे।'' दारा शिकोह अपने एक नौकर के साथ जंगलों से निकलता हुआ लाहौर जा रहा था। रास्ते में भूख लगी, उसने सोचा खाना तैयार करते हैं। उसने सारी जिंदगी राजपाठ किया था। खाना बनाना आग जलाना नहीं जानता था। जैसे ही आग जलाने के लिए फूँक मारी तो उसकी दाढ़ी–मूंछ राख से भर गई। नौकर ने कहा कि बादशाह सलामत, आपको फकीरों की संगत से यह कुछ मिला है?

दारा शिकोह ने अपने नौकर से कहा, ''खुदा का शुक्र है अगर मैं फकीरों की संगत न करता तो मेरी क्या हालत होती? यह फकीरों की ही सोहबत थी कि मेरा दिल मजबूत है मुझे राज्य के छिन जाने का कोई गम नहीं। मैं बेपरवाह हूँ, यह सब कुछ उस मालिक के हुक्म से हुआ है।''

थोड़े दिनों में ही उसके दिल में ख्याल आया कि इस तरह छिपकर रहने वाला जीवन अच्छा नहीं। क्यों न मैं अपने आपको औरंगजेब के सामने पेश कर दूँ? वह जो सजा देगा भुगत लेना ही अच्छा है और वह दिल्ली आ गया।

औरंगजेब दुनिया को यह दिखाना चाहता था कि वह कितना शक्तिशाली है। चाहे मेरा भाई हो, मैं किसी को भी माफ नहीं

करता। औरंगजेब ने आदेश दिया कि दारा शिकोह का मुँह काला करके उसे गधे पर बिठाकर दिल्ली की गलियों में घुमाया जाए। उसके अहलकारो ने सलाह दी कि बादशाह सलामत, दारा शिकोह आपका भाई है अगर आपने ऐसा ही करना है तो इसे हाथी पर बिठाकर शहर में घुमाया जाए। ऐसा करने से आपका कानून भी रह जाएगा और आपके मुँह से जो निकला है वह भी पूरा हो जाएगा।

सूफी सन्त सरमद, दारा शिकोह के गुरु थे। औरंगजेब ने उन्हें भी कैद कर लिया। सन्त सरमद का जुर्म यह था कि वह दिल्ली के बाजारो में मस्ती से नारे लगाते थे कि दारा शिकोह को तख्त मिलने वाला है। औरंगजेब ने कहा कि दारा शिकोह को भी सरमद के पास ले चलो, देखें! कौन इसे तख्त देता है?

सूफी सन्त सरमद और दारा शिकोह दोनों ही अंदरूनी राज़ के वाकिफ थे। सरमद ने दारा शिकोह से कहा, ''तू चू–चरां न कर, अपना सिर दे दे सारा कर्ज कट जाएगा, तू मालिक के दरबार में चला जाएगा।'' दारा शिकोह ने खुशी–खुशी कुर्बानी दे दी।

जो नाम जपते हैं वे मालिक में नुख्स नहीं निकालते कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? वे चूं–चरां नहीं करते मालिक का हुक्म मानते हैं। जो कुछ उनके दिल में है वे बाहर भी वैसे ही दिखते हैं।

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ।।
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढ़े कचिआ।।

शेख फरीद साहब कहते हैं, ''मालिक के दरबार में वही सच्चे हैं जिनके दिल में मौहब्बत है। आज तक कोई परमात्मा को धोखा नहीं दे सका, वह हमारे अंदर बैठा है। तराजू पकड़कर तोल रहा है कि हम क्या कर रहे हैं? हम कितनी अच्छाई करते हैं, कितनी

बुराई करते हैं, उसके मुताबिक ही वह हमें इनाम या सजा देता है। बुरे कर्मों की सजा बीमारी और बेरोजगारी है। अच्छे कर्मों का इनाम अच्छी बुद्धि, अच्छे ख्याल और अच्छी सेहत है। जिनके मुँह में कुछ और है, दिल में कुछ और है, परमात्मा उन्हें कच्चा समझकर बाहर निकाल देता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

खरे परख खजाने पाए खोटे भरम भुलामणया

पिछले जमाने में चाँदी के रूपये होते थे। जब हम रूपये खंजाची को देने जाते तो वह एक–एक रूपये को परखता जो खरा होता था उसे खजाने में दाखिल कर लेता था, जो खोटा होता था उस पर निशान लगाकर बाहर निकाल देता था। हमारी भी यही हालत है, परमात्मा हर मौत के बाद हमारी भी अच्छी तरह परख करता है कि कौन मेरे खजाने के काबिल है?

रते इश्क खुदाइ रंगि दीदार के।।

मालिक के दरबार में वही शोभा पाता है जो उसका आशिक है। जो परमात्मा के रंग में रंग गया है, परमात्मा रूप हो गया है, परमात्मा में और उसमें कोई भिन्न–भेद नहीं होता।

हरि का सेवक सो हरि जेहा, भेद न जाने मानस देहा

विसरिआ जिन्ह नामु, तू भइ भारु थीए।।

राजस्थान के मूल निवासी एक किस्सा सुनाया करते हैं कि धर्मराज ने धरती से सवाल किया, ''तू किस तरह लोगों का भार उठाती है, तुझे बड़ी मुश्किल होती होगी?'' धरती ने कहा, ''मुझ पर दरिया, पहाड़, समुंद्र बहुत कुछ है लेकिन हर एक को अहंकार है। पहाड़ कहता है कि मैं बड़ा हूँ, समुंद्र कहता है कि मेरी गहराई ज्यादा है। इंसान कहता है कि मेरे जैसा कौन है? मैं सारे समुंद्रों

की गहराई नाप सकता हूँ। पहाड़ों की चोटियों की ऊँचाई नाप सकता हूँ। ये सब अपने–अपने अहंकार में मस्त हैं।''

जिन्हें नाम बिसर गया है वे धरती के ऊपर भार हैं। रब के सच्चे आशिक वही हैं जिन्हें परमात्मा ने अपनी दया करके अपना पल्ला पकड़ा दिया, नाम दे दिया।

आपि लीए लड़ि लाइ, दरि दरवेस से।
तिन धनु जणेदी माउ, आए सफलु से।।

दुनिया में वही सफल हैं जो परमात्मा का नाम जपकर परमात्मा रूप हो गए हैं। आप उन्हें दरवेश कह लें, गुरुमुख कह लें, परमात्मा कह लें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह कुल धन्य है, वह माता धन्य है जिसने ऐसे बच्चे को जन्म दिया। वह सन्त–सतगुरु धन्य है जिन्होंने नाम की कमाई की वे खुद तर गए और जिन्होंने श्रद्धा–प्यार से उनके दर्शन किए, उनका भी उद्धार हो गया।

प्यारेयो, क्राइस्ट को गए हुए कितना समय हो गया है? लोग आज भी उनके माता–पिता को आदर से याद करते हैं। गुरु नानक साहब को संसार में आए काफी समय हो गया लेकिन आज भी हम उनको और उनके माता–पिता को इज्जत से याद करते हैं। इसी तरह हम महाराज सावन सिंह जी को और उनकी कौम को प्यार करते हैं। पिता काबुल सिंह और माता जीवनी को बधाईयां देते हैं।

जब महाराज कृपाल मेरे आश्रम आए तो उन्होंने पूछा, ''यहाँ कोई ग्रेवाल है?'' मैंने कहा, ''हाँ जी।'' मैं एक ग्रेवाल को बुला लाया, वह काफी शराब पीता था। मैंने उससे कहा कि हमारे गुरु जी आपको याद कर रहे हैं। उसने आकर कहा, ''मुझे अफसोस है कि मैं शराब नहीं छोड़ सकता, शराब रूप ही हो गया हूँ।''

महाराज कृपाल ने हँसकर कहा, ''हमारे गुरु ग्रेवाल कौम में हुए हैं, हम ग्रेवालों का बहुत आदर करते हैं अगर तू थोड़ी हिम्मत करे, कुछ हिम्मत हम करते हैं।'' यह एक सच्चाई है कि वह शराब छोड़कर नाम जपने वाला बंदा बन गया। कल महाराज कृपाल का जन्मदिन है। हम रोज उनके भजन बोलते हैं, पिता हुक्म सिंह और माता गुलाब देवी को बधाईयाँ देते हैं। सन्त जन्म–मरण से ऊपर होते हैं। जिन्हें उनके माता–पिता बनने का भाग्य मिला, हम उनका आदर–सत्कार करते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

जननी जने तो भक्त जन या दाता या सूर
नहीं तो जननी बाँझ रहे काहे गँवाए नूर

परवदगार अपार अगम बेअंत तू।।

फरीद साहब कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू बेअंत है। तू सबकी परवरिश करता है, तू अगम है तू अगोचर है।''

जिना पछाता सचु चुंमा पैर नूं।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जिन्होंने तुझे अपने अंदर प्रकट कर लिया है, जो तेरे साथ मिल गए हैं, मैं उनके पैर चूमने को तैयार हूँ। बड़े ऊँचे भाग्य हों तभी हम उनके पैर चूम सकते हैं।''

तेरी पनह खुदाइ, तू बखसंदगी।
सेख फरीदै खैरू दीजै बंदगी।।

मैं यह सुनकर तेरी पनाह में आया हूँ कि तू बख्शिंद है, तू मेरे सब पाप बख्श देगा। मैं तुझसे सिर्फ भक्ति की भीख माँगता हूँ।

***

अजायब बानी

बिछोड़े का दर्द

यह जीवन अमूल्य है, इसमें बैठकर जो भी श्वांस आता है उसे परमात्मा के लेखे में लगाएं। हमें उठते–बैठते, चलते–फिरते सिमरन में समय लगाना चाहिए ताकि अंदर से जो भी श्वांस आए सिमरन का ही आए। हमारा हर श्वांस परमात्मा के लेखे लगे, पता नहीं फिर इस जीवन का मौका मिले या न मिले।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज